मृत्युञ्जय

मृत्युञ्जय

लक्ष्मीनारायण मिश्र
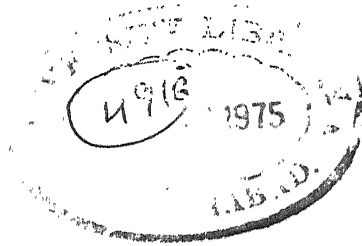
स्वस्तिक प्रकाशन, वाराणसी की ओर से

लोकभारती प्रकाशन

१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद - १

यह संकल्प

नेहरू अभिनन्दन ग्रन्थ में प्रकाशित मेरे एकांकी 'एकदिन' को पढ़कर एक मित्र ने चार वर्ष पहले कहा था : राष्ट्रपिता पर जो मैं नाटक न लिख सकूं तो इतने दिनों की मेरी लेखनी का श्रम सार्थक न होगा। उनके मत में गाँधी के जीवन पर आधारित नाटक देश के स्वतन्त्रता-संग्राम का इतिहास तो बनेगा ही, इस युग के साहित्यकार को उनके ऋण से भी उऋण करेगा। कामना की लहर जब प्राणी के हृदय में चलने लगती है तो वह स्वयं तो विवश होता ही है—अपने चतुर्दिक् वातावरण को भी जैसे वह विवश कर देता है। मित्र के उन शब्दों में जो मैं यह कार्य न कर सका तो 'सिन्दूर की होली' जैसे सामाजिक और 'वत्सराज' जैसे सांस्कृतिक नाटकों की लम्बी सूची जो मेरे नाम के साथ जुड़ी है, मुझे देश-धर्म के प्रति आस्थावान बनाने में समर्थ न हो सकेगी। गांधीचरित पर नाटक लिखा जाय, इस कामना से वे अभिभूत हो उठे थे। देर तक जैसे वे मुझ सरीखे कायर को वीर बनाने का मंत्र जपते रहे और अनायास जैसे भाव-विभोर होकर कह उठे; "कुछ नहीं, आप गांधी जी पर नाटक लिख दें।" उनके मुँह से इन शब्दों का निकलना था कि मेरी देह में सनसनी फैल गई। राष्ट्रपिता की हत्या को कुल चार वर्ष बीते थे, उनके जीवन में जब जो घटित हुआ था लोगों के सामने था, कल्पना को सब ओर के बन्धनों में चलना था। कवि चाहे कोई धर्म माने या न माने सृष्टि-धर्म तो उसे मानना ही है। जाड़े का अन्त हो रहा था फिर भी अभी ठंड थी। मेरे ललाट पर पसीना आ गया। मुझे चुप देखकर वह पूछ बैठे : "आप बोलते क्यों नहीं ? गांधीजी पर जितना साहित्य चाहें मुझसे ले लें।" उनके संकेत पर पुस्तकों की ढेरी सामने आ गई।

अपराजित और अजातशत्रु गांधी पर नाटक लिखवाना उस क्षण उनका जैसे सबसे प्रधान धर्म बन गया। गांधी विभूति के दर्शन में जो

उनका चित्त रम गया था, अपने सामने बैठे कवि के संकट को रंचमात्र भी नहीं देख सका। पुस्तकों के आधार पर पुस्तकें लिखी जा सकती हैं पर क्या काव्य भी लिखा जा सकता है ? संस्कृत में नाटक भी काव्य के अन्तर्गत माना गया है और इस मान्यता से मुझे अंग्रेजी आलोचना-पद्धति अभी तक नहीं हटा सकी है। जीवन चरित के अंशों को संवादों में बांध देना नाटक नहीं होगा। रस के स्थल कहाँ और कैसे उत्पन्न किये जायेंगे ? अनुराग के, हास्य के, करुणा के, भय और उत्साह के अवसर जो न आयें तो फिर नाटक समय की आलोचना भले बन जाय हमारे मन को रससिक्त तो न कर पायेगा। जिस गांधी ने स्वयं कहा था, 'जीवन बुद्धि से नहीं हृदय से चलता है' उसी पर साहित्य बने जिससे न देह में सिहरन भरे, न रोमांच हो—तो वाणी का श्रम निष्फल होगा। उस समय जो सूझता रहा, मैं कहता गया पर रावण की सभा में अंगद के पैर की तरह उनका प्रस्ताव न डिग सका।

तीन महीने में नाटक लिखकर दे देने का वचन मैंने दिया, दो पुस्तकें गांधी से सम्बन्धित उठा लीं। द्रौपदी के चीर की तरह तीन महीने की अवधि बढ़ते-बढ़ते चार वर्ष की बन गई। वे बराबर शील और विनय से पत्र लिखते रहे, पर गांधी पर नाटक लिखना मेरे लिए दो हाथों से समुद्र पार करना बन गया। इस रचना ने मेरे लिए यही सिद्ध किया है कि मेरी स्वतन्त्र इच्छा जो चाहे नहीं कर सकती। दूध से सींचने पर भी पेड़ में फल अपने निश्चित समय पर ही आयेंगे। इस नाटक के लिखे जाने का जो समय पहले से ही निश्चित था, जिसे मैं नहीं जानता था, वह अब आ गया; मेरी लेखनी को गति मिल गई और यह रचना पूरी हुई। मौलाना आज़ाद की मृत्यु के दूसरे दिन जिस समय उनकी मिट्टी मिट्टी में जा रही थी, इस नाटक का लिखा जाना आरम्भ हुआ और अब यह पाठकों के हाथ में है। कल्पना की हथिनी को अंकुश लगाकर जहाँ तक मैं पहले ले गया था, वहाँ से लौटकर फिर दूसरा मार्ग लेना पड़ा और अब यह यात्रा पूरी है। गांधी के साथ मौलाना आजाद को भी इस

नाटक में पात्र बनना था, इसीलिए यह पहले पूरा न हो सका। दैव की यही इच्छा थी, जिसके विपरीत मेरी इच्छा बराबर हारती गई।

इस अवधि में गांधी पर प्रचुर साहित्य पढ़ता गया पर जैसे न भी पढ़ा होता तो भी नाटक का रूप जो उतरता वही उतरा है। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में जब मैं छात्र था, दिवंगत गांधी के दर्शन कई बार मिले; उनके शब्द आज कानों में प्रवेश कर मन तक कई बार पहुँचे। उनकी निर्विकार हँसी और व्यक्तित्व से शून्य हो जाने की वृत्ति का बोध भी मुझे उन्हीं दिनों मिला था। उनके निकट जाकर उनसे कुछ पूछने और समझने का अवसर मुझे कभी नहीं मिला। ऐसे संकल्प कई बार उठे, पर चित्त दृढ़ न बन पाया और अपनी हीनता का बोध कारण बना इस पुण्य से वञ्चित रहने का।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर से जो गांधी का पत्र-व्यवहार हुआ था, पश्चिमी साहित्य के विषय में जो कुछ सूत्र 'यंग इण्डिया' में मिले उन्हीं दिनों पढ़ गया था। गांधी रामायण की ऐतिहासिकता न मानकर उसे शुद्ध कवि कर्म कहते थे। कहने का अर्थ है कि मर्यादा पुरुषोत्तम के चरित का कमल जो आदिकवि के भाव-लोक में खिला उसीके रस और गन्ध का भोग रामायण बना, जिसमें भारतीय प्रजा के अभाव मिटते रहे हैं। आदिकवि के भाव-लोक में अवतरित होकर श्रीरामचन्द्र लोक के राम बने और गांधी के 'हे राम', जो उनके कण्ठ से अन्त समय निकले थे।

इस नाटक के आरम्भ के साथ गांधी और इससे सम्बन्धित अन्य सभी पात्रों का आविर्भाव मेरे भाव-लोक में हुआ है। कवि-कर्म की यही पद्धति है। गांधी और अन्य पात्रों के व्यवहार, संवाद इस रचना में सीधे उन्हीं से मिले हैं। इस कथन पर विचारक सन्देह कर सकते हैं, इन पात्रों ने कब क्या कहा? उपलब्ध सामग्री से इसकी जाँच भी कर सकते हैं। मेरे लिए यह सब अडिग विश्वास बन गया है, बिना जिसके यह रचना मेरे माध्यम से सम्भव न होती। जीवित व्यक्तियों को चरित-बनाना संस्कृत नाटक-पद्धति में वर्जित रहा है। इस नाटक में इस नियम

का निर्वाह किया गया है। गांधी के कर्मलोक के जो जन अब दिवंगत हो चुके हैं, वे ही इस नाटक में पात्र बने हैं, मेरे भीतर के कवि को उन्हीं का साक्षात्कार मिला है। मीरा बेन के संवाद नेपथ्य से दिये गये हैं।

रचना के दोष मेरी आँख से तो दिखाई नहीं पड़ेंगे। 'निज कवित्त केहि लाग न नीका' गोस्वामी तुलसीदास पहले ही कह गये हैं। गुण देखना गांधी के प्रति अनास्थावान होना होगा, जो बराबर अपने में दोष ही देखते थे, गुण उन्हें कभी दिखाई ही न पड़े। मेरी चेष्टा रही है कि जहाँ तक बने इस सर्वमेधी महापुरुष और इसकी परिधि के स्वजनों से रस का लाभ ले सकूं जो कहा करता था 'रामायण में बड़ा रस है'। जीवन भर जो हंसता चला गया, मानसिक विकृति और कुण्ठा जिसे कभी छू न सकी। बा की मृत्यु का जो भोग इस नाटक में गांधी ने उठाया है, उसमें वियोग शृङ्गार के साथ करुणा भी है। महादेव भाई की मृत्यु का प्रसंग सब ओर से कारुणिक है। स्वप्न में किशोरी पत्नी का अनुभव संयोग शृङ्गार की झाँकी दे जाता है। हास्य के प्रसंग कई आ गये हैं और अन्त में उनके भौतिक अन्त का प्रसंग भयानक, करुण और शान्त में समाप्त होता है।

रघुवंश के आरम्भ में कालिदास ने उस प्रतापी कुल के चित्रण में जिस प्रकार अपनी अयोग्यता का अनुभव किया और कहा : 'मन्दः कवि-यशः प्रार्थी गमिष्याम्युपहास्यताम्।' वही दशा इस रचना के विषय में मेरे मन की भी है। जिस महापुरुष पर इन दिनों ग्रन्थों का अम्बार लगता जा रहा है, लिखने वाले अधिकारी लोग हैं, जो उसके जीवन के संसर्ग में बराबर बने रहे, उसी पर इस नाटक की रचना बालक के रचे हुए धूलि के मण्डल जैसी लगेगी। मैं इस अवसर पर इतना ही कहूँगा कि मेरे भाव-लोक में उस महापुरुष का जो स्मारक अपने आप बन गया, जैसे कीचड़वाले ताल में कमल का फूल खिल जाता है, वही इस नाटक के रूप में पाठकों के सामने है। कीचड़ में न जाकर कमल के खिले फूल का दर्शन जो वे करें तो उनके मन का रञ्जन होगा।

होली, संवत् २०१४ वि०
प्रयाग

—लक्ष्मीनारायण मिश्र

पात्र परिचय

- गांधी
- पटेल
- मीरा बहन
- सरोजिनी नायडू
- नरेन्द्रदेव (आचार्य)
- आज़ाद (मौलाना अबुलकलाम)
- देवदास
- सड़क पर आते-जाते पथिक, गांधी भक्त एक स्त्री, दो अंग्रेज युवक आदि

पहला अंक

संध्या निकट है। आकाश में पक्षी रंग-रंग की नदी-सी पंक्ति बनाकर उड़े जा रहे हैं। पक्के दोतल्ले मकान के नीचे वाले बड़े कमरे के सामने बरामदे में खम्भे कुछ धूमिल हो गये हैं, जैसे अधिक दिन से इनकी सफेदी नहीं हुई है। बड़े कमरे के द्वार खुले हैं। भीतर कई कण्ठों की धीमी ध्वनि सुन पड़ती है। मकान के आगे समतल सहन, दोनों ओर दो पेड़ और सामने सड़क है। सड़क पर चलने वाले उत्सुक मुद्रा में इस मकान की ओर देखते हैं। कई रुककर जैसे भीतर की बातें सुनना चाहते हैं। उनकी आकृति पर उत्सुकता और उत्साह के भाव आ रहे हैं। मकान के भीतर से प्रार्थना की ध्वनि सुनाई पड़ती है। कई कण्ठों से 'हरि तुम हरो जन की पीर' पद बार-बार सुनाई पड़ता है। सड़क पर कई जन हाथ जोड़कर सिर झुका लेते हैं। तीन शिक्षित पुरुष भद्र वस्त्रों में उधर से निकलते हैं। हाथ जोड़े लोगों को देखकर परस्पर संकेत कर मुस्कराते हैं।

पहला : जिस देश की जनता ऐसी भावुक है···

दूसरा : हाँ तब···

तीसरा : वह देश नहीं हैं क्यों श्रीमान् !

पहला : सड़क पर हाथ जोड़कर, सिर झुकाकर, आँखें मूँदकर···यह दृश्य संसार में और कहीं देखने को न मिलेगा ।

सब हँस पड़ते हैं ।
पहले वर्ग के जन जैसे सजग होते हैं ।
उनमें से एक आगे बढ़कर टोकता है ।

चौथा : अभी आपने क्या कहा ? जगत् में क्या देखने को नहीं मिलेगा ?

पहला : तो तुम इतने लाल क्यों हो रहे हो ?

चौथा : **(दोनों हाथ जोड़कर)** आप पर लाल होने के लिए हमें दूसरा जन्म लेना पड़ेगा सरकार ! आपकी ओर देखने में जिसे पसीना छूट रहा है भला वह आप पर लाल क्या होगा ? तुम या तू···आप मुझे चाहे जो कहें । आप अँग्रेजी पढ़े हैं, मैं संस्कृत भी पूरी नहीं जानता । साहब-सूबा से बात बढ़ाने में डर लगता है, पर किसी के विश्वास पर चोट करना धर्म में मना है ।

पहला : मैंने आपको तुम कह दिया इसके लिए क्षमा करें । और अपना मार्ग लें ।

चौथा : इस शब्द से आप मुझे सौ बार सम्बोधित करें, मुझे रंच भर खेद न होगा । आपके वस्त्रों की सिलाई पचास रुपये लगी होगी और मेरी देह पर जो वस्त्र हैं, दर्जी के हाथ से छू भी नहीं गये ।

तीसरा : आप लोग जो एक साथ हाथ जोड़कर वहाँ खड़े थे···

चौथा : जी···हाँ···

उत्सुक मुद्रा में

दूसरा : कुछ नहीं पंडित जी, आप सम्भवतः संस्कृत के पण्डित हैं और वे लोग आपके शिष्य हैं।

चौथा : अपनी सीमा में अभी हम सभी शिष्य हैं, पण्डित की कोटि कब मिलेगी ? हम लोगों के वहाँ हाथ जोड़े खड़े होने में आप लोगों को क्या आपत्ति रही ?

तीसरा : नये युग के आचरण के अनुकूल यह व्यवहार नहीं कहा जायेगा।

पहला : कोई विदेशी देखता, चित्र ले लेता और अपने देश के पत्रों में छपवा देता...'गांधी निवास के सामने सड़क पर नागरिक'।

चौथा : चित्र का यन्त्र तो आपके कन्धे में है। न हो हम अब से हाथ जोड़ सिर झुका आँख मूंद लें और आप चित्र ले लें। पर मान लें ऐसा ही होता तो इसमें आपकी या आपके देश की निन्दा क्या होती ? आपका चित्र उनके पत्रों में छपे तो ठीक वैसा ही होगा जैसा उनका होता है। यह चित्र उनके लिए विस्मय और रुचि का होता और वे इसे बार-बार देखते। इस देश में...विदेशी बनकर रहने का लोभ जो आप सरीखे लोग छोड़ देते तो महात्मा गांधी की तपस्या का फल इस देश को मिल गया होता !

जो लोग दूर खड़े हैं, हँस पड़ते हैं।

तीसरा-दूसरा : अरे, बात तो बड़ी कह गये महाराज !

पहला : हाँ, जितनी बड़ी इनकी शिखा है।

मुस्कराने की चेष्टा करता है।

चौथा : बड़ी शिखा के नीचे बड़ी मेधा की बात जिस दिन पश्चिम के वैज्ञानिक कहने लगेंगे...आप सरीखे इस देश के प्राणी जो अपनी भूमि, अपने धर्म, अपने पूर्वज और अपनी संस्कृति की निष्ठा छोड़ चुके हैं, फिर शिखा रखने लगेंगे। जाति के

विश्वास मिटे कि वह जाति मिटी। महात्मा गांधी ने इस जाति में अवतार लेकर इसे मिटने से बचा लिया। नहीं तो साहब लोग इसे हिमालय और गंगा की भूमि न कह कर···

पहला : हा···हा···हा···पश्चिम के किसी पहाड़ या किसी नदी का नाम आप नहीं जानते।

चौथा : जी, सचमुच नहीं जानता मैं···जन्म से लेकर मृत्यु तक जिनसे मुझे कुछ नहीं मिलना है, उनका नाम जान लेने से क्या होगा? मिलेगा तो उनसे आप जैसों को भी कुछ नहीं।

पहला-दूसरा-तीसरा : वाह···वाह···वाह···धरती···जल जाय···पर··· रूढ़ि न छूटे।

चौथा : जाति की श्रद्धा और विश्वास-भाव की रूढ़ि कहने वाले जाति के कलंक होते हैं···पृथ्वी के भार होते हैं। हमारी जातीय श्रद्धा और विश्वास के आकाशदीप का नाम इस समय महात्मा गांधी है, जो आप जैसों के व्यवहार की भाषा में रूढ़िवादी हैं। हमारी लज्जा के उघारने वाले अंग्रेज नहीं आप महानुभाव हैं। न बनती वन की लकड़ी कुल्हाड़े की बेंट तो जंगल न कटता। बीत गये तीस वर्ष महात्मा को तप करते पर सिद्धि आप जैसे उनके पास नहीं आने देते।

पहला : हूँ हमारे कारण इस देश को स्वराज्य नहीं मिल रहा है!

चौथा : (**मकान की ओर हाथ उठाकर**) प्रार्थना समाप्त हो गई। चलें महात्मा जी से पूछ देखें, आप जैसों के कारण स्वराज्य अब तक नहीं मिला या हमारे जैसे लोगों के कारण? विदेशी शिक्षा में, आचार-व्यवहार में पलें प्राणी उनके तप की सिद्धि छीनने वाले हैं या हम जैसे गँवार, जिन्हें वह दरिद्रनारायण कहते हैं।

दूसरा : ऐसा नहीं···उसके पास सड़क के झगड़े मिटाने का समय नहीं है।

चौथा : आप लोगों में कोई उनसे मिला है ? किसकी आँखों ने उनका दर्शन किया है ? किसके कान में उनकी वाणी पड़ी है ?

तीनों सहम कर एक दूसरे की ओर देखते हैं ।

: ठीक है... इतने निकट पाकर भी आप लोग क्यों मिलते ? आप लोगों के लिए तीर्थ रूढ़ि हैं, देवता रूढ़ि हैं और वे जो तीर्थ और देवता दोनों हैं, उन्हें तो आप लोग दुहरी रूढ़ि मानते होंगे ।

उसके साथ के लोग हँस पड़ते हैं ।

पहला : ऊँह···आप जो नहीं समझते उसमें···

चौथा : आप समझा दें···

पहला : इस समय उनके निकट जाने वालों के पीछे पुलिस पड़ जाती है ।

चौथा : हाँ, अब समझा···पुलिस के डर से आप जैसे पास आये हिमालय का दर्शन नहीं करते, पास आये सागर के जल में डुबकी नहीं लगाते···देश में भय फैलाने के लिए ही विश्व-विद्यालय खुले, अंग्रेजी की शिक्षा चली । पुलिस का भय ऐसा, तो फिर मृत्यु का भय कैसा होगा ? काल के मुकुट पर चरण धरने वाले गांधी के इतने निकट भी आप पुलिस के सिपाही को यमराज मानते हैं और थाने को संयमिनी पुरी ।

पहला : (**चौंककर**) क्या है यह ? क्या कहा कौन पुरी···?

चौथा : संयमिनी पुरी···

उसके साथ के जन, जो निकट आ गये हैं, हँस पड़ते हैं ।

पहला : यह नाम तो कभी भी नहीं सुना, कोई नगर इस नाम का कहीं है ?

चौथा : जी और आपने सुना भी है, केवल अपने पूर्वजों की भाषा में नहीं सुना है । यह नाम आपके पूर्व पुरुषों की भाषा का है ।

जो भाषा पढ़कर आप साहब बने हैं, जिसके बल से अपने ही लोगों पर आतंक जमाते हैं उस भाषा में अवश्य सुना होगा। अंग्रेजी में मृत्यु का देवता जहाँ रहता है, उसका कुछ नाम तो होगा ही।

दूसरा-तीसरा : ओ ! हो ! नरक का नाम है यह, किस भाषा का ?

चौथा : ठीक नरक का तो नहीं, यमराज के लेखा-जोखा का, उनके निवास और निर्णय का जो स्थान है, वह बम्बई से कई गुना बड़ा है। वह कहीं नरक और स्वर्ग के बीच में होगा। जहाँ से दोनों की व्यवस्था हो सके।

अपने साथ के लोगों के साथ मन्द हँसी।

: पर आप लोग तो अंग्रेजों के पुरखे जहाँ गये होंगे वहाँ जायेंगे। यहाँ तो हमारे जैसे अपढ़ रूढ़िवादी रहेंगे।

पहला : अरे, यह सब पण्डितों की, मुल्लों की, पादरियों की करतूत है, हम कहीं नहीं जायेंगे।

चौथा : कहीं तो जायेंगे। यहाँ बराबर बने रहने के लिए आप नहीं आये · यह इतना आप भी जानते हैं।

दूसरा : अच्छा महाराज, नमस्कार। हम लोग किसी कार्य से चले थे।

तीनों चलना चाहते हैं। मकान के बीच का द्वार खोलकर सरदार पटेल निकलते हैं और बाहर खम्भा पकड़ कर सिर झुका लेते हैं। महात्मा गांधी द्वार पर खड़े हो जाते हैं।

चौथा : अच्छा अवसर है, आप लोग भी चलें दर्शन कर लें। महात्मा का द्वार सबके लिए खुला है। किसी को रोक नहीं है।

वे तीनों जल्दी से निकल जाते हैं।

सकल पदारथ एहि जग माहीं,
करम हीन नर पावत नाहीं।

अरे ! सरदार तो हाथ से आँख पोंछ रहे हैं। तब यहाँ रुकना ठीक न होगा। दो दिन दर्शन मिल चुके हैं। महात्मा के निकट चला जाना··· गीता और उपनिषद् का, वेद, पुराण, शास्त्र का साक्षात् दर्शन है। यहाँ हमारे हाथ जोड़कर खड़े होने पर पापी हँस रहे थे। देश के वधिक···देश की चिन्ता में मरे जा रहे थे। महात्मा तो इस समय भी दोनों हाथ जोड़े हैं···उनकी देह पर उतना वस्त्र भी नहीं जितना हमारी देह पर है। उनकी धोती घुटने तक है, हमारी तो उससे नीचे तक पहुँची है। उनकी चादर दो हाथ भी चौड़ी नहीं है, हमारा उत्तरीय तीन हाथ से अधिक चौड़ा है। यहाँ से भी जो वे सब दर्शन कर लेते तो कुछ तो पाप कटता।

सिर झुकाकर सब हाथ जोड़ते हैं और उसी प्रकार सिर झुकाये आगे निकल जाते हैं।

गांधी : सरदार ! सड़क पर लोग यह दृश्य देख रहे हैं। रोते···

स्वर भारी हो जाता है।

पटेल : सरदार को लोग सौ बार रोते देखें···पर गांधी को देख लेंगे तो···

स्वर भारी।

गांधी : पीछे से कहीं मीरा आ जाय, प्यारेलाल या···

पटेल : नहीं···नहीं···आपकी आँखों से ऐसे···

स्वर और भारी जैसे शब्द कण्ठ में रुक गये हों।

गांधी : यहाँ बैठकर सुन लो तब···

पटेल : कुछ नहीं सुनता है मुझे···तीन बार आपकी आँखों का जल पोंछकर जब नहीं सह सका, भाग आया। जो कोई आपको रोते देख लेगा उसका धैर्य छूट जायेगा···धरती धँसेगी··· समुद्र सूखेगा···हिमालय हिलेगा। संसार की आँखें आप पर लगी हैं और आप रो रहे हैं। सत्य और अहिंसा का कवच

पहनकर अनासक्त कर्म का धनुष और प्रेम का तीर लेकर भी आप रो रहे हैं !

गांधी : (भरे कण्ठ से) सरदार···

पटेल : (घूमकर) पटक दूंगा सिर मैं इसी खम्भे पर···आपकी आँखों का जल अभी नहीं रुका । हाय भगवान !

गांधी : मैं भी देही हूँ···देह-धर्म से परे नहीं हूँ । देह-धर्म से परे होता है शव···सरदार ! जीवित काया बिना आँखों के जल के नहीं रह सकेगी ।

पटेल : बापू ! मुझसे यह सहा नहीं जाता ।

कण्ठ भर आता है देह कांपने लगती है ।

गांधी : मेरे भीतर की अग्नि का भोग तुम न लोगे ? न सहोगे तुम इसे···फिर छोड़ दो, जल मरूँ मैं इसी में । समान-धर्मी दुःख के भी भोगी होते हैं सरदार ? जवाहरलाल के सामने मेरी आँखों से जल न बहता । भाव में भगवान को देखने का स्व-भाव उसका नहीं है । मौलाना कर्मलोक भर के साथी हैं । सरोजिनी नारी हैं । अकेले तुम···तुम अकेले ऐसे हो जिसके सामने यह हो गया । इससे मेरी आयु बढ़ेगी ··बल बढ़ेगा ···जो जो चाहो मुझसे, सब बढ़ेगा ।

पटेल : (गांधी के निकट पहुँचकर) आपका शरीर कांप रहा है ।

गांधी : पकड़ लो···मुझे । शरीर नहीं, मेरे भीतर पुत्र और पत्नी का विरह कांप रहा है ।

पटेल : तब तो आप बीमार पड़ जायेंगे ।

दोनों हाथों से सहारा देकर कमरे के बीच में चटाई पर बैठा देते हैं ।

गांधी : बीमार तो आगाखाँ महल में पड़ा था । अब बीमार नहीं पड़ना है । महादेव और बा दोनों अपने पूरे इतिहास के साथ आँखों के सामने खड़े हैं । उनके विग्रह की सारी लीला में

देख रहा हूँ।

पटेल : कुछ नहीं, भूल जाइये उन्हें···स्वतन्त्रता के इस समर में उन्हें भूलना होगा।

गांधी : यह न कहो···सत्य और अहिंसा के साथ उन दोनों का वियोग···पुत्र और पत्नी का वियोग सरदार? मेरा नया बल, नया प्रयोग होगा। उन्हें भूलकर मैं देश के काम का न रह जाऊँगा।

पटेल : बापू आपके ललाट से पसीना चल रहा है। साँस में वेग है। आप न संभले तो फिर अनर्थ निश्चित है।

गांधी : दो-दो प्रियजन चले गये। उनके विरह के भाव का भोग उठा रहा हूँ। अब तक यह अवसर नहीं मिला था।

पटेल : मेरे यहाँ आ जाने से···आप इतने कातर हो उठे हैं।

गांधी : महादेव और बा दोनों चले गये···अब सरदार से प्राण मिलेगा। हृदय खोलकर रख दूंगा तुम्हारे सामने···तुम अहमदाबाद से छूटे। यहाँ आ गये। तुम्हारा आना उस अवसर को ले आया।

पटेल : महादेव और बा के अन्तकाल की बातें आप कहना चाह हैं। मुझसे कहकर उन बिछुड़े जन के विरह का भोग आप लेंगे।

गांधी : बिना उस भोग को भोगे मेरा त्राण नहीं है सरदार! यह भोग भाव का भोग है। भाव को भगवान भी कहा है। किसी उपनिषद् में···भाव को ही मोक्ष कहा है।

पटेल : इस समय स्मृति पर अधिक बल न दें।

गांधी : **(हँसते हुए)** विचित्र बात है। जो बात···बैरिस्टरी के लिए ···विलायत में या दक्षिण अफ्रीका में हुई थीं···बहुत कुछ मैं भूल गया था। पर बा को नहीं भूली थीं। अपनी सारी स्मृति मुझे देकर वह चली गई और वह सब चित्र की तरह मेरी

धारणा में अनेक रंग ले रही है।

पटेल : बा की स्मृति उनके साथ गई।

गांधी : अधिकार है तुम्हें, मेरे सत्य में सन्देह कर लो।

पटेल : इस देश का जीवन आपके सत्य पर टिका है। ऐसा अपने मुँह से न कहें।

गांधी : तब तो मानना पड़ेगा कि बा अपना सब कुछ···पुण्य पाप··· धन···धर्म···स्मृति जो कुछ उसका था सब मुझे सौंप कर गई। मेरी गोद में उसका प्राण छूटा। वह अब मुक्त है उसके बन्धन तो मुझे मिले। भव्य मृत्यु थी वह। अन्त समय पति का सहारा मिले···इस देश में अनादि काल से पत्नी की सबसे बड़ी कामना यह रही है। उसकी भी यही थी।

पटेल : अखण्ड सौभाग्य लेकर गईं वे। इस लोक से अधिक सुख उन्हें उस लोक में मिलेगा।

गांधी : **(हंसकर)** इस लोक में तो उस बेचारी को कोई सुख नहीं मिला···ऐसे सर्वमेधी पति के पाले पड़ी।

पटेल : इसका असन्तोष उन्हें तनिक भी नहीं था।

गांधी : ऐसा नहीं है। असन्तोष था। न होना तो उसके नारीत्व का दोष होता।

पटेल : मैं नहीं मानता कि आपके साथ किसी बात में उन्हें कभी असन्तोष हुआ। जगदम्बा की कल्पना वे चरितार्थ कर गईं।

गांधी : हमारे जीवन दर्शन में नारी माया का रूप है। त्याग माया का कार्य नहीं है उसका कार्य है संग्रह···भावी सृष्टि के लिए; पुत्र के लिए, पुत्री के लिए, वधू के लिए। यह संग्रह की वृत्ति जो उसमें न हो तब तो पुरुष कर्म की ओर न झुके। पुरुष के कर्म की प्रेरणा पत्नी है। जब तक जीवित रही इस तथ्य का बोध न हो सका। वेदान्त के इस पक्ष से परिचित मैं था पर अनुभव अब हो रहा है।

पटेल : दर्शन में यही गुण है कि दुःख भी सरल हो जाता है ।

गांधी : पश्चिम में दर्शन की कोई पद्धति नहीं है जो दुःख को सरल कर दे । अपने यहाँ भी केवल वेदान्त इसमें समर्थ है, जहाँ भौतिक और आध्यात्मिक अभेद हैं । भाव के हर तल में जहाँ भगवान का अनुभव है । आँखों का जल भौतिक है पर उसका मूल···करुणा का अनुभव ब्रह्म है । अनुभव करुणा का नहीं उसके रस का होता है···ऐसे ही शृङ्गार और वीर रस का अनुभव है । रस का यह अनुभव सब कहीं भगवान का ही अनुभव है ।

पटेल : तभी तो इस देश के साहित्य, चित्र, मूर्ति, नाद और नृत्य में सब कहीं रस के अनुभव की ही बात है ।

गांधी : वेदान्त का आनन्द साहित्य का रस है । साहित्य पर विचार का अवसर जब कभी मुझे मिला, मैं बराबर यही कहता रहा हूँ । पश्चिम का समूचा साहित्य व्यक्तिवादी होने के कारण भेदमूलक, संघर्ष और द्वन्द्वमूलक है । यूनानी नाटकों को देखें, सब कहीं हिंसा और अपराध, दारुण व्यापारों का चित्रण, यही दशा यूरोप के सभी आधुनिक साहित्यों की है ।

पटेल : रस का बोध इन कवियों को न हो सका इसीलिए···

गांधी : सृष्टि के मूल में यूनानी विचारकों को रस का पता न चला । रतिभाव को वे अपवित्र मान बैठे । सृष्टि का मूल ही कामज था, इसे वे न देख सके । रतिभाव से सर्वथा छूट जाना तो असंभव था । जीव-धर्म में विवश होकर कर्म वे करते रहे । उनके तर्क में वह न तो सात्विक बना न पवित्र । अनुराग के अनुभव को जो दूषित मानते रहे, साहित्य और कला में उसकी जय न बोल सके । यूनानी साहित्य की मानसिक विकृतियों का कारण यही था कि इस देश के साहित्य की भाँति रसराज शृङ्गार को वे सात्विक न बना सके ।

पटेल : यही कारण है कि पुराने यूनानी साहित्य से लेकर पश्चिम के आधुनिक साहित्य में भी सन्तान-जन्म का प्रसंग कहीं नहीं है।

गांधी : **(हँसकर)** प्रेम का चित्रण उनके साहित्य में जितना है सब झूठा है। सच्चा होता तब तो अनुराग कर्म का फल पुत्र रूप में प्रकट होता। संस्कृत-साहित्य में नर-नारी के प्रणय का चित्र कवि ने जहाँ खींचा है, संतान के रंग बिना वह पूरा कहीं नहीं हुआ।

पटेल : लोक में संतान जन्म से बड़ा आनन्द और उत्सव का दूसरा अवसर कोई होता ही नहीं।

गांधी : उन साहित्यकारों ने यह आनन्द और उत्सव, आत्महत्या और हिंसा के चित्रण के रूप में उठा लिया है।

पटेल : आप हँसी कर रहे हैं।

गांधी : न करता, जो आँसू के रूप में विरह के भाव का भोग उठा लेने पाता।

पटेल : यह तीर मुझ पर चला···

गांधी : पश्चिम के साहित्य का प्रभाव था···सरदार! मेरी आँखों का जल तुम्हारे लिए असह्य हो गया। सीता के विरह में भगवान राम के आँसू तुम कैसे भूल गये? आदिकवि की तो बात ही नहीं, तुलसीदास भी जिनके काव्य का संयम अपार है·· उन आँखों के जल को न छिपा सके। विरही पुरुरवा, अज और विरहिणी रति की दशा को भूलकर तुम मुझे भावहीन बनाने चले थे। जीव-धर्म से परे जो मुझे तुम ले जाना चाहते हो, यह तभी होगा जब मैं शेक्सपियर के किसी नाटक का चरित्र बन जाऊँ या आस्कर वाइल्ड का। प्राणहीन या भावहीन, यन्त्र की तरह उत्तेजित करने वाली बड़ी बातें करूँ। अविद्या की आँधी में अपने उड़ूँ और दूसरों

को उड़ाऊँ, दायें-बायें जो मिले उसे छुरे से सुलाता चलूँ। रोना और हँसना मेरे लिए दोनों मना हो। पर यह सब उन्माद होगा पश्चिम के साहित्य का उन्माद इस देश पर छा रहा है। शरीर से स्वतन्त्र होकर भी मन से यह देश पश्चिम का दास रहेगा।

रुककर साँस लेने लगते हैं।

पटेल : मान गया रोना भी देही का धर्म है।

गांधी : केवल रोना ही नहीं, हास्य, वीर, रौद्र, भय, घृणा, विस्मय यह सब देही का धर्म है। जिसके बिना उसकी गति नहीं।

पटेल : साहित्य के सभी रस आप लोक-व्यवहार में ला रहे हैं।

गांधी : लोक-व्यवहार से ही वे साहित्य में गये हैं। जिन भावों का भोग प्राणी करता है, साहित्य और संगीत···कला के सभी रूपों के आधार वही बनते हैं। इस देश में साहित्य की परिभाषा देही के भाव-भोग का चित्रण है। पश्चिम में साहित्य जीवन की आलोचना है, जैसे जीव-धर्म अपने शुद्ध सनातन रूप में कभी कोई आलोचना स्वीकार करेगा ?

पटेल : आप तो मुझे विस्मय में डाल रहे हैं। बात क्या हो रही थी और···

गांधी : तालसतोय और रस्किन को छोड़कर पश्चिम के किसी कवि या लेखक ने मुझे लेशमात्र भी नहीं प्रभावित किया। इन लेखकों को भी रस के सुख के लिए नहीं, उनके विचारों की उच्चता के लिए मैंने चुना था। रस्किन ने जो विश्व-परिवार का स्वप्न देखा वह इस देश का सामान्य धर्म रहा है। अपने देश के धर्म के बल पर रस्किन का स्वप्न दक्षिण अफ्रीका के मेरे दो आश्रमों में व्यावहारिक बन गया। यही बात मेरे यहाँ के आश्रमों में भी चली। पर क्या जीवन की आश्रम-पद्धति इस देश की बहुत पुरानी नहीं है ? जो बात रस्किन

को इस युग में सूझी है, इस धरती पर व्यवहार में कब लाई गई, ईसा से कितने सौ वर्ष पहले, कौन कहेगा ?

पटेल : महादेव और बा के अन्त समय की बातें कहने वाले थे ।

गांधी : (**हँसकर**) यह उसी की तैयारी है । बाहर चलें । साथ-साथ घूमने का काम भी हो और जब जो सूझे कहते भी रहें ।

पटेल : यह घंटी कैसी बजी ?

आरती की घण्टी बजने लगी है ।

गांधी : मीरा के भोलेपन का पार नहीं है । बालकृष्ण की पूजा कर चुकी, उसी की आरती की घण्टी है । देख आओ सरदार । देख आओ, यह दृश्य देखने को न मिलेगा । चुपचाप उसके मुख को देखना, भाव में विभोर होगी इस समय ।

पटेल : (**जाते जाते**) हाँ देखूँगा ।

थोड़ी देर गांधी जैसे ध्यान में बैठ जाते हैं । घण्टी बजती रहती है । मकान के दूसरे भाग में हँसी सुनाई पड़ती है ।

नेपथ्य में : सरदार प्रसाद लेने आये हैं ।

पटेल : आपकी नींद खुली तो प्रसाद तो मिलेगा ही ।

नेपथ्य में : मीरा बहन ! सबसे पहले सरदार को प्रसाद देना ।

नेपथ्य में : नेता लोग इसमें विश्वास नहीं करते ।

नेपथ्य में : करते क्यों नहीं । पहले इन्हें प्रसाद दो ।

पटेल : सरोजिनी देवी ! बालकृष्ण आप लोगों को···देवियों को··· मोहित करते हैं । बापू श्रीराम के भक्त हैं और मैं भी···

नेपथ्य में : 'मेरो तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई'···

लय और स्वर में, कई कंठों की हँसी ।

पटेल : जी, आप ही नहीं, सभी देवियाँ यही कहेंगी ।

नेपथ्य में : और पुरुष क्या कहेंगे ?

पटेल : 'मोको तो राम को नाम कल्पतरु कलि कल्यान फरो'···

हँसी की ध्वनि ।

नेपथ्य में : इसमें तो दासभाव है अनुराग कहाँ है इसमें ? तन्मयता कहाँ है ?

पटेल : आप लोगों का···देवियों का अनुराग हम लोगों में कहाँ आयेगा । रही तन्मयता की बात···

नेपथ्य में : हाँ कहें···

पटेल : सरोजिनी देवी ! ब्रह्मा को ठगकर तन्मयता की सारी पूँजी आप लोग उठा लाईं । हम लोगों के लिए कुछ बचा ही नहीं ।

हँसी सुनाई पड़ती है ।

नेपथ्य में : हाँ···परसाद लें···

पटेल : बालकृष्ण का प्रसाद पहले आप लें···फिर सरोजिनी देवी को दें । यहाँ कोई और लड़की हो तो उसे दें । तब मुझे दें । यही नियम है, पूछ लें सरोजिनी देवी से ।

नेपथ्य में : मैं नहीं जानती । मैंने कभी किसी देवता की पूजा नहीं की ।

पटेल : सरस्वती की भी नहीं ?

नेपथ्य में : सरस्वती तो मैं स्वयं हूँ ।

हँसी की ध्वनि, कई कण्ठों की हँसी ।

पटेल : मीरा बहन ! आप प्रसाद लेकर फिर मुझे दें ।

नेपथ्य में : वाह ! यह कैसे होगा !···इनके बाद मैं और तब···

पटेल : सो तो मैं पहले कह चुका हूँ ।

नेपथ्य में : हाँ, अब लें···

पटेल : रहने दें···इतने में हम दोनों का काम चल जायगा ।

नेपथ्य में : हम दोनों कौन···

पटेल : बापू भी···

नेपथ्य में : कहाँ हैं ?

पटेल : अभी तो यहीं हैं । अब बाहर घूमने चलेंगे ।

नेपथ्य में : अँधेरा हो रहा है, अभी घूमे नहीं ?

पटेल : आपकी राह देखते रहे होंगे।

नेपथ्य में : देर तक सोती रह गई आज···

पटेल प्रवेश कर गांधी के हाथ पर प्रसाद रखते हैं। गांधी दोनों हाथों से सिर का स्पर्श कर प्रसाद मुँह में डालते हैं।

गांधी : देख लिया ? मीरा अंग्रेज लड़की होकर भाव से इस देश की बन गई। सरोजिनी देवी···प्रखर बुद्धि से अभी भी विलायत के रंग में रँगी हैं। उनकी बुद्धि के भय से भाव उनके निकट न आयेगा।

पटेल : उनकी कविताएँ···

गांधी : **(हँसकर)** उनके व्यक्तित्व से उपजी हैं···पश्चिमी साहित्य का व्यक्तिवाद उन कविताओं में प्रधान है। अनासक्त कवि-कर्म उनमें नहीं मिलता। यूनान में जो वह देवी कविता लिखने वाली बनी···हाँ सैफो···उसने अपनी कविताओं में अपने मन की विकृति भर दी, शेली आदि की कविताओं में भी व्यक्ति-मन की वही विकृति है, और वही विकृति अब इस देश के साहित्य में भी आ गई। यहाँ भी कवि जीव-धर्म की बात न कहकर अपनी बात कहने लगे हैं। कविता का आरम्भ करने लगे हैं वे 'मैं' से और अन्त भी होता है इसी 'मैं' से। आदिकवि का 'मैं' उनके काव्य में नहीं मिलता।

पटेल : रामायण प्रबन्ध काव्य है। गीति काव्य होता तो···

गांधी : तो उसमें कवि का 'मैं' आता। गीति लिखने वाले कवि भी यहाँ हो चुके हैं। जयदेव, विद्यापति, तुलसी, मीरा, सूर, तुकाराम, दक्षिण के भक्त कवि···कहीं भी व्यक्तित्व का प्रदर्शन और अहंकार यहाँ नहीं मिलता। भूले-भटके कहीं मिल जायेगा तो भगवान के सम्मुख आत्म-निवेदन या अपनी

हीनता के बोध के रूप में। व्यक्ति-मन की अतृप्त लालसाएं यहाँ गीत का रूप कभी न ले सकीं। सच तो यह है कि इस देश में कवि कभी व्यक्ति नहीं रहा।

पटेल : अभेद बुद्धि या अद्वैत दर्शन के कारण···

गांधी : व्यक्तित्व के बन्धन से मुक्त होकर विधाता बनता था वह। उपनिषद् दर्शन में कवि शब्द का प्रयोग जहाँ हुआ है, सृष्टि रचने वाले के अर्थ में हुआ है। अँग्रेजी शिक्षा से पहले जितने कवि यहाँ···इस धरती पर उत्पन्न···हुए, परम पुरुष की इस सृष्टि में उन्हें जो तत्व दर्शन मिला, प्राणी के जिन मूल भावों का उन्हें अनुभव हुआ, उनके काव्य का वही आधार बना। भाव किसी एक देही के नहीं जीवमात्र के होते हैं। इस तथ्य को वे जानते थे और तब उनकी काव्य की सृष्टि देवता के काव्य **(दाएं हाथ से परिधि बनाते हुए)** इस व्यापक सृष्टि के समानान्तर चली है और वे उसमें व्यक्ति नहीं विधाता हैं, स्रष्टा हैं। अपने काव्य में कवि यहाँ आसक्त नहीं हैं। निष्काम कर्म के उदाहरण इस देश में साहित्य और कला के सभी रूप हैं। पश्चिम में व्यक्ति की आसक्ति उसकी कृति में पायी जाती है, इसलिए उसकी अविद्या, साहित्य और कला का आधार, जो यूनान में वनी अभी चली जा रही है।

पटेल : लगता है आज घूमना न होगा।

गांधी : **(उठकर)** चलना चाहिए **(बाहर नीचे उतरकर)** घूमते ही तो रहे हैं···पुराने भारत से नये भारत तक, पुराने यूनान से पश्चिम में जो नये देश उसी के ध्वंस पर खड़े हुए। इतनी लम्बी दूरी और इतना लम्बा काल हम लोग पार कर आये। धर्म, दर्शन और साहित्य इस देश में कभी पृथक नहीं देखे गये। यूनान में ये पृथक थे, पश्चिम में आज भी पृथक हैं।

पटेल के कन्धे पर बायाँ हाथ रखकर

मकान के किनारे चल पड़ते हैं।

पटेल : अँधेरा हो गया। बा और महादेव के वियोग का भोग न उठाना होता तो साहित्य की इतनी बातें न सुनने को मिलतीं।

गांधी : विदेशी आँखों से इस देश को देखना छोड़ दो सरदार।

पटेल : हाँ ··तो···समझ नहीं सका मैं···कभी-कभी आप रहस्य में उतर जाते हैं।

गांधी : साहित्य की बातें मैं तुम्हें नहीं सुनाता रहा हूँ, देही के मूलभाव रहे हैं ये···जहाँ तक कहने में समर्थ हो सका। भेद बुद्धि पश्चिम की देन है, अभेद दर्शन इस देश की...हमारे पूर्वजों की विभूति है। दर्शन और आचार को पृथक देखना विदेशी आँखों से देखना होगा; साहित्य, धर्म और जीव-भाव के अनुभव को पृथक देखना फिर विदेशी आँखों से देखना होगा। साहित्य चित्र, संगीत और मूर्ति नाम से पृथक हैं, तत्व सब में एक ही है। परिस्थिति विशेष के अनुसार देह के भीतर मूलभाव जागते हैं, उन्हीं की अभिव्यक्ति शब्द के माध्यम से साहित्य है; रंग और रूप के माध्यम से चित्र है, स्वर, नाद और अंग-संचालन के माध्यम से संगीत है; पत्थर में छेनी से उन्हीं भावों का अंकन मूर्ति है।

पटेल : (उत्साह में) अब मैं भ्रम में नहीं हूँ। कालिदास के अनेक प्रसंग अजन्ता के चित्रों में और गुहा मन्दिरों की मूर्तियों में मिल जाते हैं। इस देश के साहित्य और कला के विभिन्न विधान, भगवान की रची इस सृष्टि के अभेद दर्शन या सर्वात्मवाद में हैं। भेदपरक व्यक्तिवाद पश्चिम का विष है जो अब इस देश पर चढ़ रहा है।

गांधी : साहित्य का फल सुख और आनन्द का भोग उठाना था; जिससे आयु बढ़ती थी, बुद्धि बढ़ती थी। जिससे सौ वर्ष तक

देखने, सुनने, कर्म करने की हमारी दैनिक कामना पूरी होती थी, नहीं तो अब···

पटेल : दैनिक संध्या के मन्त्रों की ओर आपका संकेत है ?

गांधी : हाँ, वे मन्त्र ही साहित्य की कसौटी चलते आये। भद्र भाव और शुद्ध विचार जो नित्य दो बार या तीन बार संध्या के संकल्प के रूप में आये साहित्य में रम गये। जो साहित्य मेरा धर्म न बन जाय उसे मैं स्वीकार न करूँगा। आदिकवि का रामायण मेरा और मेरे लोक का धर्म तो बना ही है, वियोग-वर्णन के रूप में कालिदास का 'मेघदूत' भी अब मेरा धर्म बन गया है, तुलसी का 'रामचरित' तो जैसे जन्म-जन्म के अभाव भर देता है·· कितना रस है उसमें ? पर क्या शेक्सपियर के नाटक कभी मेरा धर्म बनेंगे ?

पटेल : आगा खाँ महल में आपके साथ रहने वाले लोग ही उन नाटकों को पढ़ते रहे हैं।

गांधी : उसका परिताप भी मुझे कम नहीं सहना पड़ा है। बा की बीमारी में भी वहाँ वे नाटक पढ़े गये। मन में आया कह दूं तुम दोनों जैसे बा की मुक्ति के लिए भागवत पढ़ रहे हो। पर हारकर मुझे विष की तरह अपना क्रोध पी जाना पड़ा। अंग्रेजों को तो अब जाना है, पर जब तक शेक्सपियर नहीं चला जायेगा हमारे अपने देश के महाकवि लाञ्छित रहेंगे। हमारे तरुण तुलसी के भरत को भूलकर मैकबेथ, और ब्रूटस के आचरण करेंगे। भय है आने वाली पीढ़ी में मैत्री भाव और मिटेगा और पश्चिम के साहित्य की प्रतिहिंसा में यह देश डूब मरेगा।

पटेल : देश की स्वतंत्रता के बाद आपका कार्य होगा विदेशी साहित्य के प्रभाव को मिटाना ?

गांधी : तभी हम शुद्ध अर्थ में भारतीय बनेंगे। भारतीय साहित्य के

भीतर से ही अपनी भारतीयता हम फिर पा सकेंगे। अंग्रेजी साहित्य की शिक्षा जब तक यहाँ चलती रहेगी, हमारा शिक्षित वर्ग अपना स्वरूप भूलकर अपने देश में विदेशी बना रहेगा।

सरोजिनी : (**बरामदे में खम्भे के पास खड़ी होकर**) रात हो गयी। गर्मी की रात, साँप इधर बहुत निकलते हैं। कल रात को तीन दिखाई पड़े थे।

गांधी : भगवान सब कहीं रक्षक है। बिना उसकी रक्षा के दूसरे सभी साधन व्यर्थ होते हैं।

सरोजिनी : जी सुन लिया...अब कृपा कर यहाँ आ जाइये, आसन लगे हैं। सब लोग यहीं बैठें। मुझे तो नीचे उतरने में डर लग रहा है, नहीं तो पकड़कर ले आती। भगवान के साथ भी आप दुराग्रह करते हैं। बापू! इन दिनों आपको अपनी रक्षा करनी है।

गांधी : हा...हा...हा...अपनी रक्षा कभी कोई नहीं कर सका। पर मां को बराबर भय लगा रहता है कि लड़के को जादू-टोना न लग जाय।

गांधी और पटेल की हँसी।

सरोजिनी : इसमें झूठ क्या है? सरदार! हाथ पकड़कर खींच लाइये।

गांधी : मैं बराबर आज्ञा मानता हूँ, पर इस समय तो जब आप मेरे ललाट पर काजल का टीका अपनी उँगली से लगा दें, तब मुझे जादू-टोना न लगेगा।

सब हँस पड़ते हैं।

सरोजिनी : अच्छी बात है! आप यहाँ सब को ब्रह्मचारी जो रखते हैं। किसी का बच्चा यहाँ होता तो काजल भी रहता। पर मैं आज आपको काजल लगाऊँगी।

फिर सब हँसने लगते हैं, पटेल के साथ गांधी बरामदे में आकर कम्बल पर

बैठते हैं। पटेल भी उनके सामने बैठ जाते हैं।

गांधी : आप तो इस पर बैठेंगी नहीं···एक कुर्सी मंगा लें।

सरोजिनी : आज मैं भी इसी पर बैठूगी। आप लोगों की साँस का सुख मिलेगा। चाहती हूँ कुछ पूछना जो आप···

गांधी : मैं कभी कुछ नहीं छिपाता। मेरे धर्म का यह भाव आप सब लोग जानते हैं।

सरोजिनी : (**एक ओर बैठकर**) बा का विरह आप कैसे सह रहे हैं ?

गांधी : बा तो मेरे भीतर समा गई है। दुःख है महादेव का···कोई पुत्र पिता की भक्ति···

कण्ठ जैसे रुँध जाता है। शब्द काँपकर निकलते हैं।

सरोजिनी : आपकी आत्मकथा मैं एक बार भी न पढ़ सकी। जो प्रति आपके हस्ताक्षर के साथ मिली थी। कभी गुम हो गई। आत्मकथा के खुले पृष्ठ-से आप बराबर मेरे सामने रहे। पता नहीं क्यों कई दिनों से मन में आ रहा है कि आपके मुख से आपका विगत इतिहास सुन लूँ। इस जीवन का अब ठिकाना क्या ? सुनना चाहिए था बा के मुख से, वह समय तो निकल गया।

गांधी : पुराण में ऋषियों के प्रश्न पर सूत जैसी कथा कह गये हैं। आगा खाँ महल में तो आप साथ रहीं। उतना छोड़कर···

पटेल : जी नहीं···मैं नहीं था वहाँ···और फिर आपके इतिहास का मर्म तो वहीं घटा है।

गांधी : तो फिर महादेव और बा के अन्त का चित्र मैं दे रहा हूँ। विवरण तो अपनी विधि में नहीं है, यहाँ तो चित्र अंकन कवि भी कर गये। प्रश्न आप लोग करते चलेंगे तो मुझे सहायता मिलेगी।

सरोजिनी : मेरी आँखें जो देख चुकी हैं उस पर प्रश्न मैं न बना पाऊँगी। सरदार पूछें...कहीं कुछ छूटेगा तो मैं सँभाल लूंगी।

पटेल : महादेव भाई ने आपसे चलते समय कुछ कहा?

गांधी : इसका अवसर नहीं मिला। बा दौड़ी हुई आई "महादेव को कुछ हो गया है, मिरगी है" कहकर हाँफने लगी। उसकी देह थर-थर काँप रही थी। जब तक वहाँ पहुँचूँ उसके मुँह में ब्रांडी डाली जा चुकी थी। समय पर पहुँच गया होता तो यह न होने पाता। पर वह तो जैसे महादेव का अंश लेकर आया था। मेरा मानस-पुत्र उल्टी करने लगा। मुझे विश्वास है भगवान ने भक्त की लाज बचा ली। मेरी श्रद्धा तो यही कह रही है कि एक बूंद भी भीतर न जा सकी। सब निकल गई।

सरोजिनी : मैंने सब अपनी आँखों देखा था, पर कह न पाऊँगी। महादेव उस दिन सबेरे दाढ़ी बनाकर स्नान कर चुके थे। जलपान करने तक कोई बात न हुई। कितने सुन्दर उस समय लग रहे थे। मेरे कमरे में खड़े-खड़े भंडारी से हँसकर बातें कर रहे थे, मैं एकटक उनकी ओर देख रही थी। उनके उस क्षण के रूप में कुछ ऐसा सम्मोहन था...स्वर्ग का कोई देवता किसी शाप से इस धरती पर आ गया हो। उनका मन उस क्षण कितना विनोदी हो गया था कि स्वयं तो हँसे ही हम दोनों को भी हँसाते रहे।

गांधी : सब लोगों की हँसी सुनने से ही तो मुझे धोखा हुआ। **(सरोजिनी की ओर देखकर)** आपका दो बार बुलाना मेरे कान में पड़ा था, बा के भय की मुद्रा भी मैं न समझ सका।

सरोजिनी : क्षण भर भी न बीता, वे कहने लगे "चक्कर आ रहा है," मेरी पलंग की ओर बढ़े, कुम्हार के चक्के-सी देह सब ओर घूम गई और वे पलंग पर गिर पड़े।

गांधी : महादेव कवि था । भाव में जीता था । मैंने बड़ी चेष्टा की कि वह एक बार मेरी ओर देख ले । देख लेता तो मुझे विश्वास है वह मरता नहीं । इस लोक में उसके कर्म की परिधि पूरी हो चुकी थी, नहीं तो दिन-दो दिन की भी सेवा तो ले लेता । मृत्यु का समय और स्थान दोनों ही जन्म के पहले ही निश्चित हो जाते हैं । महादेव और बा दोनों का निश्चित स्थान वही था । अपने निश्चित समय पर दोनों ही चले गये । इस देश के कवि लिख गये हैं शंकर के त्रिशूल से, विष्णु के चक्र से, इन्द्र के वज्र से और यम के दण्ड से दारुण आघात होता है पुत्र के शोक का । महादेव मुझे वही चोट दे गया ।

अन्त के शब्द काँपते कण्ठ से निकलते हैं ।

सरोजिनी : बापू ! आप पुरुष हैं···

गांधी : हाँ······तब···

सरोजिनी : आपको यह शोभा नहीं देता ।

गांधी : सरदार से मैं यही कहता रहा हूँ, विदेशी साहित्य के प्रभाव में हम अब भावहीन हो गये हैं । महादेव का शोक कहाँ और कैसे छिपा लूँ ? उस शोक का विस्तार इस जगत से बड़ा है ।

सरोजिनी : बा के शोक से बड़ा महादेव का शोक है ?

गांधी : सरदार ! पुत्र का शोक दैव किसी को न दे । शत्रु को भी नहीं । यों शत्रु के भाव का परिचय मुझे कभी नहीं हुआ । दक्षिणी अफ्रीका में जिन गोरों ने सामी कहकर मुझे पीटा, मुझे प्रथम श्रेणी के डिब्बे से खींचकर नीचे फेंक दिया, न्याय से प्राप्त मेरे अधिकार को छीनकर मुझे अपमानित किया उनके प्रति भी मेरे भीतर शत्रु का भाव नहीं आया । अंग्रेजी राज्य के विरोध में मैं प्राण हथेली में लेकर खड़ा हूँ, पर किसी भी अंग्रेज से मेरा द्रोह नहीं है । शत्रु भाव सत्य के

सूर्य को ढँक लेता है। अहिंसा के समुद्र को सुखा देता है। महादेव मेरा धर्म-पुत्र था, शरीर से उपजे पुत्र से अधिक महँगा। सरोजिनी देवी को विस्मय हो रहा है मेरी बात से, विश्वास भी नहीं हो रहा है इन्हें मेरे सत्य का।

सरोजिनी : तब आप मुझे क्षमा कर दें। आप पर सन्देह करने के पहले मैं स्वयं अपने पर सन्देह करने लगूँगी।

गांधी : इस तरह क्षमा माँगकर आप विदेशी संस्कार की प्रतिष्ठा कर रही हैं। अंग्रेजी उपन्यासों में ऐसी क्षमा बहुत माँगी गई है, जिसे मैं छल और धोखा मानता हूँ। इस प्रवञ्चना से आत्मशुद्धि कभी नहीं होती। स्वयं अपने का अर्थ भी फिर वही विदेशी संस्कार है, अपने व्यक्तित्व का अभिमान। व्यक्तित्व को शून्य बनाकर लोक में लय हो जाना आपके इस देश की, इस देश के जीवन दर्शन की सिद्धि रही है। क्या होगा इस भौतिक स्वतन्त्रता से जब नैतिक और आध्यात्मिक दासता हमारी बनी ही रहेगी? यह शरीर तो कर्म-फल के भोग का कारागार है न? व्यक्तित्व इसी कारागार का मोह है, आत्मा को वह छू नहीं पाता।

पटेल : अच्छा हो अब आप मूल विषय पर आयें।

गांधी : मूल विषय केवल आत्मा है सरदार! और सब तो भ्रम है। तुम मेरी आत्मा को प्रिय हो, सरोजिनी देवी मेरी आत्मा को प्रिय हैं, महादेव मेरी आत्मा को प्रिय था, बा के लिए भी यही कहा जायेगा। इस देश का जन-जन मेरी आत्मा को प्रिय है। अवसर मिले तो जगत के सभी प्राणी मेरी आत्मा को प्रिय हों। आत्मा के उत्कर्ष का यही स्वाभाविक क्रम है, इसी का नाम मोक्ष भी है।

रोजिनी : अच्छा, अब मान गई महादेव का शोक बा से अधिक रहा।

गांधी : पुत्र का शोक पत्नी से अधिक होता है। बा की अर्थी को

कन्धा लगाने में मुझे शोक का अनुभव नहीं हुआ। पुण्य कर्म लगा वह मुझे। मेरे जीवन में वह गई इसलिए भरी-पूरी गई। पर महादेव के शव को छूकर मैं पापी बन गया। पिता का पाप जब हिमालय से भारी हो जाता है तब उसे पुत्र का शव छूना पड़ता है।

भारी स्वर और कम्पन

सरोजिनी : हे भगवान ! आप तो ऐसे नहीं थे !

दोनों हाथों में सिर थाम लेती हैं।

गांधी : जिस सरकार की कैद में महादेव को मरना पड़ा और बा को भी···उस सरकार की नाव डूबेगी। कोई पूछे कब ? कहूँगा निश्चित दिन तो नहीं जानता पर डूबेगी अवश्य। कहीं मैं उपवास न कर बैठूँ···महादेव इसी भय से चला गया। जो उसी समय अनशन चलाये होता तो वह नहीं जाता ! उसका भय निकल जाता।

पटेल : भगवान की गति को हम जानते जो नहीं।

गांधी : उसकी कृपा से हम उसकी गति जानते हैं सरदार ! हम यहाँ बैठे हैं इसकी जानकारी हमारे भीतर स्वयं नहीं है, वही जना रहा है हमें। हमारे भीतर-बाहर सब ओर वही है।

सरोजिनी : तब तो हम भी वही हैं।

गांधी : बहुत ठीक···हैं हम वही···पर तब···जब यह बात पुस्तकों के सहारे बुद्धि से न कही जाय। इसके अनुभव में हम रम जायँ। इस तत्व के दर्शन में हमारे व्यक्तित्व के बन्धन खुल जायँ। ज्ञान से न बनेगा भाव···भाव···भाव ! भाव में रम जाने वाले भक्त कहे गये और भाव में रम जाने का ही दूसरा नाम भक्ति है। इस युग में इसके उदाहरण परमहंस राम-कृष्ण हैं ! बंगाल के ब्रह्मसमाज के मूल में पश्चिम का बुद्धि-वाद था···संकरा कुआँ बना रह गया। लोक को पता न

चला उसका स्वाद क्या है ? दूसरी ओर परमहंस रामकृष्ण के भाव के रस में यह देश तन्मय हो गया। भारत का पुनर्जागरण रामकृष्ण से चला···देवेन्द्र ठाकुर और केशवसेन से नहीं।

पटेल : और दयानन्द से···उत्तर भारत में तो···

गांधी : दयानन्द को हम व्यास मान लेंगे पर शुकदेव नहीं। महाभारत, अठारह पुराण, वेद विभाजन से भी व्यास तृप्त नहीं हुए थे। उनके बुद्धिवाद पर जब शुकदेव ने भागवत के भाव का अमृत डाला तब कहीं वे तृप्त हुए। बुद्धि से जीवन नहीं चलता सरदार ! हृदय से, भाव से गति मिलती है उसे। नरेन्द्र जैसा तर्क, बुद्धि और संदेहवादी विवेकानन्द कैसे बन गया ? रामकृष्ण के भाव की गङ्गा में डूब-उतराकर···यही उत्तर है इस विस्मय का···

पटेल : बापू ! कभी नहीं पता चला अब तक कि आप परमहंस रामकृष्ण से इतने प्रभावित हैं।

गांधी : रोमाँरोलाँ जैसे विश्वविख्यात फ्रांसीसी लेखक ने इस देश के जिस महापुरुष पर ग्रन्थ लिखा, उससे प्रभावित न होना देशद्रोही बनना है। देश किसे कहते हैं सरदार ! माता-भूमि और उसकी प्रकृति, उस भूमि पर उपजी पूर्वजों की परम्परा, उनका भावलोक; जिसे धर्म, दर्शन, साहित्य और संस्कृति कहेंगे यह सब मिलकर देश बनता है। जिसके कण्ठ से देश के ऐसे रूप की जयध्वनि नहीं निकली, वह देशद्रोही है। गीता की श्रीमुख वाणी इसी अर्थ में है, 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः परः धर्मो भयावहः।' इस कथन में किसी दूसरे देश-धर्म की निन्दा नहीं, अपने देश-धर्म के प्रति निष्ठामात्र है। जो माता जन्म देती है, पाल-पोसकर समर्थ बनाती है, तर्कबुद्धि उसे जगत की एक नारी से अधिक कुछ न माने, पर भाव जो

ओठों पर हँसी और आँखों में जल ले आता है उसके सब ओर ऐसी परिधि बनाता है, जिसके भीतर कोई दूसरी नारी समा नहीं सकती ।

क्षणभर रुककर कुछ सोचने लगते हैं ।

सरोजिनी : बापू राजनीति में भी धर्म देखते हैं ।

गांधी : धर्म के अनेक अंगों में एक अंग राजनीति है, दूसरे अंग को लोकनीति कहेंगे । इस धरती पर जो कुछ व्यवहार हम करते हैं, सब धर्म में वैसे ही समा जाते हैं जैसे कि विभिन्न पर्वतों से चलकर नदियाँ एक ही समुद्र में समा जाती हैं । हमारे चार पुरुषार्थ अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष सुविधा के लिए, लोक-संग्रह के लिए चार नामों से पुकारे जाते हैं । अर्थ और काम धर्म के अंग हैं, मोक्ष भी धर्म का अंग है और तभी जो धारण करता है उसे धर्म कहा गया है ।

पटेल : यः धारयति सः धर्मः···धर्म की इस परिभाषा का अनुवाद कर गये आप !

गांधी : मौलिक बनने का दावा मैं कभी नहीं करता । पूर्वजों की परम्परा उपनिषद्, गीता, रामायण के बाहर निकलकर मौलिक बनने का दम्भ जिस दिन करूँगा, इस देश के काम का न रह जाऊँगा । सड़े फल की तरह लोक के हाथों उठा-कर मैं फेंक दिया जाऊँगा; इतनी दूर, जहाँ से उन्हें दुर्गन्ध न मिले । वह दिन मुझे अभी नहीं भूला है जब अफ्रीका के सत्याग्रह की सफलता के बाद, जिसमें वहाँ के प्रवासी भार-तीयों पर लगने वाला अतिरिक्त कर टूटा था और भारतीय विवाह-विधि कानूनी मानी गई थी, मेरे राजनीति के गुरु ने मुझे लन्दन बुलाया था ।

सरोजिनी : धर्म के इस आचार्य का दर्शन मुझे उसी समय हुआ था ।

मन्द हँसी ।

गांधी : उन्होंने भेजा था सरोजिनी देवी को मुझे दर्शन देने के लिए ।

पटेल : गोखले जी ने···लग तो यही रहा है ?

गांधी : हाँ, गुरु का नाम नहीं लेते । असावधानी में निकल जाय तो बात दूसरी है । मुझे देखते ही जो इनकी भवें टेढ़ी हुईं, अरुचि की मुद्रा इनके मुख पर खेल गई; घृणा शब्द का व्यवहार नहीं करना चाहता इसलिए अरुचि कह रहा हूँ ।

सरोजिनी : (**दोनों हाथों में अपना सिर थामकर**) हाय ! हाय ! आप यह क्या कह रहे हैं, जीवन की संध्या में, लोक की यात्रा अब जिस क्षण पूरी हो जाय, आप ऐसी कठोर बात कह रहे हैं ? आपसे घृणा कर मैं नरक में चली गई होती ।

गांधी : उस दिन का पहला परिचय जन्म भर का अनुराग···एक ही साथ हिमालय पर चढ़ने और समुद्र में कूदने का कारण बन जायेगा···इसे आप नहीं जानती थीं । उस एक क्षण की अरुचि जीवन भर की रुचि बन गई । भगवान के राज्य में ऐसे चमत्कार बराबर देखे-सुने गये हैं ।

पटेल : आप लोग अब मुझे अधिक उत्सुक न करें । काव्य और दर्शन के शब्दों में नहीं, सीधी-सादी सड़क-गली की बोली में कहें बात क्या हुई ।

सरोजिनी : मेरे लिए कुछ भी कहना असम्भव है । मैं निज को इस देश की प्रसिद्ध कवियित्री मानने लगी थी । धन और विद्या दोनों का अहंकार, अवस्था भी मेरी वही थी जिसमें किसी भी स्त्री में अविवेक ही प्रधान होता है । कामदार जरी की साड़ी में जो दृश्य मैंने देखा । सत्य से भागना पाप होगा । आप सच कर रहे हैं, उस क्षण तो···आई थी मैं विस्मय लेकर पर आपको देखते ही विस्मय उड़ गया और मेरे मन में अरुचि··· यह कहना तो आपकी उदारता है मेरे मन में तो सत्य ही

घृणा का विष फैल गया ।

पटेल : इस कविता का मैं फिर विरोध कर रहा हूँ···हुआ क्या, मुझे सूखे से सूखे शब्दों में बस उतना ही सुनना है ।

गांधी : भगवान की कृपा से इस विषय में तो मैं भाग्यवान रहा हूँ । पहली भेंट में जिस किसीके भीतर मेरे प्रति अरुचि जागी वे सभी मेरे प्राण के अंग बन गये । तुम्हारी गति भी मेरे साथ पहली भेंट में वही हुई जो इनकी हुई ।

पटेल : मुझे इनकी सुननी है, अपनी तो मैं जानता हूँ ।

सरोजिनी : तीस वर्ष जो बात आप भूले रहे, आज कहाँ से वह आपकी स्मृति में आ गई ? अब मैं कुछ कह सकूँगी सरदार ! तीस वर्ष पहले जो घटना घटी वह इस समय बिच्छू के डंक सी लग रही है । मन करता है अपने हाथ अपना सिर पीट लूँ और मन भर रोऊँ पर बापू का डर इसमें भी है ।

गांधी : मेरे लिए तो उस घटना में सब ओर ही सुख है । बात यह हुई सरदार ! जब मेरे गुरु ने इन्हें मेरे पास भेजा, इन्होंने समझा देश के किसी ऐसे प्रतापी पुरुष को देखने चल रही हैं जिसने दक्षिण अफ्रीका में गोरों की राजनीति पर विजय लेकर भारत का सिर ऊँचा किया है । वह अच्छे से अच्छे विलायती कपड़ों में होगा । पर जो दृश्य इन्होंने देखा उस पर इन्हें सहसा विश्वास नहीं हुआ । होटल के कमरे में मैं एक पुराने काले कम्बल पर बैठा था । चारों ओर प्यालियों में भोजन का अन्न और शाक फैला था···मैं उस समय भोजन कर रहा था ।

पटेल : चारों ओर ? क्या पीछे भी···

विस्मय और विनोद की मुद्रा ।
गांधी हँसने लगते हैं, सरोजनी भी धीमे हँस पड़ती हैं ।

सरोजिनी : हाँ सरदार, मेरी आँखों में तो यही सूझा कि चारों ओर प्यालियाँ फैली हैं।

गांधी : था भी ऐसा ही मेरे दोनों ओर कागज, पुस्तकें और लिखने का सामान था। प्यालियाँ ऐसे रखी थीं कि मैं भोजन भी कर लूं और कहीं कागज पर कुछ गिरे न। कभी दायें झुककर हाथ बढ़ाता था कभी बायें। और सबसे कठिन बात तो यह हुई कि इनके वेश पर···विदेशी सभ्यता के सारे रंग पर बिना ध्यान दिये ही उस गन्दे कम्बल पर बैठने के लिए ही नहीं, साथ भोजन करने को भी मैंने कह दिया। उस तरह की जीवन-विधि का इन्हें अभ्यास न था, यह भी मैंने नहीं सोचा। इन्होंने सिर हिलाकर जो अस्वीकार किया, इनके होंठ बिचक गये।

सरोजिनी : लौटकर गोखले दादा से मैंने यह सब कहा और दक्षिण अफ्रीका में दोनों आश्रमों में जो इनकी दिनचर्या रही, कालेन बाख, एंड्रूज, पोलक जैसे पश्चिमी सभ्यता में पले लोग इनके प्रभाव में जैसे इनकी विधि में ढल गये थे, उनसे सब सुनकर मैं अपने प्रति ग्लानि से रोने लगी थी। शृङ्गार की कितनी वस्तुएँ तो मुझसे उसी क्षण छूट गईं। शिव की प्राप्ति के लिए पार्वती जैसी तपस्या करने का संकल्प मेरे भीतर उसी क्षण आया।

गांधी : अरे नहीं यह उदाहरण यहाँ न चलेगा।

सरोजिनी : कल्पना के प्राणी से व्यवहार में भूल हो गई। पार्वती की तपस्या शंकर को पति बनाने के लिए रही, मेरी तपस्या गांधी के सान्निध्य के लिए रही। फिर भी मैं कहाँ खरी उतरी ? दरिद्रनारायण के निकट उतरने के लिए आपने कम से कम वस्त्र, साधुओं की बोली में जो अँचला, कोपीन कहा जायेगा, उतना ही रहने दिया।

गांधी : हाँ तो क्या कह रहा था'''पहला विश्व-युद्ध छिड़ चुका था। वहीं बीमार पड़ गया और जब बम्बई बन्दरगाह पर पहुँचा, मेरे स्वागत में जैसे सारा देश उमड़ पड़ा था। मुझे तो लगा ऊपर देव और पितर भी आ गये हैं। समुद्र के तट पर दूर तक, जिधर से लोग मुझे ले गये, सड़कों पर मकानों की छतों पर नर-नारी जैसे मेरे मार्ग में आँखें बिछाये खड़े थे। गांधी नाम वाले व्यक्ति का स्वागत यह नहीं था। अपना विस्मय जब मैंने अपने गुरु से कहा'''वे कहने लगे'''वेद, उपनिषद्, गीता, उसी काल के बड़े से बड़े ऋषि और बड़े से बड़े वीर के दर्शन के लिए लोग आये थे। लोक ने मेरा व्यक्तित्व छीन-कर मुझे इस देश के जागरण का अग्रदूत मान लिया था। अंग्रेजी शिक्षा में हम शिक्षितों की मान्यताएँ मिटीं। लोक में जो विश्वास कई सौ, कई सहस्र वर्ष पहले था वह अब भी चल रहा है। मुझसे कोई पूछे कि भारतीयता का लक्षण एक वाक्य में क्या है तो मैं कहूँगा'''व्यक्तित्व का विनाश !

पटेल : **(विस्मय में)** सो कैसे ?

सरोजिनी : साँस ले लें पहले, आपकी साँस में वेग आ गया है।

गांधी : अपने विश्वास में मेरी श्रद्धा का प्रभाव है यह। झूठ कह रहा हूँ, अपने विश्वास में नहीं, अपने लोक के विश्वास में। नहीं समझ रहे हो सरदार !

पटेल : नहीं...जितना सोचता हूँ भ्रम बढ़ रहा है।

सरोजिनी : अपने लिए तो यही कहूँगी कि भ्रम ने ही मेरा रूप धारण किया है।

गांधी : भ्रम रूप धारण कर सकता तो भगवान भी रूप धारण कर सकता है। चौबीस या दस अवतारों के साथ जो देही इस धरती पर आये, वे व्यक्ति नहीं बने। इस देश के भावलोक में वे भगवान बन गये। उनके व्यक्ति बनने में लोक का

कल्याण नहीं था : व्यक्तित्व का रोग यूनान में उपजा, सारे सभ्य जगत पर छा गया। इस देश में भी जो यह चल पड़ेगा तो जगत की आशा मिट जायेगी। शंकराचार्य तो अभी कल आये। दस-बारह सौ वर्ष का काल समय के अनन्त प्रवाह में कल ही कहा जायेगा। उनके व्यक्तित्व को इस देश ने मिटा दिया उन्हें शंकर का अवतार बनाकर। भट्ट कुमारिल स्वामि-कार्तिकेय के, अभिनवगुप्त पादाचार्य शेष के, गोस्वामी तुलसी-दास वाल्मीकि के अवतार बना दिये गये।

पटेल : तो क्या इसी अर्थ में युधिष्ठिर धर्मराज के, अर्जुन इन्द्र के पुत्र कहे गये हैं ?

गांधी : मुझे तो इसमें अविश्वास करने का कोई कारण नहीं मिलता। व्यक्तित्व का विनाश था यह सब। कोई भी व्यक्ति शक्ति या विद्या के बल से, धन के बल से अपनी पूजा न कराने लगे। व्यक्ति-पूजा लोक धर्म के क्षय का कारण बनती है। यूनानी और लैटिन सभ्यता व्यक्ति-पूजा के साथ चली थी, यह पूजा दूसरों को खली और इन सभ्यताओं का नाश भी इसी से हुआ। अभी हम स्वतन्त्र नहीं हुए, पर यह रोग हमारे लोककाय में समाने लगा। जब लोग मेरे नाम की जय बोलते हैं, मैं धरती में धँस जाता हूँ।

सरोजिनी : आप सर्वमेध जो कर चुके हैं। अपना सर्वस्व राष्ट्र के यज्ञ-कुण्ड में आप झोंक चुके हैं।

गांधी : **(हँसकर)** और जनसमूह मेरी जय बोलकर मेरा वही ऋण भर रहा है, आप कहना चाहती हैं। पर मेरी आत्मा को इसमें सुख नहीं है। इस देश के जन-जन का ऋणी मैं हूँ, मेरा ऋणी कोई नहीं है। बार-बार मुझे इसी देश में जन्म लेना पड़े और हर जन्म में अपने लोक का ऋण मैं भरूँ, भगवान से मेरी यही कामना है।

सरोजिनी : आप महात्मा हैं और क्या कहेंगे ?

गांधी : महात्मा के संकट भी महात्मा ही जानते हैं। भाव के वेग में जो लोग मुझे महात्मा कहने लगे एक प्रकार से मेरे व्यक्तित्व का विनाश कर उन्होंने मुझे अवतारी बना दिया।

पटेल : जलियानवाला काण्ड के बाद जब आपके असहयोग की आँधी चली, लोगों ने आपके दैवी प्रभाव से कुएँ में चर्खा चलते और नीम में कपास फलते देखा था।

गांधी : **(हँसकर)** ऐसी असम्भव बातें मेरे सुनने में भी आई थीं। भगवान के चमत्कार में श्रद्धा रखने वालों से यही स्वाभाविक था। ऐसे ही चमत्कारों के विश्वास में लोग भाव में भरकर सत्याग्रह में कूदे थे। विदेशी-शासन माने बैठा था कि उसकी सेना और पुलिस के भय से लोग घरों के द्वार बन्दकर भीतर बैठे रहेंगे, कोई बाहर नहीं आयेगा किन्तु क्या हुआ।

पटेल : आपके सत्य और अहिंसा के बल से लोग निर्भय बने थे।

गांधी : सत्य और अहिंसा की शुद्ध प्रकृति से कितने परिचित रहे सरदार! लोगों ने मेरे भीतर किसी दैवी चमत्कार का विश्वास कर लिया। विश्वास की धरती पर भाव कल्पवृक्ष फूल उठा। डांडी का अभियान किस दिन आरम्भ हुआ था ?

पटेल : १२ मार्च, १९३०। दो सौ मील की पैदल यात्रा पूरे पच्चीस दिन बिताकर ६ अप्रैल को पूरी हुई थी।

गांधी : जिस साम्राज्य में कभी सूर्य नहीं डूबता था, उसके कानून का विरोध करने वाले कितने होंगे। दस-बीस के आगे तो हमारी कल्पना भी न थी पर किसी-किसी दिन तो बीस हजार से भी अधिक लोग हमारे साथ थे। सड़क के दोनों ओर दूर गाँवों के लोग अपने आप आकर मिलते गये। यह दैवी चमत्कार था।

सरोजिनी : राम-लक्ष्मण के साथ जैसे वानरी सेना मिली थी, जानकी के

उद्धार के लिए।

पटेल और सरोजिनी हँसने लगते हैं।

गांधी : यह सत्य भी है। हमारी स्वतंत्रता की सीता जो सात समुद्र पार बन्दिनी थी उसका उद्धार यहाँ भी था। मुझे तो लगता है कि वह सीता भी हमारे पूर्वजों की स्वतन्त्रता थी, जो समुद्र पार रावण की लंका में बन्दिनी थी। रामायण की कथा उसी स्वतन्त्रता की कथा का रूपक है।

सरोजिनी : देवासुर संग्राम को जैसे आप मनुष्य के हृदय में दैवी और आसुरी प्रवृत्तियों का संघर्ष मानते हैं, कुरुक्षेत्र का युद्ध जैसे हर मनुष्य के हृदय में बराबर चल रहा है।

गांधी : इसमें मेरा अडिग विश्वास है। बुद्धि से कभी इस प्रसंग पर मैं सोचता नहीं। श्रद्धा की आँच में सन्देह भस्म हो जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय धर्म-समारोह जो शिकागो में हुआ था, जिसमें स्वामी विवेकानन्द के वेदान्त की ध्वजा सब धर्मों के ऊपर उठकर लहराई थी वह श्रद्धा की थी, तर्क की नहीं। किसी धर्म को हीन करने का उद्देश्य मेरा नहीं है। विवेकानन्द के कुल पाँच मिनट के पहले भाषण का प्रभाव जो उपस्थित जनता पर पड़ा था, जिसका वर्णन विदेशी लेखकों ने अंग्रेजी में किया है उसी के आधार पर मैं कह रहा हूँ। अपने धर्म को सबसे श्रेष्ठ कहने वाले धर्मों के सामन्त अपने भाषण में भेद बुद्धि का प्रतिपादन पहले कर चुके थे, अपनी उच्चता और दूसरों की हीनता सिद्ध करने में वे आकाश-पाताल हिला चुके थे। वाद-प्रतिवाद की गर्मी श्रोता मण्डली में फैल चुकी थी। विवेकानन्द उस विशाल समारोह में, सब ओर की तड़क-भड़क से सम्भव है डरकर आँखें मूंद कर सरस्वती का ध्यान करने लगे। सभापति ने दो बार उनका नाम पुकारा, उनके मुंह से बस अंग्रेजी में दो शब्द निकले जिनका अर्थ

होगा—'अभी नहीं।'

सरोजिनी : सरस्वती का ध्यान करने लगे थे वे···शिकागो में···और सभापति के दो बार पुकारने पर भी नहीं उठे ?

गांधी : यही हुआ। वेदान्ती विवेकानन्द में व्यक्तित्व का अभिमान तो था नहीं। भगवती सरस्वती के ध्यान में वे विभोर थे। कहने वाले तो यह भी कहते हैं कि पहले के वक्ता क्या बोल गये थे, उन्होंने सुना भी नहीं।

पटेल : (**विस्मय में**) कुछ सुना नहीं। तब कहा क्या ?

गांधी : सरस्वती ने जो कहलाया। महिम्न के दो चरण और गीता के एक श्लोक का आधार उन्होंने उस सभा को दिया। जितनी देर वे बोले नहीं, उससे अधिक देर तक जनता प्रसन्नता और आनन्द में ताली बजाती रही। संसार भर के धर्मों के सेना-पति अपने धर्म की डींग मारकर उपस्थित जनसमूह को अशान्त और उत्तेजित भी कर चुके थे। विवेकानन्द का भाषण जले पर ठंडे लेप-सा उनको लगा। दया, समन्वय, सृष्टि की हर स्थिति में मैत्री भाव और चित्त के अभेद रस का स्वाद मिला उन्हें। इस देश के धर्म और संस्कृति का विजयनाद वहाँ गूँज गया। इस देश की स्वतन्त्रता का सूर्य तो शिकागो में विवेकानन्द के इसी भाषण से निकला था। दक्षिण अफ्रीका में उसी सूर्य के प्रकाश में मेरे सत्य और अहिंसा को मार्ग मिला था। विलियम जोन्स ने जब शकुन्तला का अनुवाद अंग्रेजी में किया, सत्रह सौ नवासी ईस्वी में, और गेटे जैसे पश्चिमी विद्वान जिसे देखकर आनन्द में नाच उठे थे···वह इस सूर्य के आगे चलने वाली उषा थी।

सरोजिनी : बापू कवि बने होते तो इस युग के कालिदास होते।

गांधी, पटेल, सरोजिनी हँसते रहते हैं।

गांधी : कालिदास के भीतर जो कवि था और विवेकानन्द के भीतर

जो दार्शनिक था, दोनों का जन्म श्रुति के गर्भ से हुआ था। वेदान्त के आनन्द में दोनों रमे थे। सरदार से थोड़ी देर पहले कह चुका हूँ, काव्य का रस वेदान्त का आनन्द है। परम पुरुष ने कवि रूप से सृष्टि की रचना की और मनीषी रूप से उसका दर्शन किया। कालिदास में वही कवि रूप देखो और विवेकानन्द में वही मनीषी रूप···फिर तो देखने के लिए कुछ शेष न रहेगा।

पटेल : किस मन्त्र और गीता के किस श्लोक पर उनका भाषण रहा।

गांधी : मन्त्र नहीं। महिम्न स्तोत्र। छः महीने बम्बई हाईकोर्ट में बैठे रहने पर जो पहला मुकदमा मुझे मिला था वह भी जिसने छीन लिया, उसे कानून की पुस्तकों से कहाँ अवसर मिलता विवेकानन्द का भाषण पढ़ने के लिये।

रोजिनी : आपका पहला मुकदमा सरदार ने छीन लिया? सभी सरदार यही करते हैं। बिना ऐसा किये कोई सरदार क्यों बनेगा।

गांधी और सरोजिनी हँसते हैं।

पटेल : वकील सत्य को खूँटी पर टाँग कर अदालत में जाता है।

रोजिनी : घर की खूँटी पर या अदालत की खूँटी पर······

पटेल : घर की खूँटी पर देवी जी···अदालत की खूँटी पर असत्य पहने से ही टँगे हैं।

सब हँस पड़ते हैं।

गांधी : जब से विदेशी राज्य की अदालतें चलीं···इसके पहले तो हर देही के हृदय में देवता के न्याय का आसन लगा था। लोक की अदालतों में उस आसन का देवता किसी को झूठ न बोलने देता था। झूठ बोलना और विष खाना तब दोनों बराबर था।

पटेल : तब नहीं पढ़ा अब तो जान लूँ, उस मन्त्र और श्लोक को···

गांधी : मन्त्र नहीं सरदार। श्लोक के दो चरण।

सरोजिनी : (**गांधी की ओर देखकर**) मेरी ओर देखकर आप मुस्करा रहे हैं। कल्पना के पंख दर्शन का भार नहीं ढो सकते और धर्म के राज्य में कवि के प्रवेश का अधिकार नहीं। महिम्न कोई ग्रन्थ है ?

गांधी : हूँ···शेली, कीट्स की कविताएँ पढ़कर देवी जी कविता लिखती हैं। आप जो कह गईं वह यूनान के कवियों पर घट सकता है। प्लेटो जिन्हें स्वप्न लोक में विचरने वाला मानता था। एथेन्स के प्रजातन्त्र में जिन्हें मत देने का भी अधिकार नहीं था। मतदान की आयु हो जाने पर सभी स्वतन्त्र नागरिक मत देते थे···दास इस अधिकार से वंचित थे। कवि और कलाकार इस अधिकार से वंचित थे। पर इस देश में कवि से बड़ा कोई नहीं था। धर्म और दर्शन बराबर इस देश के कवि के पीछे चले हैं। उसकी विद्या-वधू की गोद के बालक धर्म और दर्शन बने रह गये। पुष्पदन्त ने शंकर की जो स्तुति की वही महिम्न स्तोत्र कहा जाता है।

सरोजिनी : तब तो मेरी गोद के बालक भी बनेंगे वे—आप स्तोत्र कब से पढ़ने लगे ?

गांधी : जी नहीं, इस देश के कवित्व का बीज आपके भीतर नहीं है। आपके रूप में यूनान की कवियित्री सैफो ने जन्म लिया होगा; वाल्मीकि या इस देश के किसी भी कवि से आप का नाता नहीं है। अपनी कविता में आपने अपने व्यक्तित्व का साज-सँवार किया है; विधाता की सृष्टि की ओर आपने देखा भी नहीं। विवेकानन्द के भाषण से मुझे उस स्तोत्र का परिचय मिला।

सरोजिनी : अच्छा रवि ठाकुर को आप क्या कहेंगे ?

गांधी : सत्य में भय की जगह तनिक भी नहीं है। पश्चिम का प्रभाव उनपर भी बहुत है। अब इस विषय में इससे अधिक

इस समय मुझे कुछ नहीं कहना है।

सरोजिनी : देश के सबसे बड़े कवि तो वही हैं।

गांधी : इस युग के···जिसके प्रभाव में मधुसूदन अपने पूर्वजों का धर्म भी छोड़ गये और अपने नाम के पहले 'माइकेल' जोड़ लिये। उनकी देह से तो इस देश का धर्म छूट गया पर उनके साहित्य में इस देश का धर्म भरा पड़ा है। भाव की, रस की जो गति उनके काव्य की गंगा में है, शक्ति की उपासना के रूप में, गोपी विरह के रूप में···बंगाल आज भी उससे तृप्त हो रहा है। ऐसे अनेक बंगाली विद्वान मुझे मिले हैं जो रवि ठाकुर को मधुसूदन के बराबर भी नहीं मानते। फिर चण्डी-दास के बराबर क्या मानेंगे। रवि बाबू भी अपने साहित्य में व्यक्तिवादी हैं। पश्चिम के कवियों के जितने निकट हैं वे, इस देश के कवियों से उतने ही दूर भी हैं। इनकी शंका का समाधान कर लेने दो सरदार! फिर हम लोग उस स्तोत्र और उस श्लोक के प्रसंग पर आयेंगे।

सरोजिनी : अभी और सुनने के लिए मेरी साँस टँगी है···कहते चलें···

गांधी : तुम्हें अपनी कृतियों पर खेद होने लगेगा। आवेश में 'तुम' कह गया मैं···

सरोजिनी : कोई बात नहीं। 'तुम' कहने में अधिक प्यार है। मैं जानती हूँ इस देश के कवि काल के मारे न मरेंगे। अपनी बात कहूँ तो मैं इसी देह से जीवित रहूँगी और मेरी कविताएँ मर जायेंगी।

गांधी : ठीक कह रही हो। काल के मारे न मरेंगे वे। इसलिए कि अपनी कृतियों में वे व्यक्ति नहीं है, विधाता हैं। व्यक्ति को मरना ही है। विधाता की मृत्यु कल्प के अन्त में होगी और फिर जब नई सृष्टि चलेगी···नये रूप में भी···विधाता उसी पुरानी सृष्टि को स्मरण कर वैसी ही सृष्टि फिर रचेगा।

सृष्टि का यह बोध रवि ठाकुर को नहीं है···आदि कवि को था। पश्चिम के व्यक्तिवाद के प्रभाव में रवि ठाकुर ने आदि-कवि में भी दोष देखा।

पटेल : ऐं···दोष देखा आदिकवि में !

गांधी : आदिकवि ने उर्मिला की उपेक्षा की। रामायण में उसका चित्र नहीं खींचा। आदिकवि की यह भूल इस देश के इतने पुराने साहित्य के इतिहास में पहले पहल रवि बाबू को देख पड़ी··· और फिर इस देश के नये कवि उर्मिला को ले उड़े। किसी को नहीं सूझा कि आदिकवि ने जानकी के चरित का जो अंकन किया उसी में इस देश का नारी-जीवन समा गया। जो पुण्य, जो विभूति जानकी में नहीं हैं वह किसी नारी में सम्भव भी है···देश की कोई देवी नहीं मानेगी। पश्चिमी रंग में रँगे लोग जो कह लें। सरोजिनी देवी ! आप कहें, उर्मिला के संकट का भोग अधिक है या माण्डवी के संकट का भोग ?

सरोजिनी : यह दूसरी कौन है ?

गांधी : हा···हा···हा···

देर तक हँसते रहते हैं।

पटेल : भरत की पत्नी का नाम माण्डवी था।

गांधी : था नहीं सरदार ! है। भरत मरकर भी अमर हैं, वही दशा माण्डवी की भी है। रामायण में जो आ गये अमर हो गये। उनके मरने का अर्थ होगा हमारी संस्कृति का मरना। **(सरोजिनी की ओर देखकर)** सुन रही हैं देवीजी ! उर्मिला के पति लक्ष्मण उस देवी से बहुत दूर कभी चित्रकूट में, कभी दण्डकारण्य में, कभी दूर दक्षिण के वन-पर्वतों में, कभी समुद्र के इस पार और कभी उस पार लंका में थे। उस बेचारी का वहाँ तक पहुँचना भी कठिन था। दूसरी ओर माण्डवी

के पति भरत अयोध्या से सटे नन्दिग्राम में तपस्वी का जीवन बिता रहे थे। बाल जटा बन गये थे, देह पर मिट्टी की तह जम गई थी। माण्डवी इतने निकट के पति को छू भी नहीं सकती थी। उर्मिला की प्यास मिटने का जल उनके लिए दुर्लभ था, पर माण्डवी के जल की झारी तो उनके सामने थी जिसे देखने का भी अधिकार उन्हें न था। फिर रवि ठाकुर कैसे कह गये कि आदिकवि ने उर्मिला की उपेक्षा की, जब माण्डवी की दशा उनसे कहीं अधिक दारुण है।

सरोजिनी : हाँ···हाँ···आप ठीक कह रहे हैं। माण्डवी की दशा उर्मिला से अधिक दुःखद है।

गांधी : मेरा कहना ठीक तब होगा जब तुम भी मान लोगी कि रवि ठाकुर पश्चिम के व्यक्तिवाद के मोह में पड़कर यह कह गये।

सरोजिनी : मान गई मैं अब आप सरदार की ओर ध्यान दें।

गांधी : मैं कह चुका था विवेकानन्द उस मंच पर सरस्वती का ध्यान कर रहे थे।

पटेल : **(उत्सुक होकर)** हाँ···

गांधी : उस समारोह में भाग लेना जब उनका निश्चित हो गया तभी से वह भगवती सरस्वती का ध्यान करने लगे, मंत्र जपने लगे स्वर से मन्त्रों का उच्चारण करने लगे थे। न तो उन्हें भय था कि अपने धर्म को उपस्थित करने में वह समर्थ होंगे कि नहीं, न अपने व्यक्तिगत सम्मान की चिन्ता उन्हें थी; सारा असमंजस उनके भीतर से निकल गया था। उन्होंने सोच लिया अपनी वाणी में नहीं···जो कहेंगे वेदान्त की वाणी में कहेंगे। परमहंस रामकृष्ण ने जो भार उन पर डाल दिया···योग बुद्धि से वे उसे ढोयेंगे।

पटेल : तो क्या समारोह में भाग लेना उनका निश्चित नहीं था ?

गांधी : **(हँसकर)** यह वृतान्त लम्बा है। न पूछो। पत्रों में उस धर्म

समारोह की छपी बात पर ही वे उस नये जगत में भेज दिये गये। कुछ राजाओं और दूसरों ने मार्ग-व्यय देकर रेशमी पगड़ी और चोगे में उन्हें जहाज पर चढ़ा दिया **(हँसकर)** सब कुछ कहने में मैं हंसी न रोक पाऊँगा और इसमें असावधानी उस महापुरुष का अनादर बन जायगी।

पटेल : आपके चित्त में उनके प्रति जब कोई वैसी भावना नहीं है, फिर अनादर की कोई बात नहीं।

गांधी : अमेरिका और यूरोप में उनके जो अनेक शिष्य बने उन्हीं में एक देवी निवेदिता थीं।

पटेल : इस देश के जागरण में उनकी रचनाएँ भी नहीं भुलाई जा सकतीं। इस देश की पुराण-कथाओं का उनका संकलन स्वतन्त्र रूप से भी अपनी रोचकता से कलाकृति बन गया है।

गांधी : निवेदिता ने विवेकानन्द की इस अमेरिका यात्रा के विषय में जो लिखा है उसे सुनो, वह देवी कहती हैं :
"उस समय हिन्दू जीवन और धर्म के असंगठित होने का इससे बड़ा उदाहरण दूसरा क्या होगा कि उसका प्रतिनिधि बिना पूर्व सूचना और परिचय-पत्र के वैभव और बल के उस सिंहद्वार में घुसने चला…"

सरोजिनी : शिकागो के उस अन्तर्राष्ट्रीय धर्म सम्मेलन में स्वामी के जाने की सूचना पहले से नहीं पहुँची थी ?

गांधी : नहीं। उनके पास का धन जो कुछ था, विनिमय न जानने के कारण ठग लिया गया। सब ओर से असहाय विवेकानन्द केवल रामभरोसे उस अपरिचित अर्थप्राण लोक में भटकने लगे…इस द्वार से उस द्वार भूख की ज्वाला मिटाने के लिए। मधुकरी इस देश की अपनी विधि है। बुद्ध के संघ में चलती रही है। संन्यासी इसपर यहाँ आज भी जीता चला जा रहा है पर वहाँ अभ्यागत को भोजन देना धर्म का शुद्ध भाव तो

है नहीं। वहाँ तो इसके लिए कानून हैं, नियम हैं।

पटेल : तब तो उन्हें बड़ा अपमान उठाना पड़ा होगा ?

गहरी साँस लेते हैं।

गांधी : उठाना पड़ा। अमीरों के गोरे नौकर धक्का देकर उन्हें एक द्वार से दूसरे द्वार करते रहे। पर संकट का सहायक भगवान साथ था। रेल के माल गोदाम के पीपे पर बैठ कर उनको रातें काटनी पड़ी थीं; टेलीफोन का व्यवहार भी वे नहीं जानते थे और नगर-सूचना-कार्यालय भी कहाँ होगा, इसका पता भी उन्हें न था। जिस द्वार पर जाते भोजन माँगते और शिकागो के धर्म सम्मेलन-कार्यालय का पता पूछते। वहाँ किसे फुर्सत थी इनके लिए उस कार्यालय का पता खोजने की। यह जानकर कि बोस्टन में रहना शिकागो से सस्ता पड़ेगा वे बोस्टन की गाड़ी पर बैठे, जिसमें एक अधेड़ महिला इनकी बातों के प्रभाव में इन्हें अपने घर ले गई। उस देवी के मित्र भी इन्हें आदर से न देख सके। इनके शरीर के वस्त्र के कारण। चिड़ियाखाने में कोई विचित्र प्राणी जैसे आ गया हो। पश्चिमी वस्त्र पहनने के लिये इनसे बार-बार कहा गया जिससे सड़क पर बाहर निकलने में इनकी रक्षा लड़कों के और असभ्य दूसरे लोगों के ऊधम से हो जाय। स्वामी ने उस समय ईसा की प्रार्थना की, इस विश्वास से कि वे उस समय 'मेरी' के पुत्र के राज्य में थे।

पटेल : तब तो उनकी दशा बड़ी दयनीय हो गई होगी ?

गांधी : पता नहीं क्या होता। पर वह अनाथों का नाथ उनके साथ जो था। हारवर्ड विश्वविद्यालय के यूनानी भाषा के आचार्य उनकी विचित्रता देखने आये और दर्शन की भाषा में दोनों की बातें चार घंटे तक चलीं। उस मनीषी ने फिर आगे का कार्य सरल कर अपने व्यय से इन्हें शिकागो भेजा और जो

समिति पूर्वी देशों के प्रतिनिधियों का प्रबन्ध करती थी उसके लिए एक पत्र भी दे दिया। इस दैवी सहायता के आनन्द में वे ऐसे मग्न हो गये कि जिस कागज पर उस समिति का पता लिखा था वही गुम हो गया। शिकागो में वे फिर अनाथ हो गये...अब कहाँ जायें ? सच तो यह है कि सुक-रात या ईसा ही स्वयं वहाँ आ गये होते तो उनकी भी वही दशा होती। वे सड़क के किनारे बैठकर भगवान की इच्छा का दर्शन करना चाहते थे कि सामने के मकान का द्वार खुला। एक देवी ने बाहर निकलकर पूछा, "क्या अन्तराष्ट्रीय धर्म-सम्मेलन में प्रतिनिधि बन कर तो नहीं आये हैं ?"

सरोजिनी : बापू, जब व्यक्ति सब ओर से हार जाता है और भगवान की इच्छा पर अपने को छोड़ देता है, वे आ जाते हैं उसकी रक्षा को।

गांधी : अब भारत की पुत्री तुम बन रही हो ! ग्राहग्रसित गज, अजामिल का उद्धार जब तुम्हारे भाव लोक का सत्य बन जायेगा, इन आख्यानों को जब तुम सन्देह से न देखोगी तब पूरी तरह इस देश की पुत्री बनोगी।

सरोजिनी : अमेरिका में जो स्वामी के साथ घटी...वही नेटाल में आपके साथ भी घटी थी।

गांधी : केवल नेटाल, केनिया, ट्रान्सवाल ही में नहीं, इंगलैंड में भी मेरे साथ यह घटी थी। यहाँ अपने जन्म के देश में भी बरा-बर घटती रही है और किसके साथ कब और कहाँ नहीं घटी ? जिसके साथ न घटी हो उसका मुँह मैं देखना चाहूँगा पर ऐसा कोई नहीं है सरोजिनी ! कुछ आँखें सूर्य को न देख सकें इससे सूर्य की सत्ता नहीं मिटती।

पटेल : फिर आगे क्या हुआ ?

गांधी : बा की बातें मैं कहने वाला था सरदार। देख रहे हो ?

मनुष्य की इच्छा से ही यह सृष्टि नहीं चल रही है। चलाने वाले के हाथ की कठपुतली हैं हम। सूत्र उसके हाथ में है और हम नाच रहे हैं। इस जीवन में फिर कभी अवसर मिलेगा किसी से बा के विषय में कुछ कहने का कौन जाने? पर जो कुछ भगवान मेरे कण्ठ में बसकर कहते रहे हैं वही आवश्यक रहा है। बा की बातें जब उनके लिए आवश्यक होंगी, कभी वे भी निकल जायेंगी।

पटेल : स्वामी का प्रसंग पूरा कर फिर वही सुनना रहेगा।

गांधी : अब तो उसके लिए समय न रहेगा। अपनी दिनचर्या में किसी प्रकार उलट-फेर मैं नहीं करता...लगता है यह अपने बनाने वाले के साथ ही विश्वासघात है। विवेकानन्द श्रीमती हेल से सब कह गये...उन पर जो कुछ बीती थी सब।

सरोजिनी : उन देवी का नाम श्रीमती हेल था?

गांधी : हाँ...और वह बाद में अपने पति और बच्चों के साथ स्वामी की शिष्या भी बन गईं। विवेकानन्द को आदर से भोजन, विश्राम कराकर वे स्वयं उनके साथ उस कार्यालय तक गईं! अब उस सम्मेलन में भाग लेना तो सरल हो गया, कठिन यह था कि वे वेद-वेदान्त के प्रतिनिधि, श्रुति और स्मृति के प्रतिनिधि, भारत के साहित्य, संस्कृति और ऋषियों के प्रतिनिधि अपने कार्य का सम्पादन कैसे करेंगे? अतीत का गौरव उनकी वाणी पर निर्भर था...बचे या डूबे। इसके लिए उनकी ध्यान-धारणा की बात तो पहले हो चुकी है।

पटेल : सचमुच बड़ा भार था उनपर; इस प्राचीन देश और धर्म के अकेले प्रतिनिधि थे वे।

गांधी : हा...हा...हा...(**देर तक हँसते रहते हैं**) तुम्हारे देश के मनचले धर्म ब्रह्मसमाज का प्रतिनिधि भी गया था। उसे कोई कठिनाई नहीं पड़ी। मुट्ठी भर लोगों के नये सम्प्रदाय

का वह प्रतिनिधि वहाँ जा रहा है, इसकी सूचना वहाँ पहुँच चुकी थी, परिचय-पत्र भी उसका नियमित था। दूसरी ओर इस देश के भूत, वर्तमान और भविष्य के इस प्रतिनिधि की दशा तो सुन ही चुके।

पटेल : और किन धर्मों के प्रतिनिधि गये थे ?

गांधी : संसार में जितने जीवित धर्म हैं, जिनके अनुयायी सभ्य कहे जाते हैं, सबके प्रतिनिधि। जितने भी ईसाई सम्प्रदाय हैं सबके प्रतिनिधि थे। इस्लाम, यहूदी, जरथुस्त्र, शिन्तो, बौद्ध, चीनी, और हाँ जैन धर्म का भी कोई प्रतिनिधि था जहाँ तक स्मरण है।

पटेल : स्वामी विवेकानन्द के वेदान्त विजय की बात कई बार आपसे संकेत रूप में सुनने को मिली है।

गांधी : स्वामी ने अमेरिका और यूरोप में जब भाषण किया, जितना पत्रों में आया मैं ध्यान से पढ़ता रहा। पश्चिमी जगत में विवेकानन्द का यश इस देश के धर्म और दर्शन का यश था। स्वामी के व्यक्तित्व का नहीं, इसे वे भी मानते रहे। जब वे पहले प्रवचन के लिए उठे, दस हजार के समुदाय ने उनके वेश को विस्मय से देखा। प्रतिनिधि तो अनेक धर्मों के थे पर वेश सब का एक था, पश्चिम का सभ्य वेश; एक देह पर कई रंग के वस्त्र, कटे, छँटे पर स्वामी की पगड़ी और अलफी या कन्था रेशम के एक ही थान से बने थे, पीले और गेरुए रंग के बीच जो रंग होगा। वेश के विस्मय में लोग पड़े ही थे कि वाणी का विस्मय सब ओर छा गया, मैत्री भाव में खिली उदार वाणी लोगों के कान से मन में जाकर अमृत-सी फैल गई।

पटेल : अब वह स्तोत्र और गीता का श्लोक···

गांधी : उसके पहले प्रतिज्ञास्वरूप जो शब्द निकले···किसी व्यक्ति के

मुँह से न निकलकर जैसे वे सृष्टि के केन्द्र से या आकाश के मध्य से निकले हों : "धर्मों के सनातन केन्द्र की ओर से बोलना है, ऐसे धर्म की ओर से···जिसने जगत को मैत्री भाव और सर्वात्म बोध दिया है" इन शब्दों के प्रभाव में सुख का सम्मोहन सब ओर छा गया। पहले बोलने वाले अपने धर्म की श्रेष्ठता में दूसरे धर्मों को चुनौती दे चुके थे पर इस भाषण के आरम्भ में ही निन्दा किसी की नहीं, शील सबके लिए था। फिर वह स्तोत्र और तब वह श्लोक आया। स्तोत्र का अर्थ था : "जैसे नदियाँ विभिन्न उद्‌गमों से चलकर अपना जल समुद्र में गिरा देती हैं उसी प्रकार हे प्रभु ! मनुष्य जो अपनी श्रद्धा से विभिन्न मार्ग पर चलने लगते हैं, देखने में वे मार्ग अनेक रूपों में चाहे सीधे-टेढ़े दीख पड़ें सभी ही आप तक ले जाते हैं।" इन शब्दों से अपरिमित श्रद्धा का भान लोगों के भीतर जागा तब···तक वे बोल उठे : "जो मुझे जिस विधि से भजता है मैं उसे उसी विधि से प्राप्त होता हूँ, सभी मार्ग मुझ तक पहुँचकर अन्त हो जाते हैं।" इतना सुनते ही पहले के भाषणों से जो लोगों में उद्वेग भर गया था वह सूर्य के निकलते ही अन्धकार मिटने की तरह मिट गया। स्वामी की आकृति से तृप्ति और आनन्द की जो किरणें निकल रही थीं उनसे वहाँ जन-समूह के हृदय का कोना-कोना खिल उठा। विवेकानन्द का भाषण उनके सुख सन्तोष और आनन्द का कारण बन गया।

सरोजिनी : आप ऐसे कह गये कि यह सब कहने के लिए पहले से तैयार रहे हों।

गांधी : अरे ! यह सब तो हमारे जन्मान्तर के संस्कार हैं। विवेकानन्द की वाणी से इस लोक का संस्कार ही निकला था। अपनी बुद्धि से उन्होंने कुछ नहीं कहा।

पटेल : पहले भाषण में ही उन्होंने पश्चिम के पण्डितों को इस देश के धर्म का परिचय करा दिया।

गांधी : इस देश के धर्म का कहो तो इसे समूची सृष्टि का सनातन धर्म भी कह सकते हो। अपने धर्म को हम सनातन इसलिए कहते आये हैं कि यह व्यक्ति और व्यक्तियों से बने समूह का न होकर सृष्टि के मूल का धर्म है। उस दिन से नित्य, विवेकानन्द को अन्त में बोलने का समय मिलता रहा, उनको सुनने के लिए जनता उत्सुकता में बैठी रहती थी।

सरोजिनी : और जो उन्हें पहले बोलने का अवसर मिलता।

गांधी : लोग उठकर चले जाते···उनके भाषण के आनन्द में ही लोग बैठते थे।

सरोजिनी : तब यह कहें कि उनके भाषण में काव्य और संगीत का रस लोगों को मिलता था।

गांधी : काव्य और संगीत में भाव का रस मिलता है जो स्वतः प्रकाशित होता है। किसी प्रकाशक की जिसे आवश्यकता नहीं रहती। स्वामी का भाषण स्वतः प्रकाशित रहता था। यह पहला भाषण सोमवार ११ सितम्बर १८९३ में हुआ था। संसार भारतीय विद्या की ओर आकर्षित हुआ। विवेकानन्द जगत के विस्मय बन गये। भारत की राष्ट्रीय भावना में हिमालय से उतरती गंगा का वेग मिल गया। उस अन्तर्राष्ट्रीय मेले में सब जगह, बाहर नगर में, अमेरिका के सभी पत्रों में विवेकानन्द के चित्र लग गये। पश्चिमी लोक के आकाश में यह नये सूर्य का उदय था। १५ सितम्बर को हिन्दू-धर्म पर उनका वह ऐतिहासिक भाषण हुआ जिसकी ध्वनि अमेरिका को पारकर समूचे विश्व पर छा गई। पश्चिमी जगत ने वह सुना जिसका पता प्लेटो, अरस्तू को नहीं था, यूरोप के किसी विद्वान् को कभी नहीं था। मार्क्स, फ्रायड के

साथ पश्चिम का सारा ज्ञान उस भाषण के पीछे छूट गया।

सरोजिनी : धर्म में मार्क्स और फ्रायड कैसे मिलेंगे ?

गांधी : जिस धर्म में **(चारों ओर हाथ से वृत्त बनाकर)** यह सारा जगत लय हो जाय, उसमें क्यों नहीं मिलेंगे। फ्रायड के मानस विज्ञान का पता प्लेटो, अरस्तू को नहीं था। पर इस देश में उपनिषद् के तत्वदर्शकों को था, वेद के मन्त्रद्रष्टा ऋषियों को था, योग, पुराण-साहित्य, संगीत, चित्र में यहाँ सब कहीं था। यही दशा मार्क्स के भौतिक द्वन्द्व की भी है। मार्क्स की विद्या पश्चिम के लिए नई है, यहाँ तो वहुत पुरानी हो चुकी।

सरोजिनी : इसका कोई प्रमाण यहाँ नहीं मिलेगा बापू !

गांधी : अहा ! क्या कहना है। इस देश में भौतिक और आध्यात्मिक में कभी अन्तर नहीं रहा देवी जी ! यह भेद बुद्धि तो पश्चिम से आई है। भाव का अनुभव भौतिक आधार से उठकर आध्यात्मिक बन जाता है…जब वह व्यक्ति की सीमा पार कर, विश्व को सब ओर से घेर कर ब्रह्मस्वरूप की ओर बढ़ता है। पश्चिम में व्यक्ति की सीमा कभी पार न हो सकी। हमारा और उनका यही भेद है। किप्लिंग जो कुछ दम्भ में कह गया वह सत्य था—"पूर्व पूर्व है और पश्चिम पश्चिम और ये दोनों कभी न मिलेंगे।" यह धर्म सम्मेलन सत्रह दिनों तक चलता रहा। धर्म के धुरन्धर लोग नित्य ही चेष्टा करते कि इस भारतीय तरुण संन्यासी को पीछे छोड़ दें पर नित्य जनता से तो विवेकानन्द के कण्ठ में ही जय-माला पड़ी।

सरोजिनी : जयमाला मिली—तो वह भी कोई स्वयम्वर हो रहा था ?

मन्द हँसी।

गांधी : जिसके रूप, गुण के मोह में कन्या पड़ती थी उसके कण्ठ में

माला डाल देती थी, यही न ?

सरोजिनी : हाँ यही···

गांधी : विवेकानन्द को रूप और वाणी दोनों की मोहिनी मिली थी। सबसे बड़ी मोहिनी तो यह थी कि श्रोता मण्डली के साथ उनका आध्यात्मिक संवेदन चलने लगता था। उनके मुख से निकले शब्द सब की आत्मा की ध्वनि बन जाते थे। उस धर्म-सम्मेलन के बाद उन्हें भाषण के जितने निमन्त्रण मिले सब कहीं जाना चाहते भी तो न जा पाते। फिर भी सप्ताह में पन्द्रह भाषण तक उन्हें देने पड़े। उनके भाषण के अमेरिकन व्यवस्थापक ने जहाँ पच्चीस सौ एक भापण के लिए लिया उन्हें कुल दो सौ दिया।

पटेल : पच्चीस सौ में दो सौ···

विस्मय की मुद्रा।

गांधी : जिस देश में धन भगवान बन बैठेगा वहाँ दूसरा क्या होगा ? अर्थ के बारे में वे बहुत ठगे गये और क्यों न ठगे जाते ? जिस गुरु के वे शिष्य थे उनके आसन के नीचे नरेन्द्र ने स्वयं एक सोने का सिक्का रख दिया। परमहंस रामकृष्ण उस पर बैठते ही चौंक कर 'जले जले' कहते उठे। आसन हटाने पर वह सिक्का निकला। आसन के नीचे के सोने से जो महापुरुष जल गया उसका शिष्य, जिसे अपनी सारी शक्ति देकर वे सिधारे थे सोने को संभाल कर रखने का ढंग कहाँ पाता ?

मुस्कराकर सिर हिलाते रहते हैं।

सरोजिनी : परमहंस रामकृष्ण के जीवन-वृत्त से बापू पूरे परिचित हैं।

गांधी : बीस वर्ष से ऊपर हो रहे हैं जब मैंने परमहंस के जीवन-चरित की भूमिका लिखी थी, यह जीवन-चरित रामकृष्ण मठ की ओर से निकला था। उस भूमिका में मैंने देशी तिथि, मास और विक्रम सम्वत् दिया है। अंग्रेजी तारीख,

महीना, साल देने में मेरी आत्मा काँप उठी। धर्म कर्म के हमारे सारे संकल्प देशी तिथि, मास, संवत्सर में होते हैं, मन्वन्तर का नाम लेना भी हम नहीं छोड़ते तो जो बड़े अवसर हों उनमें तो देशी विधि का पालन हो।

सरोजिनी : तब तो पूर्ण स्वतन्त्रता के अवसर पर आप देशी पंचांग से काम लेंगे।

गांधी : मेरी चली तो देशी पंचांग, देशी भाषा···चर्खा और राष्ट्र-भाषा मेरे कर्मरथ के दो चक्के हैं। एक पर यह रथ न चलेगा। मालवीय जी ने मुझे जब बनारस हिन्दू विश्व-विद्यालय के उद्‌घाटन में बुलाया। विश्वनाथ की नगरी में विदेशी भाषा में बोलना कितने लज्जा की बात है यह मैंने कहा था। जहाँ लार्ड हार्डिंग के साथ देश भर के महाराजा और धनकुबेर जुटे थे, देश भर के विद्वान भी जिस मण्डली में बैठे थे। उसी विश्वविद्यालय में उसकी रजत जयन्ती में उसके गोपुर पर मोटे अंग्रेजी अक्षरों का और अंग्रेजी भाषा के प्रयोग का मैंने खुलकर विरोध किया था। कांग्रेस के अधिवेशनों में मैं केवल राष्ट्रभाषा में बोलने के लिए ही जाता था नहीं तो प्रस्तावों में मेरी रुचि न तब थी न अब है। प्रस्तावों पर तर्क करने वाले कर्म से बराबर भागते हैं।

पटेल : गुजरात तो राष्ट्रभाषा मान लेगा पर दक्षिण और बंगाल ?

गांधी : राष्ट्र के प्रति शपथ और संकल्प जो धर्म से लेंगे सभी मानेंगे। राष्ट्रभाषा का द्रोही राष्ट्र का द्रोही होगा। सम्भव है चक्रवर्ती राजगोपालाचारी जैसे महापुरुष राष्ट्रभाषा का विरोध करें। थोड़े लोग अपनी सन्तान के पैतृक अधिकार में केन्द्र की बड़ी नौकरियों को बराबर रखने के लिए ऐसा करें, पर देश का धर्म जागेगा। शंकराचार्य के शंखनाद

की तरह राष्ट्रभाषा का शंखनाद सबको सुमार्ग पर ले आयेगा।

पटेल : मौलाना की बोली सुनाई पड़ती है।

गांधी : हाँ, वे आये होंगे, नरेन्द्रदेव भी। भूलाभाई तो दिन में मिल गये थे। अब उधर ही चलें।

गांधी के साथ सबका प्रस्थान।

●

दूसरा अंक

एक पहर दिन चढ़ आया है। गांधी एक पेड़ के नीचे बैठे हैं। थोड़ी दूर पर छोटे, नीची दीवालों के कई मकान देख पड़ते हैं। पास वाले मकान के भीतर से दो लड़कियाँ बारी-बारी से निकल कर गांधी के पास आती हैं और उनसे धीरे से कुछ कह कर चली जाती हैं। एक पुरुष भी दाढ़ी-मूँछ सफाई से बनाये उनके पास आता है, कुछ कहता है और फिर मकान में चला आता है। सामने की ओर से नरेन्द्रदेव आते हैं, गांधी को हाथ जोड़कर जिस कुर्सी पर गांधी बैठे हैं वो कुर्सी छोड़ कर बैठने लगते हैं। प्रायः पच्चीस कुर्सियाँ घेरा बनाती रखी हैं। गांधी घुटने तक खद्दर की धोती और ऊपर पतली चौड़ाई का कपड़ा ओढ़े हैं।

गांधी : **(अपने दायें की कुर्सी पर हाथ से संकेत कर)** इस पर आ जाओ ।

नरेन्द्रदेव : दायें···आपके नहीं···

गांधी : (हँसकर) समाजवादी भी इतना भेद मानता है ? मार्क्स की अर्थनीति में···

नरेन्द्रदेव : जी ! इस देश की मर्यादा मिलानी पड़ेगी । अब तो आप भी···बिरला भवन में जैसे जगह न थी आपके लिये···इस भंगी बस्ती में आ बैठे । मार्क्स स्वयं तो बड़े होटलों में ठहरते आये ।

गांधी : खड़े न रहो । फिर आ जाओ इस ओर···

नरेन्द्रदेव बाईं ओर की कुर्सी पर गांधी से सटकर बैठते हैं ।

: यरवदा आश्रम के आरम्भ में हरिजन बस्ती में जाते-जाते न जा सका । तीस वर्ष से अधिक हो रहे हैं । भगवान की इच्छा तब न हुई अब हुई है । जितनी शान्ति के दिन यरवदा जेल में बीते थे, अध्ययन, प्रार्थना और चर्खा कातने में जो तृप्ति तब मिली थी, चित्त की शान्ति वह यहाँ मिल रही है । इस हरिजन बस्ती में मैं अपने को हरि के अधिक समीप पा रहा हूँ ।

नरेन्द्रदेव : मैं तो बड़ी चिन्ता में आया ?

गहरी साँस लेते हैं ।

गांधी : भगवान जब जो करना चाहेगा उसकी कोई रोक न हो सकेगी । सरदार न जानें मुझे, आचार्य नरेन्द्रदेव न जानें, सरोजिनी न जानें, मेरे अभाग्य का भी कहीं अन्त है ? देश के दो टुकड़े न होने पायें इसे न होने देने के लिये मैं उपवास

करने लगूँगा यही डर था न ?

नरेन्द्रदेव : जी ! काशी विद्यापीठ, हिन्दू विश्वविद्यालय, लखनऊ, प्रयाग, कानपुर दस दिन पहले से ही सब किसी की जीभ पर यही बात चलती रही है।

गांधी : यहाँ भी'''देश भर में यही बात चलती रही है। मौलाना तो कई दिन से मुझे गीता की, रामायण की, चर्खा की शपथ देने लगे कि मैं अब उपवास न करूँ। उनके सन्तोष के लिये गीता और कुरान दोनों की शपथ ली मैंने। सरदार रोने लगे थे।

नरेन्द्रदेव : कहीं वैसा हुआ होता तो रोने तो मैं भी लगता।

गांधी : अपनी इच्छा से रोने वाले कहीं नहीं मिलेंगे। भगवान रुलाना जब चाहेगा सभी रोने लगेंगे। अपनी इच्छा से, अपनी बात रखने के लिये, अपने अहंकार या दम्भ की विजय के लिये मैंने उपवास कभी नहीं चलाया। अनशन तब करने को कहा है जब सारे मार्ग बन्द हों। भगवान की शरण में जाने के पहले मन और काया की शुद्धि के लिये उपवास मैं मानता हूँ।

नरेन्द्रदेव : देश कट गया, पाकिस्तान बनने की बात आपने भी मान ली, अब मार्ग खुला कहाँ है ?

गांधी : दो महीने दस दिन अभी हैं। इस बीच भगवान चमत्कार कर सकता है। अपने राजनीति के गुरु को मैंने यही लिखा था कि अधिक से अधिक पैंसठ और कम से कम सोलह व्यक्ति सत्याग्रह में उतरेंगे।

नरेन्द्रदेव : नेटाल वाले सत्याग्रह में ?

गांधी : हाँ, वह सत्याग्रह सारी दक्षिण अफ्रीका की धरती में फैल गया। छः हजार सत्याग्रही मेरे पीछे पहले सत्याग्रह में ही आ गये, फिर तो वह आन्दोलन मेरे जेल जाने पर ऐसे फैला

जैसे जंगल में आग फैलती है। जो तरुण युगों से नहीं जानते थे कि उनका कुछ भी नाता भारत से है, जिनके पूर्वज ईसाई बन चुके थे, जिनकी शिक्षा ईसाई विद्यालयों में हुई थी, जो सब तरह से इस देश से छूट चुके थे, वे उस सत्याग्रह में स्वयंसेवक बने। हिन्दू, मुसलमान, पारसी सत्याग्रह की नाव में आ बैठे एक साथ डूबने के लिए...पार करने की बात तो कोई थी नहीं। भगवान का चमत्कार था कि वह सब पार हो गये। यहाँ आने पर चम्पारन का आन्दोलन, खेरा सत्याग्रह, कुली प्रथा की बन्दी सब में वही चमत्कार था।

नरेन्द्रदेव : कल जब आपने भी देश का विभाजन मान लिया...

गांधी : हमारे सब साथी जब मान गये...सबके ऊपर निरंकुश बन जाने का स्वभाव तो मेरा नहीं रहा है। मौलाना आज़ाद तो पन्द्रह दिन से मुझसे अकेले में बराबर कहते रहे हैं कि जब तक वे ईमानदार मुसलमान माने जायँ तब तक यह बँटवारा न माना जाय, या उनसे कांग्रेस की सदस्यता से इस्तीफा लेकर देश बँटे!

नरेन्द्रदेव : उनकी दशा तो सचमुच हम लोगों से भी बुरी है। लीग वाले उन्हें इधर कितनी गालियाँ देते रहे हैं।

गांधी : मौलाना चाहते तो मुसलमानों के इमाम बने होते। यह गद्दी उन्हें दी जा रही थी।

नरेन्द्रदेव : जी! जानता हूँ। इमाम बनकर मुल्क की लड़ाई में उतरना कठिन होता।

गांधी : मध्य एशिया के सभी देशों में, अरब-मिस्र में, मिस्र के अल-अज़हर-विश्वविद्यालय में जो इस समय संसार का सब से पुराना विश्वविद्यालय है, मौलाना कुरान के बहुत बड़े विद्वान माने जाते हैं। इस्लामी दुनियाँ में बड़ा से बड़ा पद वे जब चाहते ले लेते।

नरेन्द्रदेव : तो कांग्रेस की सदस्यता से इस्तीफा देने को कह रहे थे ?

गांधी : देश का विभाजन मेरे सत्य और मेरी अहिंसा की हार है, पर मौलाना के लिये इस्लाम मज़हब की, हज़रत मुहम्मद के इन्साफ़ की हार है। कहते हैं 'अलहिलाल' पत्र जो उन्होंने कलकत्ते से निकाला···सैयद अहमद जो खाई हिन्दू और मुसलमान के बीच तैयार कर गये थे उनके उस पत्र से पटने लगी। अंग्रेजी सरकार ने उन्हें नज़रबन्द कर छः साल राँची में रखा। पहले-पहल जब वे मुझसे मिले···उनकी विद्या की धाक तो मैं सुन चुका था···मुझ पर तो पहले उनकी वीरता की, बहादुरी की धाक छा गई। इस देश में मुझे पहला पुरुष मिला जो अपनी मृत्यु का स्वागत भी हंसकर करने वाला था। उनके मुख से शब्द कैसे निकलते थे, आँखें घूम कर कैसे नाच उठती थीं, लम्बी ऐंठी मूँछ के एक-एक बाल जैसे विद्रोह के लिए तने खड़े थे। मौलाना का सम्पर्क बंगाल के क्रान्तिकारी दल से भी हो चुका था। पर एक बार जो मेरे साथ आये अहिंसा और सत्य के व्यवहार की कसौटी बन गये।

नरेन्द्रदेव : आप को सचमुच इसका दुःख नहीं है, मुझे तो विश्वास नहीं होता।

गांधी : भगवान की इच्छा में दुःख कर हम क्या करेंगे भाई ? जिना साहब से हाथ जोड़कर मैंने कहा···चाहो तो मुझे काट कर दो कर दो पर मुल्क को न काटो। यमराज जब अपने भैंसे पर चढ़ कर मेरे पास आयेंगे मैं उनसे अपने प्राण की भीख न माँगूंगा, पर जिना से मैंने इसकी भीख माँगी। पर "भारत छोड़ो प्रस्ताव" का बदला बिना लिये अंग्रेज चले जाते तो उनकी समझ में उनकी नाक कट जाती। जितने दिन कार्यकारिणी के सदस्य अहमदनगर में बन्द रहे और

मैं आगा खाँ महल में, जिना को खुल कर खेलने का अवसर मिला। वायसराय ने उसे भरा और उस भले आदमी ने वायसराय को। मेरे दुख की बात न पूछो। जिस फल के लिये मैंने ब्रह्मचर्य का व्रत लिया, भंगी का कार्य अपने हाथ से किया, आश्रम का जीवन दरिद्र से दरिद्र बन कर चलाने का भाव···सब तो चला गया इस देश के टुकड़े होने से। माता की देह काट कर दो टुकड़े कर दी जाय···किस बेटे को इसका दुःख न होगा।

नरेन्द्रदेव : माँ की देह काटी जा रही है और जो लोग काट रहे हैं वह भी इसी के बेटे हैं।

मौलाना आजाद सरदार पटेल के साथ प्रवेश करते हैं।

आजाद : कब आये नरेन्दर देव ! (**गांधी, नरेन्द्रदेव हाथ जोड़कर उठते हैं**) बैठ जायँ आप लोग, हम लोग मर गये। मरे की तहजीब कैसी ? (**नरेन्द्रदेव की ओर देखकर**) क्यों ठीक कह रहा हूँ···गलत हो तो मेरा कान पकड़ो।

नरेन्द्रदेव : जी अभी गाड़ी से चला आ रहा हूँ।

आजाद : कुछ नाश्ता किया ?

नरेन्द्रदेव : जी रास्ते में ही कुछ कर लिया।

आजाद : जनाज़े के साथ खा पीकर चलते हैं। यहाँ तो मुल्क का जनाज़ा निकला है।

गांधी : पर इसमें आपका कसूर नहीं है मौलाना ! और न मेरा है।

आजाद : खुदा का है, भगवान का है, आप तो कहकर निकल जायेंगे। कलकत्ते में इक्के-दुक्के छूरे चलने लगे। पिछले चार दिनों में मरने वाले सब हिन्दू हैं। इससे साबित है मारने वाले मुसलमान हैं।

गांधी : लीगी सीधी कार्रवाई न करें, बेगुनाह न मरें इसी डर में तो

मुल्क का टुकड़ा करना मान लिया गया। अपनी कुर्सी इधर कर दो आचार्य ! ठीक मौलाना के सामने। इनका क्रोध मुझ पर बरसना चाहिए।

नरेन्द्रदेव कुर्सी मौलाना के सामने रखते हैं, गांधी उस पर बैठते हैं। सरदार और नरेन्द्रदेव दोनों ओर कुर्सी खींचकर बैठते हैं। अब जैसे कुर्सियों का घेरा बन जाता है।

: कैसा रंज और कैसा दुःख मौलाना ? आप कहें ख़ुदा हाफ़िज, मैं कहूँ हे राम !

आज़ाद : और जो लोग छुरे खा कर मर रहे हैं ?

गांधी : बँटवारा न मानने पर तो और मरते ?

आज़ाद : सरदार और इनके बड़े साथी इस डर में पड़ गये। क़ौम की बर्बादी न हो इनका डरना सही था। पर जो आसार देख पड़ते हैं यह आग बंगाल में पहले फैलेगी, फिर पंजाब में, सिन्ध में, इस दिल्ली में भी फैलेगी। लीग का मोर्चा सब कहीं बन चुका है। अंग्रेजी हुकूमत की शह भी है।

गांधी : कलकत्ते जाकर मैं मुसलमान के घर ठहरूँगा।

आज़ाद : और मैं लाहौर या अमृतसर में हिन्दू या सिख के घर। पर इससे कोई बात बनने वाली नहीं है। पाकिस्तान बनने के पहले···हाँ···दो महीने दस दिन में पंजाब और बंगाल से हिन्दू खदेड़ दिये जायेंगे, यहाँ भी वह आग भड़केगी।

गांधी : मुसलमानों पर यहाँ अत्याचार हुआ कि मैंने अनशन किया।

आज़ाद : **(दुःख की हँसी)** वह तो होगा ही। लीगी मोर्चा बिला वजह भी मुसलमानों को बहकाकर पाकिस्तान बुला लेगा ? बाद में वहाँ पर क्या गुज़रे।

पटेल : मौलाना साहब अब किया क्या जा सकेगा ?

आजाद : अच्छी बात, मैं कहूँगा क्या करना है। कल कहूँगा। बापू से बड़ा हिन्दू मैं किसी को नहीं मानता।

गांधी : मौलाना से बड़ा मुसलमान भी मैं किसी को नहीं मानता। पन्द्रह साल की उमर में जो कुरान के हाफिज बन गये थे। कुरान की आलोचना और टीका जिनकी दुनिया में इज्ज़त से देखी जाती हैं।

आजाद : पर उसका नतीजा तो कुछ नहीं हुआ। मैं कहूँगा इस्लाम ने इस मुल्क में जो कुछ किया वह सब मुल्क को काटकर मुसलमान मिटा रहे हैं। पीर और फकीर यहाँ जो कुछ कर गये, जिनकी दरगाहें मुल्क भर में फैली हैं। सूफ़ी और शायर जो कुछ कर गये, पठान और मुग़ल तवारीख़ में जो कुछ इस मुल्क में हुआ सबकी क़ब्र यह पाकिस्तान है। होते आज हज़रत मुहम्मद तो इन मुसलमानों के कारनामें को कुफ़ कहते।

गांधी : आप पर जो बीत रही है मौलाना! मैं समझ रहा हूँ। तबियत खराब हो जायगी।

आजाद : मेरी और आपकी उमर में बीस काल का फ़रक है।

गांधी : फिर भी आप मुझसे पहले कांग्रेस के सदर बने कुल···पैंतीस वर्ष की अवस्था में।

आजाद : जानता कि मुल्क कट कर दो टुकड़े हो जायेगा तो कभी इस पचड़े में न पड़ता। आप जानते हैं मेरे खून में इस मुल्क का खून दस फ़ीसदी से अधिक नहीं है। अकबर के दरबार में मेरे मूरिस अरब से आये थे; आज़ादी की पहली सन् सत्तावन वाली लड़ाई में जब दिल्ली फिर फिरंगी के हाथ में चली गई मेरा खान्दान इस मुल्क के बाहर चला गया···फिरंगी की गुलामी से बच निकलने के लिए मेरी अपनी पैदाइश मक्के में हुई। यहाँ लौटने पर कलकत्ते में अंग्रेजों की नई तालीम मुझे मिली होती, मगर मेरे लोग-बाग इस तालीम से नफ़रत

करते थे। क़ुरान के हाफ़िज़ को इस तालीम से क्या लेना देना था अंग्रेज़ी तालीम लिये होता तो मैं भी आज जिना के साथ होता। सैयद अहमद का झण्डा उड़ाये होता।

गांधी : अब कोई दूसरी बात करें मौलाना।

आज़ाद : इस्लाम में मेरी ईमानदारी आप जानते हैं। तीस साल के साथ में आपकी परारथना में दिल से कभी शामिल नहीं हुआ। कुरान की आयतें भी आप वहाँ सुनते हैं पर गीता सुनना मेरी इस्लामी रूह नहीं क़बूल करती। अपने धरम की परवाह न कर आप मेरे साथ बैठकर खाना खा लेते हैं।

गांधी : **(खुलकर हँसते हैं)** मेरा धर्म खान-पान के बहुत ऊपर है मौलाना! दुनियाँ में जितने धर्म हैं मेरा धर्म सब का आदर करता है। दुनियाँ के सभी धर्मों में यह पुराना है। पर अपने प्रचार के लिये एक बूंद खून इसने कभी नहीं बहाया। कुछ काम मुझसे भी हो गये हैं अपने धर्म के विचार से। इस समय कहना ठीक न होगा।

आज़ाद : बात क्या है?

ंधी : कहीं आपको···

आज़ाद : कहें भी, मैं ऐसा छुई मुई नहीं हूँ। पैग़म्बर और काबा के खिलाफ़ तो आप कुछ कहेंगे नहीं। कुरान और गीता आप के लिए बराबर हैं।

गांधी : जी नहीं गीता तो मेरी है। क़ुरान की आयत की मैं इज्ज़त करता हूँ पर उसे माँ नहीं बना सकता।

आज़ाद : अपनी माँ की बराबरी कोई किसी दूसरी को नहीं देता।

गांधी : बार बार मुझसे कहा गया मैं ताजमहल देखने नहीं गया।

आज़ाद : वाह! आपके साथ तब मैं भी आगरे में था। कई दिन आपसे ताज देखने को इस जमाने के शौकीन दोस्तों ने कहा पर आप नहीं गये।

गांधी : जी ! ताज बनवा कर अपनी मरी प्यारी को शाहजहाँ ने अमर बनाना चाहा। जैसे उसे उसने जितना प्रेम किया उससे कम और लोग अपनी पत्नी से करते हैं। उसने जितना प्यार किया होगा...उससे कम मैंने बा को प्रेम कभी नहीं किया। मैं तो उसके साथ देह का नाता तोड़कर आत्मा के नाते में बँधा रहा। आगरे का ताज और मिस्र के पिरेमिड मृत्यु की पूजा हैं। मौत से हार जाना है मौलाना यह। हमारे धर्म में तो मृत्यु को जीत लेने की बात है। काल के मस्तक पर चरण रख कर चलने वाले हम हैं। यही शरीर हमारा अन्त नहीं है। हम अनेक बार जन्म लेते और मरते हैं। हर बार के मरने पर ताज जैसे गुम्बद की बात कौन कहे...कब्र भी साढ़े तीन हाथ की चले तो (**हँसकर**) हमारे जितने खेत हैं एक दिन सब कब्रगाह बन जायेंगे। मरे धरती घेरे रहेंगे और जो जन्म लेंगे उनके लिये बसने और खेती करने की धरती नहीं बचेगी।

आजाद : उनके लिये धरती नहीं बचेगी ? यह कहकर तो आप खौफ़ पैदा कर रहे हैं।

गांधी : हाँ मौलाना ! इस पर मैं सोचता रहा हूँ। हमारे धर्म की यह बात दुनियाँ के मान लेने की है...कि जो मर गये आने वालों पर दया करें और अपनी कब्र के लिये धरती न घेरें।

आजाद पटेल और नरेन्द्रदेव देर तक हँसते रहते हैं।

गांधी : बा के मरने के बाद उसकी वस्तुओं को रखने के लिये कुछ संग्रहालय वालों ने मुझसे कहा। मैंने कह दिया यह तो छोटे पैमाने पर आगरे के ताजमहल जैसी मृत्यु की पूजा हो जायेगी। लोग मरते चलें और उनकी चीजें संग्रहालय में रक्खी जायँ। कितने संग्रहालय बनेंगे ?

आज़ाद : अच्छी बात यही बहुत है। अपने मजहब के कारण आपने ताज नहीं देखा और क्या किया ऐसा ?

गांधी : याद करें तो कितनी बातें निकलेंगी। एक और सुन लें।

आज़ाद : एक ही सही···

गांधी : दिल्ली कुतुब पर जब चढ़ने लगा·· दिखाने वाला कुतुब की पुरानी बातें जानने वाला था। तीन सीढ़ी मैं चढ़ चुका था। उसने कहा·· दायाँ हाथ नीचे झुका कर बड़े अदब के साथ;— "हुजूर इसमें जितने पत्थर लगे हैं सब बुत के पत्थर हैं,"··· नींव से लेकर हुजूर, ऊपर तक, जिस जीने से आप चल रहे हैं एक-एक पत्थर बुत का है।" लगा नीचे धरती हिल रही है ···साँस रुकने लगी हो ऐसा कष्ट मुझे हुआ। मैं तीन सीढ़ी ऊपर से नीचे कूद पड़ा और नीचे दोनों हाथों पर देह सँभाल कर बैठ गया।

आज़ाद : इतनी तकलीफ हुई आपको उसकी बात सुनकर ?

गांधी : उस समय जो बीती कहना कठिन है मौलाना ! मेरे पितर जैसे मुझे सब ओर से घेर धिक्कार दे रहे हों···कह रहे हों जिन मूर्तियों पर करोड़ों नर-नारी अक्षत फूल चढ़ाकर गंगा, यमुना के जल के साथ भाव के आँसू भी चढ़ा चुके हैं उन्हीं पर तू पैर रख कर चल रहा है। आप मानें न मानें मेरे प्राण में जैसे ग्लानि की अग्नि धधक उठी। मैं किसी प्रकार बाहर आया। दूर दूब पर बैठकर अपनी करनी पर पछताता रहा। जहाँ तक याद है कई बार आँसू पोंछने पड़े थे।

आज़ाद : इस बात के कहने में जब आपकी आँखें भर आईं, तब तो आप जरूर रोए होंगे। औरंगाबाद में औरंगजेब की क़ब्र देखी है ?

गांधी : नहीं, कैसी है ?

आज़ाद : वह क़ब्र ऊपर से सिर्फ़ मिट्टी की है। फूल का एक पौदा उस

पर बराबर मौसिम के हिसाब से लगा रहता है। ताजमहल जैसी इमारत क़ब्र पर करोड़ों का खर्च, इस्लाम कबूल नहीं करता। क्या वजह है कि इस्लामी मुल्कों में ऐसी इमारत क़ब्र को लेकर कहीं नहीं बनी ? मैं तो सब घूम कर देख चुका हूँ।···

पटेल : बेगारी बनवाना था इस मुल्क से धन खींचकर···

आज़ाद : शाहजहाँ ने बेगारी ली होगी यह बात मैं नहीं मानता। अकबर ने क़िले बनवाये, जहाँगीर ने कश्मीर में निशात बनवाया। शाहजहाँ ने ताज बनवा दिया। अमीरी का शौक कहेंगे इसे। बा ने मुझे याद नहीं किया था।

गांधी : सबको···एक एक कर आप सब को। मरने के तीन दिन पहले से ही कहने लगी अब किसी से भेंट न होगी ?

आज़ाद : एक दिन हम सब उसी राह लगेंगे। आगा खाँ का वह महल तो लेना ही होगा जहाँ बा और देसाई दोनों गये।

गांधी : क्या कोई कानून बनाकर···नहीं यह ठीक न होगा।

आज़ाद ; इसकी ज़रूरत नहीं पड़ेगी। वे उसे अपनी खुशी से दे देंगे।

गांधी : संगमर्मर···की···दोनों के जलाने की जगह पर समाधि तो उनकी ओर से बन चुकी है।

आज़ाद : इसके लिये मैंने उन्हें लिखा था।

पटेल : अहमदनगर से जब हम कार्यकारिणी के सदस्य एक साथ छूटे थे···

आज़ाद : ऐसे भरे गले से सरदार क्यों कह रहे हो ? तब क्या हुआ ?

पटेल : (**गांधी की ओर संकेत करके**) मैं मिलने गया। देश में सब ओर अँधेरा छाया था। "भारत छोड़ो" प्रस्ताव के बाद भी अंग्रेज नहीं हटे, अब आगे क्या करना है उस समय पहली बात बा की हुई थी।

गांधी : मौलाना ! सरदार के देखते ही मैं रो पड़ा था। यह सरदार

हैं मेरी कमजोरी छिपा रहे हैं। पर मैं तो कुछ भी छिपाकर जी नहीं सकता। चाहता था साठ साल जो साथ रही, जो मेरी साँस में बसी रही उसका सब कुछ कहकर प्राण हल्का कर लूँ पर मैं कुछ भी नहीं कह सका।

नरेन्द्रदेव : वह सब कहा नहीं जा सकता बापू ! हृदय में जो जितना चलता है इस अवसर पर कोई कह पाता···

गांधी : तब तो ब्रह्म अपनी माया का सब कुछ कह देता क्यों ?

नरेन्द्रदेव : सृष्टि का जो कुछ भी ज्ञान हमें हैं सब माया का कहा है। ब्रह्म को माया के दर्पण में देखा गया है।

गांधी : हा···हा···हा···तक कहो कि तुम पूरे वैष्णव बन रहे हो। राधिका के दर्पण में कृष्ण की झाँकी ले रहे हो।

नरेन्द्रदेव : दूसरा कोई चारा नहीं है। तर्क और बुद्धि दूर तक साथ नहीं देती। जीवन का भार बुद्धि से नहीं चलता, यह तो हमारा हृदय···उसमें उगने वाले भाव हैं जो उस आज तक ढोते चले जा रहे हैं।

आज़ाद : यह सब मेरे लिये हिब्रू हो रहा है। कैसा बरहम और कैसी माया ?

पटेल, नरेन्द्रदेव की हँसी।

गांधी : संसार में जितने पुरुष हैं सभी ब्रह्म हैं और जितनी स्त्रियाँ हैं सभी माया हैं, यह हमारे धर्म की बात है मौलाना ! धर्म से जो पति-पत्नी बने उनमें पुरुष-ब्रह्म और पत्नी माया कही गई। ब्रह्म के साथ जब माया मिली (**सब ओर हाथ घुमाकर**) यह समूची सृष्टि बन गई। पुरुष के साथ जब पत्नी मिलती है, सन्तान पैदा होती है, सृष्टि आगे बढ़ती हैं। पति पत्नी का भौतिक प्रेम भी हमारे यहाँ आध्यात्मिक है।

आज़ाद : मुझे यहाँ बैठाकर आप लोग अपने वेद, सास्तर की बात न करें, इन्सान को आप लोग खुदा बना रहे हैं, अनलहक···

आपके मज़हब की यही बात लेकर सूफियों में चला।

गांधी : मौलाना ! हमारे यहाँ कुफ्र कुछ नहीं है··· आपके यहाँ कुफ्र न होता तो सूफी न पैदा होते।

आज़ाद : छोड़ दिया जाता इन्सान को जैसे चाहता चलता तब तो सभी दोज़ख में जाते। आप लोग अब यह बात तो यहीं बंद कर दें नहीं मुझे उठ जाना पड़ेगा। बा की बातें मैं सुनना चाहता हूँ। जिस दिन सरदार आपसे मिलने गये रात होते मैं भी पहुँचा था। आगे क्या करना है यही सब होता रहा बा की एक बात न चली। पर बिना बा के वह जगह मुझे काटने को दौड़ रही थी। लगता था बा हँसती हुई कहीं से निकल आती हैं। मुझे तो ऐसा लग रहा है वह न मरी होती तो मुल्क न बंटा होता !

गांधी : मेरे मन की बात कह गये आप मौलाना ! मुझे भी ऐसा ही लगता है। उसके चले जाने से मेरी शक्ति चली गई। आप जो देख रहे हैं मैं नहीं हूँ···मेरी छाया है यह···मेरा भूत है जिसमें प्राण अब नहीं है। जो कुछ मुझसे बना उसके बनाने से, अब मुझसे बनने को कुछ नहीं है मौलाना ! मैं अब संन्यास लूँ···नहीं तो यह देश पता नहीं अभी क्या-क्या देखेगा ?

कण्ठ भर आता है देह काँप उठती है।

आज़ाद : तो करना क्या है, हम दोनों साथ ही फकीर बनें। इस मुल्क में हिन्दू और मुसलमान फकीर पहले भी साथ रह चुके हैं। हिन्दू फकीर के चेले मुसलमान बने हैं और मुसलमान फ़कीर के चेले हिन्दू। जो मुसलमान काबा में पैदा हुआ उसे क्या आपने चेला नहीं बना लिया ?

सब ठठाकर हँस पड़ते हैं। सरोजिनी नायडू का प्रवेश।

सरोजिनी : अपनी मण्डली में पुरुष कपड़े फेंक कर हँसते हैं पर जो

कहीं एक स्त्री पहुँच जाय तो जैसे संसार का संकट उन पर टूट पड़ता है।

आज़ाद : बात यह है कि सयाने बेटे माँ के सामने दिल खोलकर हँसने में डरते हैं। माँ कहने लगेगी औरत का रंग चढ़ गया बेटे पर···अब वह माँ से नहीं डरता।

फिर सब हँसते रहते हैं।

सरोजिनी : जो बात हो रही थी···वही जो न चली तो मैं समझूँगी इस कलियुग में बेटे माँ से छिपकर चोरी करने लगे हैं।

गांधी : और कब बेटे माँ से छिपकर चोरी नहीं करते थे? आज हम लोग जिसे चोरी कहते हैं वह हो सकता है पहले चोरी न रही हो। कृष्ण अपने घर में चोरी से माखन खाते रहे, दूसरों घरों में भी उनका यही काम रहा!

सरोजिनी : इस देश में माताएँ मक्खन की मटकी ऐसी जगह रख देती थीं कि उनके घर में जो बालक आये जिस किसी पड़ोसी के घर का···उसमें से अपने हाथ से निकाल कर मक्खन खा ले। जिस मटकी का मक्खन संध्या तक समाप्त नहीं हो जाता था उसकी बात पड़ोस में चलती थी कि उस घर की माँ का मक्खन अच्छा नहीं बना नहीं तो लड़के खा गये होते। मैं तो कहूँगी देश भर में सब घर में यही बात थी। वही बालक बड़े होकर महाभारत के युद्ध में अर्जुन बने, भीम बने, कर्ण बने। बापू ने एक बार···आप लोग जब अहमदनगर से छूट कर इनसे मिलने गये, सरदार! स्मरण करो, इन्होंने कहा था इस देश में साम्यवाद के प्रमाण भी पहले मिलते हैं। प्रमाण यह नहीं दे पाये। सभी बालक सभी घरों में अपनी इच्छा से मक्खन खाते थे यह हमारे पूर्वजों के साम्यवाद का प्रमाण है। रूस में अभी यह सम्भव नहीं हो सका है।

गांधी : वह प्रमाण तो अब मुझे भी मिल गया है। अंतर इतना ही

है कि उनमें अहिंसा प्रधान है। धन का मोह स्वयं छोड़ने को कहा है। अपनी स्वाभाविक आवश्यकता से अधिक संग्रह उसमें भी चोरी कहा गया है।

नरेन्द्रदेव : किस ग्रन्थ में यह बात है बापू! मार्क्स ने भी पूंजी संग्रह को चोरी कहा था।

गांधी : **(नरेन्द्रदेव को मुस्करा कर देखते हुये)** यह बात तुम्हारे काम की है। इस देश में यदि कोई एक ग्रन्थ चुन लेने को कहा जाय तो तुम भी उसे ही चुनोगे। वेद ग्रन्थ नहीं हैं, उपनिषद् भी ग्रन्थ नहीं हैं। रामायण और महाभारत काव्य हैं।

सरोजिनी : इसका अर्थ कि साहित्य सब छोड़ देना पड़ेगा।

गांधी : इस देश के ग्रन्थों का मुकुट भागवत है···

सरोजिनी : श्रीमद्भागवत!

गांधी : हाँ, बिना श्रीमत् लगाये जो मैं सीधा नाम ले गया इसका दोष तो मुझे लगा। हमारे यहाँ विद्वानों की परीक्षा इस एक ग्रन्थ में होती है मौलाना! इस ग्रंथ का पण्डित इस देश की सारी विद्या का पण्डित माना जाता है।

नरेन्द्रदेव : आप वह श्लोक कहें।

गांधी : श्लोक या अनुवाद।

मौलाना की ओर देखते हैं।

आज़ाद : श्लोक सुनने से मेरा मजहब नहीं बिगड़ जायेगा। दाराशिकोह ने हिन्दू मजहब की जिन किताबों का फारसी तर्जुमा कराया था वे अब भी वहाँ ईरान में पढ़ी जाती हैं। अल् अज़हर में कुछ हिस्सा मैंने भी पढ़ा था।

गांधी : श्लोक सुनाकर अनुवाद मैं आपके लिये कर दूंगा। **(सबकी ओर आँख घुमाकर)** जहाँ तक स्मरण है यह नारद की वाणी है। भगवान श्रीकृष्ण के मुख से गीता के श्लोक जैसे निकले

कहे जाते हैं।

पटेल : अब आप बिना किसी प्रस्तावना के वह श्लोक कह दें। भाष्य पीछे होता रहेगा।

गांधी : (**श्रद्धा की मुद्रा में**)

"यावद् भ्रियेत जठरं तावत् स्वत्वं हि देहिनाम्।
अधिकं योऽभिमन्येत सस्तेनो दण्डमर्हति ॥

नरेन्द्रदेव : तब तो मार्क्स का मौलिक बनने का दावा मिट गया। वाह ! चित्त प्रसन्न हो गया इसे सुनकर···

आज़ाद : तर्जुमा तो पहले हो जाय। या मुझे काठ का उल्लू बनकर ऐसे ही बैठा रहना होगा।

गांधी : जी···(**हाथ से अपना पेट ठोंककर**) जितने में पेट भर जाय उतना तो सभी देह वालों का स्वत्व, जन्म के साथ मिला अधिकार है, इससे अधिक जो अपना अधिकार मानता है वह चोर है उसका दण्ड होना चाहिये। क्यों आचार्य ! स्वत्व को जन्मजात अधिकार कहा जायेगा न ?

नरेन्द्रदेव : जी···दूसरा कोई अर्थ स्वत्व का हो नहीं सकता।

सरोजिनी : दर्शन में कदाचित दूसरा अर्थ भी हो पर यहाँ तो यही ठीक बैठता है।

आज़ाद : ऐसी बात आपके मजहब में भी···आप लोग भी मानते हैं। पैगम्बर ने ठीक ऐसी ही बात कही है।

पटेल : जी सभी धर्म एक ही जगह पहुँचते हैं। इस्लाम में तो सूद लेना बड़ा गुनाह है इसीलिये आप अपने नाम से बैंक में कभी कुछ नहीं रखते।

आज़ाद : कारू का खजाना मैं पा जाऊँ तो एक दिन में बाँट दूँ। आपके यहाँ सबसे ज्यादा दौलत किसके पास कही गई है ?

नरेन्द्रदेव : कुबेर के पास···

सरोजिनी : (**अपने आगे दोनों हाथों का घेरा बनाकर**) मौलाना !

चित्रों और मूर्तियों में उनका पेट इससे भी अधिक फूला मिलता है।

सब हँस पड़ते हैं।

आजाद : आज के सेठों जैसा···मतलब कि हिन्दू मजहब की बातें आज की दुनियाँ में भी मिल जाती हैं।

पटेल : जो दुनियाँ में नहीं मिलता वह हमारे धर्म में भी नहीं मिलता मौलाना। बापू कहते हैं कि जो हमारा भौतिक है वही हमारा आध्यात्मिक भी है।

आजाद : क्या मतलब···

गांधी : (**नरेन्द्रदेव से**) तुम तो फारसी और अरबी भी जानते हो!

नरेन्द्रदेव : (**घबड़ाकर**) जी इस समय आध्यात्मिक के लिये कोई शब्द फारसी का नहीं उठता।

गांधी : भाव का ठीक बोध हो तो शब्द न मिलने से काम नहीं रुकता। दुनियाँ की सभी बातें भौतिकता के भीतर आ जायेंगी मौलाना! और जितना रूहानी है सब आध्यात्मिक कहा जायेगा।

आजाद : मतलब यह कि बुराई न होने पाये इसके लिये रूह बराबर नकेल खींचे रहती है। ऐसी बात इस्लाम में भी है फिर भी मुल्क के टुकड़े हो रहे हैं।

पटेल : जी···टुकड़े करने वालों में आप जैसा कुरान का हाफ़िज़ एक भी नहीं है। जिना साहब को एक भी आयत याद न होगी। नमाज़ की ज़रूरत भी उनको नहीं है।

आजाद : चुप रहो सरदार! न कहो कुछ। पाकिस्तान के नाम पर इस्लाम की कब्र बनाई जा रही है। वे लोग बना रहे हैं जो तौर तरीके में पूरे अंग्रेज़ हैं, जिनकी देह में दस फीसदी भी अरब या फ़ारस का खून नहीं है, जो इस मुल्क की धरती की धूल में पले हैं।

गांधी : मौलाना ! नवाबी घराने के लड़कों की देह में धूल नहीं लग पाती ।

आज़ाद : ओ ! हो ! (**उत्साह में**) अब मेरी आँखें खुलीं । ठीक कह गये । जिना, लियाकत की देह में यकीनन इस धरती की धूल न लगी होगी । रईसज़ादे क्या जानें मिट्टी की महक कैसी होती है । लगी होती वह धूल और मिली होती वह महक, तब मुल्क के टुकड़े नहीं होते । बंगाल का नब्बे फीसदी गरीब मुसलमान यह नहीं चाहता, पंजाब की भी यही हालत है । चाहता होता मुल्क का गरीब मुसलमान तब तो लीग की हुकूमत कम-से-कम बंगाल और पंजाब में कायम हुई होती । कहीं भी लीग मिनिस्ट्री नहीं बन पाई, पैंतीस वाले कानून से । इस बात का यही सबसे बड़ा सबूत है ।

गांधी : मैं बराबर कहता आया हूँ मौलाना ! हम सब किसी के हाथ की कठपुतली हैं ।

आज़ाद : जैसे नचाता है नाचते हैं···पर इससे तसल्ली जो नहीं होती । क्या इस मुल्क में या दुनिया में कभी ईमानदार मुसलमान पैदा नहीं होंगे ? क्या कहेंगे वे ? हमारी आज की तवारीख जब उनके सामने खुलेगी । चीन में, रूस में, मुसलमान अपने लिये अलग मुल्क नहीं बनाते···बनाते हैं तो इसी बदकिस्मत हिन्दुस्तान में ।

गांधी : यह हिन्दुस्तान नाम भी कभी ईरान वालों ने हमारे देश को दे दिया । हमारा दिया नाम भी यह नहीं है, फिर भी हम इसे अपने सिर पर लेकर चलते रहे हैं ।

आज़ाद : यह कौमी मसला आपने तभी अंग्रेज गवर्नर पर छोड़ देने को कहा था । आपकी बात मैंने नहीं मानी, हमारे किसी साथी ने नहीं मानी । अंग्रेज अब कौमी फूट और मुल्क के कटने के गुनाहगार नहीं रहे···आ गया यह गुनाह हमारे सिर। आप

तभी अड़ क्यों नहीं गये ?

गांधी : (**हँसकर**) अड़ जाना तो तानाशाह बनना होता मौलाना ! मैं कैसे मान लेता कि आप दस जो बात कह रहे हैं वह ठीक नहीं है और मुझ अकेले की बात ठीक है।

पटेल : विलायत के पत्रों ने जब एक साथ लिखा कि कौमी मसला अपने हाथ में लेकर कांग्रेस भूल कर गई तभी यह बात खुल गई कि आपका कहना ठीक था और हम सब भूल कर गये।

गांधी : भगवान ने वह भूल करा दी। उसकी इच्छा यही थी। यह मान लेने पर आज जो आग हमारे भीतर लगी है वह बुझ जायेगी।

आजाद : बा की बात करें। उनकी बातें सुनकर हम उन्हें अपने नजदीक पायेंगे।

गांधी : क्या कहूँ क्या न कहूँ ? एक-एक साँस जिसकी कान में गूंज रही है, एक-एक शब्द जिसका कण्ठ में नाच रहा है।

आजाद : आपके दिल से उनकी जिन बातों का असर अब भी न मिटा हो।

गांधी : मुझे कष्ट होगा। आँख से पानी चला तो आप कहेंगे यह बूढ़ा औरत के लिये रो रहा है।

आजाद : अपनी औरत के लिये मर्द कभी बूढ़ा नहीं होता और मर्द के लिये अपनी औरत भी कभी बूढ़ी नहीं होती। इन्सान के दिल के इस वसूल में दिमाग लाचार हो जाता है।

सरोजिनी : तब मौलाना भी शायर हैं। इमाम की गद्दी पर बैठकर भी यह दिल की शायरी लिखते।

आजाद : इसीलिये तो नहीं बना'''मुहब्बत का मारा इन्साफ के दिन भी वही खुराक चाहेगा।

सब हँस पड़ते है।

सरोजिनी : आपकी बीबी जवानी में मरी थीं मौलाना ! बापू की तो

बुढ़ापे में मरी हैं : इस मामले में तो इनसे बड़े फकीर आप हैं ।

गांधी : मैं यह कई बार कह चुका हूँ। बा से भी मैंने कई बार कहा था ।

आज़ाद : बा से भी कहा था ? औरत के चले जाने से मर्द निकम्मा हो जाता है इतनी बात तो आपकी मैं मानता हूँ।

गांधी : इतना ही नहीं मौलाना ! पत्नी का चला जाना पुरुष की शक्ति का चला जाना होता है ।

आज़ाद : इसका मतलब कि मैं मुर्दा हूँ और आप भी···

गांधी : जी हम दोनों···हमारे जैसे जितने लोग होंगे सभी । हमारे यहाँ तो कहते हैं शिव तभी तक शिव हैं जब तक उनके साथ शक्ति है···शक्ति के न रहने पर शिव शव हो जाता है । मरी देह को संस्कृत में शव कहते हैं । मैं जब बैरिस्टरी के लिये विलायत जाने लगा केवल एक बार उसने आँख उठाकर देखा, उन आँखों में कितना भय था, कितनी आशंका थी । उसकी आँख अपनी रूमाल से पोंछकर मुझे कहना पड़ा ···रोने से अशुभ होगा, हँसकर विदा करो नहीं तो यह यात्रा रुकती है । वह सारा दृश्य मेरे हृदय में अब भी उसी तरह चित्र के रंगों में रेखाओं में जैसे···उतरा रहा है ।

सरोजिनी : भाव में भर कर नहीं बापू ! अनासक्त वृत्ति की बात जो आप बार-बार कहते हैं उससे काम लें । यह सब केवल उपदेश के लिये नहीं होता ।

गांधी : चेष्टा करना भी मेरे वश की बात है । तुम्हें अधिकार है मेरी निन्दा करने का···उसका तुम्हें अधिकार है ।

सरोजिनी : हाय ! हाय ! क्या कह रहे हैं आप ?

गांधी : विलायत में उसकी स्मृति सब ओर से कवच की तरह मुझे घेरे रही । साथियों का उपहास-व्यंग्य सहकर मैं निरामिष-

भोजी बना रहा। इतना ही नहीं···इस देश के तरुण जैसे वहाँ विद्या नहीं मांसाहार सीखने के लिये गये थे।

आजाद : मतलब कि हिन्दुस्तानी साहब लोग जो वहाँ पढ़ने गये थे आप को गोश्त न खाते देखकर बेवकूफ समझते थे।

गांधी : पर माँ के सामने जब मांस न खाने का संकल्प मैं ले रहा था; बा वहीं सिकुड़ी खड़ी थी। मैं आप लोगों के सामने स्वीकार कर रहा हूँ। मेरा संकल्प उसके बल से निभ गया मेरे बल से नहीं। जिस दिन लन्दन पहुँचा···विक्टोरिया होटल में कुछ भी मेरे मुँह में डालने लायक नहीं था। एक कौर भी मुँह में कुछ न गया और तीन पौण्ड का बिल चुकाना पड़ा।

आजाद : तीन पौण्ड यह तो सीधी लूट है।

गांधी : दूसरे देशों पर अधिकार जमाना···जिनके निवासी भिन्न भाषा, भिन्न धर्म और भिन्न संस्कृति के हों यह भी तो लूट है। तीन दिन उसी होटल में खाने का तो सपना भी नहीं था बस बिल चुकानी पड़ी। न चुकाने में देश का सम्मान जायेगा···हर समय यही बात मेरे मन में चलती रही। पर खोजी को भगवान् मिलता है। वहाँ निरामिष भोजनालय भी मिल गये। कितनी पुस्तकें इसी विषय पर···बड़े डाक्टरों की लिखी इसी विषय पर मिल गईं। अब बा के सामने संकल्प की बात न रही, न यह रहा कि माँस न खाने से भारतवासी निर्बल हैं और माँसाहारियों के दास हैं। विदेशी वैज्ञानिकों ने ही आहार की पुस्तकों में सिद्ध कर दिया था कि इस देश के पूर्वजों की पद्धति ठीक थी।

आजाद : गोश्त खाने से कोई बहादुर होता तब तो पठान, सिक्ख और सभी मुसलमान अंग्रेजों के मुकाबले बड़ी बहादुरी दिखाये होते। पर तवारीख में तो वह बहादुरी कहीं नहीं है।

गांधी : जी...इतने ऊँचे तगड़े और चौड़े पठान, पंजाब के हिन्दू, सिक्ख, मुसलमाम, अंग्रेज को सामने देखते ही भीगी बिल्ली बन जाते थे।

नरेन्द्रदेव : आप लोग यह क्यों नहीं देखते कि सत्तावन वाली लड़ाई जिन जगहों में चली वहाँ माँस खाने वालों की संख्या बहुत कम है। माँस खाने वाले इस देश के वीर तो उस समय अंग्रेजी फौज में भरे थे।

गांधी : मौलाना ! आचार्य का कहना सही लगता है जिस देवी के यहाँ मैं ठहरा था। उसी पड़ोस में शाकाहारी क्लब की स्थापना मैंने की। संगठन और प्रचार का यह मेरा पहला कदम था। गीता के अनुवादक एडविन अर्नाल्ड इस गोष्ठी के उपाध्यक्ष और डा० ओल्डफील्ड इसके अध्यक्ष बने। मंत्री मुझे बनना पड़ा। इन सभी अवसरों पर बा की आँखें मुझसे दया नहीं अपना अधिकार माँगती थीं और इतनी दूर से मैं उसका अधिकार देता रहा। लौटने पर उसने जो बताया उससे पता चला कि कई बार स्वप्न में वह मेरे पीछे चल चुकी थी और मुझे अपने प्रति सच्चा भी पाया था।

सरोजिनी : तब तो इस देश के आप के साथी लोग और कुढ़े होंगे।

गांधी : उन पश्चिम की संस्कृति के भक्तों के सन्तोष के लिए अब मैं साज, सिंगार और कपड़ों में पूरा अंग्रेज···वह भी किसी रईस घराने का अंग्रेज तरुण बना। दस मिनट नियम से शीशे के सामने खड़े होकर सिर के बाल पर ब्रुश चलाता, नये ढंग के बढ़िया कपड़े बनवाये। भाई को लिखकर सोने की दुहरी चेन मँगाई। नृत्य कक्षा की फीस तीन पौण्ड, वायलिन सीखने की फीस तीन पौण्ड और शिक्षक का पुरस्कार अलग। रईस अंग्रेज लड़के जो कुछ करते थे वह सब। यह सारा नवाबी ठाट तीन महीने तक चला। अठारह वर्ष

की अवस्था में मेरा जो फोटो लिया गया जिसका नाम मैंने "भद्र अंग्रेज का अनुकरण" दिया है जिस में बस मेरे खरहे से कान भर पहचान में आते हैं।

सरोजिनी के साथ सभी लोग हंस पड़ते हैं।

पटेल : बैरिस्टरी परीक्षा आपने चुटकी बजाते मार ली।

गांधी : मुझे बैरिस्टर देखकर पत्नी आनन्द के समुद्र में हिलोरें लेगी। इसमें भी उसी की प्रेरणा...उसीका सन्तोष...मुझ से अनावश्यक परिश्रम करा गया। वहाँ तो चौबीस भोज में छः में भाग लेना ही वह परीक्षा पास कर लेने के लिये पूरा था। काले भारतवासी विलायत की गोरी सभ्यता सीखें उस पढ़ाई और परीक्षा का यही इतना उद्देश्य था। पर कोई काम अधूरा करना मेरे स्वभाव में नहीं है। रोमन लॉ मैं सीधे लैटिन में पढ़ गया। दक्षिण अफ्रीका में मेरा लैटिन जानना काम भी आ गया। वहाँ रोमन-डच लॉ का आधार जस्टीनियन था ही। ईसाई पादरी भी मेरी ओर आकर्षित हुये और स्मट्स को भी मेरे इस ज्ञान का विस्मय हुआ।

सरोजिनी : उन भोजों में आप क्या खाते थे ?

गांधी : परीक्षा देने में मुझे बड़ा सुख मिलता है देवी जी ! देवासुर संग्राम में मोहनी का आख्यान आप जानती होंगी।

सरोजिनी : जी, भगवान् ने मोहनी का रूप धारण कर असुरों को अपने रूप के सम्मोहन में डालकर देवों को अमृत पिला दिया।

गांधी : बस तो उन भोजों में मैं मोहिनी का अभिनय करता था।

आजाद : ऐं...क्या...आप औरत बन जाते थे ?

सब हंसते रहते हैं।

गांधी : औरत बन नहीं जाता था। उसका अभिनय भर करता था। हर मेज पर चार भावी बैरिस्टर बैठते थे। मेरे लिये हर मेज

पर एक जगह पहले ही से छोड़कर सब मेज वाले कोशिश करते थे कि मैं उन्हीं के साथ बैठूं। कभी-कभी मैं जान-बूझकर थोड़ी देर से आता था। सब ओर से आँखों के संकेत चलने लगते थे। कहीं हाथ उठा, कहीं गर्दन झुकी, कितने हाव, भाव और कटाक्ष होते थे।

आजाद : यह सब क्या होता है?

गांधी के साथ सभी ठठाकर हँसते हैं।

गांधी : मौलाना! अनुराग में···मुहब्बत में जो सब होता है आप नहीं जानते? यह सब उतना पुराना है जितनी पुरानी यह सृष्टि है। (**फिर सब हँसते हैं**) यही नहीं कि मैं मांस नहीं खाता था, शराब भी नहीं पीता था।

आजाद : तब···

गांधी : चार जन जो मेज़ पर बैठते थे उनके बीच दो बोतल शराब मिलती थी और ग्रैण्ड नाइट को क्या कहेंगे?

सरोजिनी : ऐं···हाँ···विशद रात्रि···

गांधी : इस देश में जो चाल नहीं है उसके लिये बनाये शब्द काम नहीं देते। विधि और व्यवहार प्रधान है। शब्द तब तक निराकार हैं जब तक कि वे किसी विधि या व्यवहार के बोधक न बनें। हाँ मौलाना, कुछ भोज बड़े पैमाने के होते थे···उस रात दो बोतल शराब के साथ शैम्पेन भी मिलती थी। मेरे न पीने के कारण मेरे हिस्से का यह पदार्थ भी शेष तीन बाँट कर पी जाते थे। समझे आप?

आजाद : कुछ···कुछ···

गांधी : सीधा हिसाब है जितने में चार पीते उतने तीन ही चट कर जाते थे। मारे शरारत के मैं दाँयें चल कर कितनों का मन बढ़ाकर बाँयें घूम जाता था। जिस किसी ने बाँह पकड़ ली मैं उसी मेज का बन गया। कभी बाँयें चल कर ऐसे ही

दाँयें घूम जाता था ।

आजाद : अठारह साल की उम्र एक बार पार हुई फिर तो जिन्दगी भर पछताना हाथ रहता है ।

गांधी : नदी जैसे चढ़कर उतर जाती है सब ओर कीचड़ और दल-दल छोड़कर···मौलाना ! हम दोनों के भीतर पानी कहीं नाम को है, नहीं तो हम दोनों बस कीचड़ और दलदल कहे जायेंगे ।

आजाद : जी नहीं बीस साल छोटा हूँ मैं आपसे···मेरे भीतर पानी अभी अधिक होगा ।

गांधी : होगा···है का पता जब आपको नहीं है···होगा से कितने दिन चलेंगे ?

सरोजिनी : बा की बात न कहनी पड़े । बापू इसीलिये इधर-उधर बहक रहे हैं ।

गांधी : इसीलिये वह चली गई । बिना पतवार की नाव कब ठीक सीधे चल सकी है ? पिता मर रहे थे और मैं उसके साथ था । विज्ञापन देकर पता लगाओ दूसरा उदाहरण इसका न मिलेगा । बाप मरता रहे और बेटा···उसकी पलंग के पास न रहकर पत्नी की पलँग पर रहे ।

सरोजिनी : आपके बड़े भाई थे···सारा घर था आप न रहे तो क्या हुआ ?

गांधी : देही अपने कर्मों की परिधि लेकर इस धरती पर आता है और जितने दिन रहता है उसी में घूमता रहता है···उससे बाहर निकलने की शक्ति वह कहाँ पाये ? जनक के अन्त समय में मैं उनके पास नहीं था । जननी मर गई तब मैं विदेश में था । माता के मरने की बात मुझसे छिपाई गई थी···कि सुन कर मैं बैरिस्टरी में असफल न हो जाऊँ । बम्बई जब बैरिस्टर बन कर जहाज से उतरा तब मुझसे उसके मरने

की बात कही गई। सभ्यता और शिक्षा के नाम पर जो कुछ हो रहा है सब अस्वाभाविक है, सब झूठ है।

नरेन्द्रदेव : कभी-कभी तो आप पश्चिम के बड़े-से-बड़े क्रान्तिकारी से भी आगे निकल जाते हैं।

गांधी : मनुष्य जन्म लेता है। बैरिस्टर बनने के लिये! जज-कलक्टर बनने के लिये! जीविका के जितने रास्ते निकले हैं ये सब अस्वाभाविक हैं। आत्मा का सुख सन्तोष कहीं है। अदालत में एक जज बैठे और पचास वकील उसे घेरे रहें···धरती से उनका कोई नाता है! वे भी पृथ्वीपुत्र हैं! इसका पता नहीं चलता।

पटेल : पृथ्वीपति होते हैं वे···पृथ्वीपुत्र बनने पर तो वे सब के बराबर बन जायेंगे। एक माता के सभी पुत्र समान अधिकार वाले होते हैं। विदेशी शासन यहाँ उन सबको पृथ्वीपति बनाता गया है जो उसके सहयोगी बन सके हैं।

गांधी : बड़ी बात कह गये सरदार! इतनी देर मौन का फल है यह तुम्हारा। मौन सबसे बड़ी तपस्या है।

सरोजिनी : हर सप्ताह में एक दिन आपका मौन बीतता है। सरदार भला दो-चार क्षण मौन रह गये तो बड़ी बात ले आये।

गांधी : मैं जब इस व्रत का प्रयोग करने लगा, बा बड़े कुतूहल में लुकछिप कर देखा करती थी। हर क्षण मेरे मौन में वह कुछ विस्मय देखना चाहती थी। हँसी आती थी मुझे उसकी चेष्टा देखकर। एक बार मैं मुस्करा पड़ा। कहने लगी, "लो तपस्या में लोग हँसते कहाँ हैं कैसा मौन है यह?"

आजाद : मरने के दो-चार दिन पहले से उनकी हालत कहें।

गांधी : बड़ा कठिन है मौलाना! उसके जीवन से दो चार दिन अलग करके नहीं देखे जा सकेंगे! महादेव की मृत्यु से वह डर गई। 'ब्राह्मण मरा बड़ा अशुभ होगा' कई बार कह गई। उसने तो

'महादेव के पास ही सो जाना है' कई बार यह भी कहा। मेरे पत्रों के उत्तर में वायसराय के जो पत्र आये उनमें क्या लिखा था यह वह बड़े चाव से सुनना चाहती थी। उसे बताने में कहीं थोड़ी देर हुई तो क्रोध में जलने लगती थी। पूरा पत्र सुनकर कहती थी बड़े झूठे हैं ये लोग। इस बार बापू की जान लेने पर सब तुले हुए हैं। ऐसी ही बातें···आगा खाँ महल में मेरा इक्कीस दिन का उपवास न चला होता तब तो वह पहले मर गई होती !

आजाद : पहले मर गई होती···ऐसा क्यों होता ?

गांधी : जब जब मैंने सत्य के नाम पर उपवास किया, उसके हाथ से फल का रस उसी की ओर देखकर मैं लेता रहा। हर बार उसकी आँखों में आनन्द का जल भरा रहता था। उपवास की अग्नि परीक्षा से मेरा बच निकलना वह अपने अनेक जन्मों के पुण्य का फल मानती थी।

सरोजिनी : ऐसा तो था ही, उनके पुण्य से ही तो आप बचते रहे। इस बार वाले उपवास में तो बम्बई के जेलों का इन्स्पेक्टर जनरल रो पड़ा था आपको देखकर।

गांधी : हाँः···हाँः···हाँः···सब लोगों को हटाकर उस भले आदमी ने मुझसे कहा···'अब आपकी उपवास की शक्ति समाप्त हो चुकी है' इतना कहकर सिसक कर रोने लगा। मैंने कहा चिन्ता न करें, मैं भगवान् के हाथों में हूँ। बाद में पता चला उसे ऐसा करने को सरकार की ओर से सिखाया गया था। उसके आँसू भी बनावटी थे। वावेल तो मुझे जापान का गुप्तचर और सहायक मानने लगा था। मेरे मर जाने में उसके साम्राज्य का संकट टल जाता। पर मरना-जीना मनुष्य के वश में नहीं, भगवान् के वश में है मौलाना ! बा तो चली गई। अब जो मुझे उपवास करना पड़ा तो किसके हाथ से

फल का रस लेकर उसे तोड़ूंगा ?

आज़ाद : अब आप ऐसा नहीं करने पायेंगे ! कभी नहीं···कभी नहीं यह बात सुनना भी गुनाह है।

गांधी : भगवान् का आदेश जब होगा···मेरी आत्मा जब कहेगी आप लोग कैसे उसे रोक लेंगे ? जिना मुझे हिन्दू जाति का प्रतिनिधि कहता है जैसे मुसलमान मेरे लिए पराये हैं। मुसलमान लीग के नहीं मेरे हैं···जब अवसर आयेगा, हिन्दू भी जब लीग की करतूत का बदला लेने लगेंगे, इधर के मुसलमानों से ···तब मैं जब कुछ न कर सकूँगा, उपवास करूँगा। इस बार भी मैं बच जाऊँगा कैसे कहूँ ? पर जो मुझे उपवास तोड़ना पड़ा, देश की पुकार उसके लिये हुई, लोगों का व्यवहार बदला तो आपके हाथ से इस बार मुझे फल का रस लेना है।

आजाद : घबड़ाकर ख़ुदा हाफिज़···ख़ुदा हाफिज···मुल्क का बटवारा हो गया और मेरे हाथ से शर्बत लेकर···आप कहीं मर गये ···दिल की हरकत रुक गई तब तो दोनों काम मेरे हाथ से हो जायेंगे। मुल्क का बटवारा और आपकी मौत···मेरे साये से भागेंगे लोग···

चुप होकर काँपने लगते हैं।

गांधी : मेरे भगवान् ने···मेरी आत्मा ने कहा है यह मौलाना ! इसमें मेरा कोई दोष नहीं है। मेरे मुँह से जब जो बात निकली है, होकर रही है।

रोजिनी : तब बा आपको बुला रही हैं। हाय ! हाय ! क्या कह गई ? भला कभी आपको वे बुलायेंगी ? जितने दिन आप इस धरती पर रहेंगे वे उस लोक में रानी बनी रहेंगी। देवांगनायें उनके भाग्य से डाह करेंगी।

गांधी : उस लोक में भी देवियाँ परस्पर डाह करती हैं ? उनका यह

स्वभाव वहाँ भी नहीं छूटता ?

सब हँसते हैं।

आजाद : औरत की बनावट सब कहीं एक ही है।

पटेल : मंच पर नारी उद्धार और अधिकार के प्रस्ताव और घर में एक दूसरी से डाह···

सरोजिनी : बहुत कह चुके सरदार ! पुरुष दूध के धोये है, वे आपस में डाह नहीं करते। इतने बड़े-बड़े युद्ध, इतना···नरसंहार कौन करता है ?

आजाद : दुनियाँ में जो बड़े से बड़े जंग हुए सबकी जड़ में औरत रही है। कहीं पढ़ा था मैंने।

सरोजिनी : कुरान में लिखा है मौलाना ? कुरान में भी ऐसी बात आई है ?

आजाद : जी आई है···

सरोजिनी : पैग़म्बर मर्द थे, उनकी जगह कोई औरत होती तो ठीक इसके उलटा लिखती।

गांधी : नारी शक्तिरूपिणी है···युद्ध की मूल शक्ति है यह तो सीधी बात है। युद्ध के मूल में ही नहीं सृष्टि के मूल में भी वही आदिशक्ति है। बिना उसके कहीं कोई सत्ता नहीं है।

सरोजिनी : ठीक है, जब तक बा आपकी शक्ति के रूप में रहीं आप सब करते गये। अब आपको उपवास का अधिकार नहीं है। अभी आपने कहा, आप शव हो चुके हैं। शव को उपवास करते किसने देखा है ?

गांधी : मेरी चले तो मैं कभी उपवास न करूँ। बा यह बात न समझ सकी। रौलट बिल के विरोध में क्या करना है, रात भर मैं जागकर सोचता रहा। सबेरे आँख लगी। बा मेरी बेचैनी देख रही थी। अभी मुझे नींद आई कि नहीं यह देखने के लिये झुककर उसने कान मेरी नाक के पास किया, मैं चौंक कर जाग गया। उसकी कातर मुद्रा को देखते ही जैसे मेरे अंगों

को बिजली छू गई, मेरे जन्म-जन्म का पौरुष जैसे जाग उठा हो। यन्त्र से जैसे शब्द निकले हों। मेरे मुख से निकल गया 'डरो मत' रात भर सोचने से जो नहीं मिला तुम्हारी इस दशा के देखते ही मिल गया।

सरोजिनी : और वह मिला क्या था ?

गांधी : रौलट बिल के विरोध का मार्ग। इस संकट में देश की आँखें मेरी ओर लगी हैं...चुप बैठे रहना लोक के साथ विश्वास-घात होगा। बा की असहाय दशा जन्मभूमि की असहाय दशा की पूरक बन गई। घने काले बादल में जैसे बिजली चमकी...सूझ गया हमारे पास कोई शस्त्र नहीं तो भी शोक मनाने से कौन रोक देगा। इस काले कानून के विरोध में एक दिन देश शोक मनाये।

नरेन्द्रदेव : एक दिन की वह हड़ताल हमारे स्वतन्त्रता संग्राम की शंख-ध्वनि बन गई।

गांधी : मेरे पंजाब जाने पर जो सरकारी रोक न लगी होती, गाड़ी में ही पकड़ कर जो मैं बम्बई न लाया गया होता तो अह-मदाबाद में उस थानेदार की हत्या न हुई होती। इस घटना से मैंने आन्दोलन रोक दिया। देश भर में सत्याग्रह की बाढ़ का अकस्मात् रुकना लोगों के उत्साह और उमंग का रुकना हुआ। सत्याग्रह रोक कर जो मैं उपवास की घोषणा न करता तो पता नहीं देश के कितने तरुण सरकारी बन्दूकों के शिकार बनते।

पटेल : आप उधर उपवास की घोषणा कर रहे थे, इधर सरकार ने मुनादी कराकर जलियाँवाला बाँग में भीड़ इकट्ठी की और डायर ने बाग के फाटक पर पचास सैनिकों से गोली की वर्षा उस भीड़ में कराई जिसमें पुरुषों से अधिक संख्या बालकों और स्त्रियों की थी।

नरेन्द्रदेव : मरने वाले बाहर सौ और घायल छत्तीस सौ थे ।

आजाद : जो बातें तवारीख की बन गईं···हम सब जानते हैं···जो पैदा होंगे वे भी जानेंगे, उनमें वक्त न बिताकर फिर कहता हूँ आप बा की बात करें ।

गांधी : तो फिर सुनें···सेठ अब्दुल्ला के मुकदमे में पहली बार नेटाल जाना पड़ा । उस मुकदमे में मैंने सन्धि करा दी । वकील का काम मुकदमा लड़ाना नहीं ! दक्षिण अफ्रीका की बीस वर्ष की वकालत में बराबर सन्धि कराता गया । पत्नी और बच्चों को ले जाने के लिये मैं भारत आया ।

पटेल : और यहाँ वह हरी पुस्तिका बँटी जिसमें प्रवासी भारतीयों की दुर्दशा का चित्र था । दस हजार प्रतियाँ बँटी थीं । बड़े नगरों में इस विषय पर सभायें हुई ।

गांधी : यहाँ के समाचार लन्दन के पत्रों में छपे, वहाँ से नेटाल पहुँच गये । नेटाल के गोरे मेरे साथ बदला लेने के लिये मेरी राह देखने लगे । स्टीमर डरबन पहुँचा पर बम्बई में प्लेग का बहाना बनाकर समुद्र में ही रोक दिया गया । मुझे बताया गया कि मेरा परिवार के साथ उतरना प्राण को संकट में डालना है । गोरे चिढ़े हैं कुछ भी कर देंगे । इस भय से लौट आना मुझे देश के धर्म का अपमान लगा । अभय रहने के मन्त्र का दर्शन सबसे पहले इसी देश में हुआ और उन्हीं पूर्वजों की सन्तान मैं भय से अपने भाइयों को दुर्दशा में छोड़ दूँ ? मैं उतरने के लिये हठ कर गया । बच्चों के साथ बा पहले उतरी, मुझे अकेले छोड़कर जाना नहीं चाहती थी··· देह काँप रही थी आँखें भर आई थीं । अनेक चित्र उसके मेरी स्मृति में हैं पर यह सबसे अधिक प्रभावकारी है । किसी प्रकार उतरी और सुरक्षित बच्चों के साथ भारतीय कांग्रेस के एक मित्र के यहाँ पहुँच भी गई ।

पटेल : साथ उतरने पर तो जो आप पर बीती वही बा पर भी बीती होती, बच्चे तो पता नहीं···

गांधी : जहाँ कोई रक्षा नहीं वहाँ भगवान रक्षा करता है सरदार ! उसकी कृपा से ही वे सब पहले चले गये। मेरे उतरते ही गोरे बच्चों ने 'गांधी गांधी' का शोर मचाया। गोरों ने जुट कर मुझ पर कैसा आक्रमण किया ! ईंट, पत्थर, सड़े अण्डे; मेरी मूर्च्छा, अंग्रेज कप्तान की स्त्री का मेरे आगे छाता खोलकर खड़ा हो जाना, पुलिस द्वारा रुस्तम जी के घर पहुँचाया जाना यह सब आप लोग जानते हैं। रुस्तम जी के घर पर भी गोरों ने कैसा घेरा डाला, पुलिस कप्तान भारतीय सिपाही के वेश में मुझे कैसे थाने पर पहुँचाने में सफल हुआ और फिर उस घर की तलाशी लेकर ही गोरे वहाँ से हटे, यह सारी घटना आप लोग जानते हैं। मैं इधर पुलिस की रक्षा में था उधर बा अन्न-जल छोड़कर भगवान् का नाम जपती रही। देवी-देवताओं की मनौती मानती रही।

सरोजिनी : बा ने मुझे बताया था गोरों का उपद्रव जब शान्त हुआ··· तीसरे दिन आपकी उनसे भेंट हुई।

गांधी : संगमर्मर-सी सफेद हो गई थी। देह का सारा रक्त जैसे उस का सूख गया था। मेरे पैर पर गिर कर कहने लगी, अब कभी अकेले न छोड़ेगी। क्षण भर के लिये उसे मूर्च्छा आ गई थी। वहीं बैठकर मैंने उसे हाथों में पकड़ लिया था। मेरे कन्धे पर सिर रख कर जब भर पेट रो चुकी तब कहीं शान्त हुई। पर इस घटना के बाद फिर कभी वह ऐसी डरी नहीं। जो भोगना पड़ा सब भोगती गई।

पटेल : आपसे पहले वे जेल भी गईं। वह भी इस देश में नहीं वहीं दक्षिण अफ्रीका में।

गांधी : मुझ पर जो आक्रमण हुआ उसकी सूचना भारत और इंग-

लैण्ड के पत्रों में छपी। उपनिवेश सचिव चेम्बरलेन ने तार से अपराधियों पर मुकदमा चलाने का आदेश दिया। मैंने किसी पर मुकदमा न चलने दिया। मेरे इस आचरण से गोरे लज्जित हुए। संसार ने जाना कि यह क्षमा मोहनदास गांधी की थी पर इसके मूल में भी बा थी। डरबन में समुद्र के किनारे घूमते समय उसके पास कुछ गोरों की स्त्रियाँ आई थीं, उससे क्षमा माँगने और मुकदमा रोकने के लिये प्रार्थना करने। उनको उसने इसके लिये वचन दिया। मुझसे जब उसने मुकदमा न चलाने को कहा मुझे विश्वास नहीं होता था कि बा में उनके लिये दया कहाँ से आई जो उसे विधवा बना चुके थे। पति के मरने पर जो दूसरा पुरुष कर लेती हैं उन गोरी स्त्रियों पर बा की दया···जिसके लिये पति एक ही जन्म का नहीं जन्मान्तरों का साथी था···विचित्र बात थी। मेरे मन की क्षमा उसकी दया का कारण बनी, उस समय मैं यही समझ सका। इस बार की बीमारी में जब वह यह लोक छोड़ने वाली थी···यह बात उसे याद पड़ी और उसने मुझे बुलाकर कहा।

सरोजिनी : अरे ! कितने वर्ष बाद···

गांधी : **(सोचने की मुद्रा में)** अठारह सौ छानबे की घटना हैं··· सैंतालीस वर्ष बीतने पर उसे याद पड़ी। अहिंसा और सत्याग्रह की मेरी सेना में सत्याग्रह की पताका लेकर वह सबसे पहले चली। उसके वहाँ जेल चले जाने से यहाँ सब कहीं विरोध-सभायें हुई। भारत की एक कन्या विदेश के कारागार में गई थी, इससे यहाँ जो जागरण की लहर चली वह दूसरे किसी कारण से न चली होती। लार्ड हार्डिग ने मेरे आन्दोलन को उचित कहा। भारत के वायसराय के कहने का प्रभाव इंगलैण्ड पर पड़ा फिर उनके उपनिवेश पर तो

पड़ना ही था। कुली प्रथा का अन्त वहाँ के गोरे तभी देखने लगे।

पटेल : सरकार को आपने यहाँ कुली प्रथा बन्द करने की जो अन्तिम तिथि दी थी उसके पहले ही वह बन्द हो गई इसमें भी आपके सत्याग्रह का भय था।

गांधी : वहाँ से दूसरी बार जब जेल लौटने लगा, वहाँ के भारतीय मुझे भाई कहने लगे थे। अपने सुख-दुख की बात बताने में उन्हें सुख मिलने लगा था, जैसे मैं सब का सगा, सब का अपना बन गया था। विदाई के समय नेटाल के जैसे सभी भारतीय जुट आये, जिस ओर मैं देखता था सब के मुख पर ऐसी उदासी छाई थी जैसे कि मैं उनका प्राण लिये जा रहा था। मेरा नाम दक्षिण अफ्रीका के भारतीय समुदाय में घर-घर गूंज गया था। मुझे वचन देना पड़ा कि यदि कोई आवश्यकता नेटाल भारतीय कांग्रेस को आ पड़ेगी तो मैं बर्ष के भीतर ही लौट आऊँगा। वचन का निर्वाह इस देश का प्रधान धर्म रहा है। राजा हरिश्चन्द्र ने वचन की रक्षा कैसे की, यह कथा मेरे सारे जीवन की प्रधान प्रेरणा रही है। चक्रवर्ती नरेश डोम के हाथ बिके, श्मशान के रखवाले बने, पुत्र सामने मरा पड़ा था फिर भी पत्नी के वस्त्र से अपने स्वामी का कर बिना लिये दाह उन्होंने न होने दिया।

सरोजिनी : इस कलियुग के हरिश्चन्द्र आप हैं बापू!

पटेल : मैं तो कहूँगा उन्हीं के अवतार हैं। व्यक्तित्व का विनाश कहते हैं इसे ये···

गांधी : धर्म और सत्य के लिये जितने कष्ट उन्हें झेलने पड़े उनकी कल्पना भी हमारे लिये असह्य होगी सरदार! सूर्य के सामने जुगनू क्या टिकेगा। हाँ···क्या कह रहा था?

सरोजिनी : नेपाल से जब आप दूसरी बार देश आने लगे वहाँ वर्ष

के भीतर ही लौट जाने का···

गांधी : लोगों ने वहाँ कितनी भेंट की सामग्री रख दी। यह सब देख कर मुझे विस्मय हुआ। बा के लिये कई सोने के गहने सच्चे रत्नों से जड़े थे। मेरे धर्म की कठिन परीक्षा थी यह। बा कहती थी अपनी मिली भेंट तो वह बच्चों और बहुओं के लिये अवश्य लेगी। मैं अपनी भेंट भले छोड़ दूँ। मेरे धर्म में लोक सेवा से आर्थिक लाभ लेना और नरक में जाना दोनों बराबर था। बच्चों ने मेरा पक्ष लिया। उस सारी सम्पत्ति का वहीं ट्रस्ट बन गया। अब तो जानता भी नहीं सब वहीं व्यय हो गया या अभी कुछ शेष है। मैं बा को दोष नहीं दे रहा हूँ। नारी की यही प्रकृति है। नारी के भीतर संग्रह की वृत्ति न रहे तब तो पुरुष सदैव कंगाल रहेगा।

आज़ाद : बा की यह नई बात सुनी।

गांधी : विवाह के पहले ही हम दोनों साथ खेले थे मौलाना! साल में तीन सौ साठ दिन होते हैं, हर दिन में कई घटनायें, ऐसे कम से कम पैंसठ साल। सब का लेखा लें तो महाभारत या पुराण के बराबर पोथी बन जाय। पर ऐसी पोथी भी ताज-महल जैसी चीज़ होगी। बा जैसी पता नहीं कितनी देवियाँ इस धरती पर आईं और चली गईं। उनके नाम का भी पता अब नहीं है। बा के नाम का कोई स्मारक मैंने नहीं बनने दिया। उसके नाम की जो निधि आ गई लोक की सेवा में लगती जा रही है। किसी दिन वह समाप्त हो जायेगी। बा का नाम कितने दिन टिकेगा।

सरोजिनी : क्या कहते हैं? जब तक आप का नाम टिकेगा तब तक···

गांधी : हा···हा···हा···काल भगवान मेरा नाम खा डालेंगे सरो-जिनी सौ, दो सौ वर्ष का समय काल के अक्षय प्रवाह में कुछ नहीं है। यह देश सीताराम का है। बा सीता में मिल

गई। किसी दिन मुझे भी राम में मिल जाना होगा। न इस जन्म में किसी दूसरे जन्म में। कभी न कभी नदी को समुद्र में लय हो जाना होगा। समुद्र का जल वायु में मिलकर पर्वत पर पहुँचता है वहाँ हिम का रूप लेता है, वही गल कर नदी बनता है और फिर समुद्र में पहुँच जाता है।

आँखों में जल भर आता है जिसे गांधी अपनी चादर के छोर से पोंछते हैं।

आजाद : बन्द कीजिये बा की बात अब नहीं···

गांधी : बा के लिये नहीं मौलाना ! समुद्र में पहुँचकर नदी की सारी यात्रा पूरी हो जाती है। हम लोगों की यात्रा भी किसी दिन पूरी होगी, इस विश्वास का आनन्द मेरी आँखों में उमड़ आया। आगा खाँ महल में हम लोग जितने दिन बन्द रहे रात को एक बार चन्द्र-ग्रहण लगा था। बा ने उस ग्रहण में देखा कि महादेव उसे बुला रहा है।

सरोजिनी : बापू मैं वहीं थी, मैं यह घटना नहीं जानती। तब बा मुझसे यह बात छिपाये रहीं।

गांधी : मुझे तो वह जगा कर ले गई और ग्रहण की ओर संकेत कर कहने लगी।

नरेन्द्रदेव : **(अपनी बाँह पर हाथ फेरकर)** रोमाँच हो आया मुझे।

गांधी : कहाँ क्या देख रही हो मैंने पूछा, कहने लगी "महादेव भाई को नहीं देख रहे हो ? हाथ हिलाकर नहीं बुला रहे हैं ?" उसके भीतर का महादेव चन्द्रमण्डल में पहुँच चुका था। उसके लिये तो उस समय वह उतना ही सत्य था जितना मैं था। जितना सत्य भाव के भीतर समा जाता है हम उतना ही सत्य जानते हैं उसके आगे के सत्य का बोध हमें कभी नहीं होता।

सरोजिनी : मैं वहीं रही और यह न जान सकी।

गांधी : महादेव की चिता की भस्म का तिलक जब मैंने दिया (**बांयें हाथ के अंगूठे से दोनों भौंहों के बीच ललाट छूकर**) उसने कहा था "श्मशान की भस्म का त्रिपुण्ड तो शंकर लगाते हैं।" थोड़ी देर जैसे विचार में खो गई फिर कहने लगी चिता की भस्म कोई लगाये, जाना पहले उसे ही है।

पटेल : बा को अभी नहीं मरना था।

गांधी : (**चौंक कर**) क्यों ? अपने स्वार्थ की आँख से देखने से अच्छा होगा उसके स्वार्थ की आँख से देखना। चिता की राख जब बटोरी गई, कर्म कराने वाले ब्राह्मण ने उसके हाथ की साबित चूड़ियों को देखकर कहा था, अगले जन्म में भी उसका सुहाग अखण्ड रहेगा। इस जन्म में वह सुहाग के साथ गई इससे बड़ा लाभ और क्या लेती ?

देवदास का प्रवेश। एक किनारे खड़े हो जाते हैं।

सरोजिनी : (**देवदास की ओर देखकर**) बापू बा की बातें करते रहे हैं।

देवदास : पता रहता तो पहले ही आ जाता।

गांधी : अपनी पत्नी की बात तुम भी अपने पुत्र के सामने न कर सकोगे। कैसे आये ? तुम्हारा मुँह सूखा है।

सरोजिनी : बापू महात्मा हैं पर पुत्र का मुंह सूखना नहीं देख सकते।

गांधी : पिता का धर्म यही है। पिता के धर्म में हानि होती है तब पुत्र का मुंह सूखता है। जब तक पिता की छाया है पुत्र पौरुष करे, कर्म करे, अपराजित रहे··· चिन्ता को अपने निकट न आने दे क्यों मौलाना ? कहीं भूल तो नहीं रहा हूँ।

आजाद : कैसे कहूं ? कोई बेटा पैदा किये होता तो कहता। गुड़ खाया नहीं फिर उसका जायका क्या कहूँ ?

देवदास : बापू ने बटवारा कैसे मान लिया ? मेरे पास कितने तार आ गये, फोन से पूछने वालों की संख्या क्या कहूँ ?

गांधी : तुम्हारी राष्ट्रीय कांग्रेस की कार्य-समिति ने बटवारा मान लिया। न मानने का अर्थ होता देश भर में रक्तपात। अपने सम्पादकीय में तुम यही उत्तर दो। यों सम्पादक अपनी बुद्धि से लिखेगा। मैंने कभी तुम्हें अपने पक्ष की बात लिखने को नहीं कहा। हमारे निश्चय के विरोध में भी तुम लिख चुके हो।

देवदास : कांग्रेस के नियमित सदस्य न रह कर भी आप ही देश के लिये राष्ट्रीय कांग्रेस हैं।

गांधी : इसका उत्तर मेरे पास क्या है ? मैंने तो यह भी सुना कि मधुबन थाने में जब गोली चलने लगी···भीड़ के एक नेता को पहली गोली जब नहीं लगी उसने हाथ उठाकर भीड़ को पुकार कर कहा "महात्मा जी के प्रभाव से बन्दूक की गोली निकलती ही नहीं, मत डरो, बढ़े आओ।" दूसरी गोली में वह बेचारा धरती पर लोट गया। ऐसे जितने लोग मरे, जिनके मन पर मेरा दैवी प्रभाव छा गया था, उन सबकी मृत्यु का तब तो पाप मेरे ही सिर है।

पटेल : इस बार जब आपका उपवास चला, दैवी चमत्कार की ऐसी अनेक बातें फैल गई थीं।

नरेन्द्रदेव : मेरी ओर चन्द्रमण्डल में आपकी आकृति देखकर लोग मान गये कि अब आप नहीं हैं और आप के उपवास की झूठी विज्ञप्ति देकर सरकार लोगों को धोखा दे रही है। कितने घरों में लोग दूसरे दिन उपवास कर गये। चूल्हे में आग नहीं पड़ी।

गांधी : इसका अर्थ यही हुआ, जो मैं बराबर कहता आया हूँ।

नरेन्द्रदेव : क्या कहते आये हैं आप ?

गांधी : विवेकानन्द के वेदान्त की ध्वजा जब अमेरिका और यूरोप में फहराने लगी, दक्षिण अफ्रीका में उसी समय मेरा कर्म-क्षेत्र

बना। भारतीय नेटाल कांग्रेस की स्थापना हुई। यह सारा जागरण धार्मिक और सांस्कृतिक था। भारत की संस्कृति ने युगों के बाद करवट ली थी। सत्तावन वाले संग्राम में भी धर्म और संस्कृति की यह बात रही। जो लोग समझते हैं कि वह जागरण निष्फल गया, भूल करते हैं। वह मरा नहीं अब तक जीता आया है।

सरोजिनी : तो क्या आपका सत्याग्रह उसी परम्परा में चला ?

गांधी : मुझे इसमें सन्देह नहीं है। देश के वे वीर चले गये पर उनकी वीरता लोक में चलती रही। असन्तोष और जातीय ग्लानि की अग्नि पर राख चढ़ गई थी, बुझी नहीं थी। विवेकानन्द जैसे दिग्विजयी उसी परम्परा में थे। हम लोग जो राजनीति के मंच पर खड़े हुए, सब उसी परम्परा की उपज थे।

गांधी आँखें मूंद लेते हैं और सब लोग उनकी ओर विस्मय से देखते हैं।

पर्दा गिरता है।

तीसरा अंक

दिन का अन्तिम पहर। विशाल भव्य भवन का दृश्य। सब ओर कलापूर्ण चहारदीवारी के भीतर यह भवन, वृक्षों, लता-कुञ्जों, फूलों की पालियों और हरी दूब के कई खण्डों की समतल भूमि के साथ जैसे आँखों का उत्सव बन रहा है। भवन के दोनों ओर से सुरुचिपूर्ण उपवन, कई जाति के वृक्षों वाला, भवन के पीछे की ओर बढ़ता गया है। एक ओर पक्का चबूतरा दीख पड़ता है, जिसे छूकर लता-कुंजों के भीतर मार्ग भवन के उस कमरे तक चला आया है जो उस भवन से बाहर की ओर निकला-सा दिखाई पड़ता है, जिसके सब ओर गुलाब के फूल, कई रंगों के, वायु की लहरों में हिल रहे हैं कमरे में गांधी चटाई पर, जो कमरे के एक कोने में है, बैठे हैं। चटाई के आगे नीले रंग की दरी बिछी है। घुटनों पर दाढ़ी टिकाये, दोनों हाथों से सिर सम्भाले, दाईं ओर को थोड़ा झुके-से, खद्दर की शाल में निचले ओंठ तक सारी देह ढके जैसे वे इस समय ध्यान में रमे-से दिखाई पड़ते हैं। दो कुमारियाँ थोड़ी दूर पर डरी-सहमी-सी बैठी हैं। एक पुरुष बाहर वाले शीशे के कपाटों में एक से प्रवेश कर सिर झुकाये खड़ा होता है। कमरे के इस ओर शीशे के कपाट हैं। दो और ऊँची लम्बी शीशे की खिड़कियाँ—जिनके उस पार से उत्सुकता और कौतूहल में बाहरी जन डरते-डरते झाँक लेते हैं और गांधी के दर्शन का लाभ लेकर हट जाते हैं।

गांधी : **(उस पुरुष की ओर देखकर मुस्कराने की चेष्टा में)** कुछ कहना है ?

वह पुरुष : जी···सरदार और मौलाना आ रहे हैं ।

गांधी : आ जायँ···तुम्हारी यह दशा क्यों है ? भय से बड़ा पाप मैं दूसरा नहीं मानता । वन में आग लगी हो और निकलने के मार्ग पर सिंह खड़ा हो, ऐसी विपत्ति में पड़े प्राणी का रक्त भय से जम जाय, वही दशा तुम्हारी है । **(लड़कियों की ओर संकेत कर)** देखो इन दोनों का मुख भी पीला पड़ गया है । सरदार सबेरे जो कुछ कह गये उसी से तुम सब इतने डर गये हो । **(दोनों लड़कियाँ सिसक उठती हैं)** देखो···देखो यह··· **उद्वेग में हिल उठते हैं ।**

वह पुरुष : आपके प्राण पर संकट आया है और आप हठ नहीं छोड़ रहे हैं **(कुमारियों की ओर देखकर)** इनमें प्राण कितना है, आपके प्रताप से जो लोग वीरात्मा बने थे, भूकम्प में बड़े पर्वत-से अब वे हिल रहे हैं । देश की सीमा के पार विदेश में जब आपके भक्त इस भय में पड़ गये हैं, विदेशी पत्रों में भी इस बात की चर्चा है । परसों जो अमेरिका के सज्जन आपके पास आये थे, कहने लगे···वे अपने देश में आपके संकट के स्वप्न देखकर आपके दर्शन को यहाँ आये । **(साँस लेकर)** यह भी कह गये कि अब उन्हें आप मिलेंगे कि नहीं ।

गांधी : आज प्रार्थना में वह आयेंगे । विचारवान व्यक्ति हैं । अच्छे लेखक भी हैं । उदार बुद्धि से दूसरे का मत समझना चाहते हैं । सबसे बड़ा गुण तो यह है कि तर्क बुद्धि से नहीं भाव से ···अनुभव से जो मिले उसे लेने की श्रद्धा भी उनमें है । विवेकानन्द के वेदान्त के आनन्द में इस देश के दर्शन को,

हिमालय और गंगा के दर्शन को वह भला आदमी चला आया। इस यात्रा में उसे एक पुस्तक की सामग्री मिलेगी। जिसमें भारतीयता को पश्चिम की आँख से नहीं, इस देश की आँख से वह देखेगा। ऐं···भूल रहा हूँ पश्चिम की आँख कोई नहीं है। देखना नहीं चाहते वे, आँख मूंद कर तर्क करते हैं। हृदय के भाव पर जीवन उनका भी चलता है पर वे उसे मानते नहीं।

मौलाना और सरदार प्रवेश करते हैं। गांधी के सामने दरी पर बैठ जाते हैं। चिन्ता के चिह्न दोनों के मुख पर हैं।

: अरे! तुम दोनों चली जाओ, नहीं तो सरदार तुम्हें फिर डरा देंगे। हम तीन रहेंगे, सब चले जायें।

दोनों कुमारियों के साथ पहले वाला पुरुष भी चला जाता है।

सरदार : **(उद्वेग के स्वर में)** मैं सब को डरा रहा हूँ? यह आप मेरे साथ अन्याय कर रहे हैं। जो कुछ सोच कर आता हूँ आप से कहते भी नहीं बनता।

कण्ठ भर आता है।

गांधी : मौलाना! सरदार सवेरे धमकी दे गये···अपने पद से त्याग-पत्र दे देने की। जीव इस देह को त्याग कर चला जाता है। नित्य हम यह देखते हैं।

मौलाना : देखिये! दस दिन पहले की बात है, आप बोल रहे थे तभी किसी ने बम फेंक दिया। दो आदमी इस बीच गिरफ्तार हुए। मुल्क भर की हिफ़ाज़त जिसके कन्धे पर है वह आपकी हिफ़ाज़त न कर सका तो फिर किसे मुँह दिखायेगा क्या कह कर···

सरदार : प्रार्थना आप इसी कमरे में कर लें जो कहना हो यहीं इसी

आसन पर बैठे माइक से कह लें···दिल्ली भर या कहें तो रेडियो से देश भर उसे पहुँचा दिया जाय।

गांधी : कल मैं वर्धा चला जाऊँगा। प्राण का भय सपने में भी मैं अपने भीतर नहीं आने दूँगा। इस वेष में ऋषियों ने जिस महामन्त्र का दर्शन किया उसे 'मा भैः' कहते हैं। जिस पल यह श्रद्धा मिटी, भय ने मेरे मन को छू दिया उसी पल अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, एकादश व्रत सब मुझे छोड़कर भाग जायेंगे। स्वार्थ में सना हुआ मैं अधम प्राणी बन जाऊँगा।

सरदार : तब फिर प्रार्थना-सभा में आने वालों की तलाशी बाहर ले ली जायेगी।

गांधी : इसका फल मेरा अनशन होगा। अंग्रेजों को शत्रु मैंने कभी नहीं माना। डरबन में जिन गोरों ने मुझ पर चोट पर चोट की उन पर मुकदमा मैंने नहीं चलने दिया। सब किसी के भीतर अपनी आतमा का बोध लेने वाला मैं अपने देशवासियों को···अपने भाइयों को···अपने पुत्रों को शत्रु बुद्धि से न देखूँगा। परिक्षित को तो अपनी मृत्यु का पता आठ दिन पहले चल गया था, क्यों नहीं बच गये? वह राजा थे, मैं रंक हूँ। भगवान के हाथों से निकल कर भारत के गृह मन्त्री की पुलिस के हाथों में मुझे नहीं जाना है।

दीवार के सहारे टिक जाते हैं।

सरदार : तब सेना और पुलिस क्यों रहे? पिछले उपवास से आप निर्बल हो गये हैं, मैं आपको उत्तेजित करना नहीं चाहता।

गांधी : देह का धर्म क्रोध भी है। तीन गुण वाली इस सृष्टि में उसका होना भी आवश्यक है। तुम क्रोध करो···मैं भी क्रोध करूँ··· हम सब क्रोध करें पर किसी का धर्म न छूटे। बम फेंकने वाला मुझे अपनी जाति का, हमारे धर्म का शत्रु मान गया। यह उसका भ्रम था। मेरे कारण उस जाति की ध्वजा बरा-

बर ऊँची उठी है। इंगलैण्ड में, अफ्रीका में और इस देश में भी। पश्चिमी वेश और तड़क-भड़क में इस देश के पुरुष अपनी दासता के बन्धन में और गाँठें लगाते चले जा रहे थे। **(ऊपर के वस्त्र को हिलाकर)** यह वेश मैंने अपने देश को निर्भय बनाने के लिये कारण किया। काली कमली ओढ़ कर पाँचवें जार्ज के राजभवन में घुसा··· जिनसे बड़ा राज्य इतिहास ने न पहले देखा था और न बाद में देखेगा।

आजाद : चर्चिल ने तो इस वेश में आपको नंगा फकीर कह कर बादशाह के पास जाने से रोकना भी चाहा।

गांधी : भारत सचिव होर न रहते तो मेरा उनके पास पहुँचना कठिन होता। बड़े भाई मालवीय जी ने कह दिया था, यदि मेरा वेश सम्राट के निकट जाने में बाधक बताया गया तो वे भी वहाँ न जायेंगे और फिर भारत में इस अपमान का जो विरोध होगा उससे वह साम्राज्य हिल उठेगा।

पटेल : इसमें सन्देह नहीं है···वह तो होता ही···

गांधी : तब किसमें सन्देह है सरदार! भय का प्रभाव मेरे मन पर जो पड़ा होता तो विलायत में जब बैरिस्टर बनने के लिए गया, आधा ईसाई तभी बन गया होता। देश में धर्म और संस्कार की मैं हंसी उड़ाये होता। अफ्रीका की अदालत में मैजिस्ट्रेट के डाँटने पर सिर से पगड़ी उतार दिये होता। वहाँ जैसे सब सामी थे मैं चुपचाप सिर झुका कर सामी बन जाता।

आजाद : सामी क्या···?

गांधी : दक्षिण भारत वालों के नाम के साथ स्वामी शब्द बहुत लगा रहता है। इस देश में तो गुरु को स्वामी कहते हैं। अफ्रीका में गोरे इस शब्द को कुली के अर्थ में प्रयोग करते थे। काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक के सभी जो अफ्रीका

पहुँचे थे इसी नाम से पुकारे जाते थे। पटरी पर चलने का अधिकार उन्हें नहीं था। जब चलते थे सड़क के बीच से। दोनों ओर की पटरी गोरों के लिये सुरक्षित थी। डरबन से प्रिटोरिया के मार्ग में घोड़ा गाड़ी पर यूरोप के सभ्य वेश में रहने वाले गांधी को प्रथम श्रेणी के टिकट के रहते भी गोरे ने भीतर नहीं बैठने दिया। कोचवान के पास से भी उसने मुझे 'सामी' कह कर दूसरी जगह हटाने को कहा, मेरा वहाँ से हटना पूर्वजों और उनके गौरव का अनादर लगा और गोरा सामी शब्द के साथ अनेक विशेषण लगाकर मुझे पीटता रहा। डर नहीं समाया मेरे भीतर, देह की चाहे जो गति हुई।

पटेल : संघ और सभा वाले आपको देश का शत्रु मान बैठे हैं।

गांधी : इसलिये कि उनके देश के बाहर उपनिवेशों में भारत वालों की क्या दशा थी इसे या तो वे जानते नहीं या भूल गये हैं। एक बार डरबन में सड़क की पटरी पर चल रहा था, सम्मानित बैरिस्टर के पश्चिमी वस्त्रों में, फिर भी पुलिस वाले ने ठोकर से मुझे सड़क पर कर दिया। एक प्रतिष्ठित गोरे पादरी ने जो घोड़े पर चला आ रहा था अपनी आँख से यह घटना देखी। स्वयं गवाह बनने को तैयार हो गया फिर भी मैं मुकदमा चलाने अदालत में नहीं गया। मुझे डराने की सब से बड़ी बात तो पंचम जार्ज ने स्वयं पैदा की फिर भी मैं नहीं डरा।

आज़ाद : क्या थी वह बात···

उत्सुक मुद्रा।

गांधी : सम्राट के भोज से गोलमेज के सभी भारतीय सदस्य जब चलने लगे, सम्राट ने अकेले मुझे रोक लिया यह कह कर कि "मिस्टर गाँधी आप एक मिनट रुक जायँ।" लोग बाहर हो

की साँस जो ऊपर टँगी थी नीचे आ गई।

आज़ाद : जितने लोग गोलमेज में गये थे सबसे अधिक खतरनाक आप ही बादशाह को दिखाई पड़े।

गांधी : वे मुझसे डर गये। फिर उन्होंने मुझे डराना चाहा। पर मैं उनसे डरा नहीं। अफ्रीका में इस देश के लोग सामी बन जाने के डर से अपनी जातीयता छिपा लेते थे। मुसलमान अपने को अरब कहते थे, पारसी वहाँ ईरानी बनते थे। हिन्दू किस देश के बनें? आपस में वे पंजाबी, मद्रासी भले बनें, वहाँ के गोरों के लिये सभी सामी थे और उनके साथ सामी का वहाँ बर्ताव था। लोगों के मन से भय दूर करने में ही यह जीवन बीत गया। भारतीय विवाह जब अफ्रीका में गैरकानूनी बन गया, उनके भीतर धर्म का भाव जागा। स्त्रियाँ भी मेरे प्रचार में आईं क्योंकि उस कानून से वे धर्मपत्नी की जगह रखेलिनें बन गईं, उनके बच्चे अवैध हो गये और मेरे सत्याग्रह का पहला जत्था देवियों का बना। बा भी सबके आगे चली। रखेलिन बनकर रहने में उसकी आत्मा भी काँप उठी। वहाँ गोरों ने मुझ पर अत्याचार नहीं किये मेरी सारी जाति मेरे धर्म, मेरे संस्कार पर अत्याचार किया; पर वे मुझे डरा न सके, न मेरे साथियों को। भारत का बच्चा-बच्चा वहाँ निडर बना, देवियाँ निडर बनीं और सब गोरे डरने लगे। नेटाल के सत्याग्रह की सफलता से साम्राज्यवादी शक्तियाँ डरी थीं। हम लोग नहीं डरे।

पटेल : चम्पारन में भी यही हुआ। गोरों से जो जनता डरी थी वह अभय बनी।

गांधी : मेरी जाँच में पहले लोग आने से डरते थे फिर तो वह भीड़ बयान देने आने लगी कि अधिकारियों को पसीना आ गया। जाल से जो कानूनी अधिकार गोरों ने बना लिया था वह

जनता के अभय बनते ही हवा हो गया। बम्बई में मेरे उतरने पर जनता का अपार समूह जो जुट आया, उसमें लोग अभय बने और गवर्नर विलिंगडन के साथ मेरे राजनीति के गुरु भी डर गये।

आज़ाद : गोखले साहब के डरने की क्या वजह थी ?

गांधी : उनसे कहकर विलिंगडन ने मुझे भेंट के लिये बुलाया। विलायत से मैं बीमार आया था, अभी सीधे खड़ा भी नहीं हो पाता था। उनके पास मैं जब पहुँचा उन्होंने कहा "मिस्टर गांधी, यहाँ कोई आन्दोलन करना हो तो पहले आप मुझे सूचना दे लेंगे।" मैंने हँसकर कहा "स्मट्स को सूचना देकर मैंने वहाँ सत्याग्रह किया था। मैं अपने विरोधी को बिना सूचना दिये उसके विरोध में एक भी कदम नहीं उठाता।" मैंने देख लिया, वे मेरे सत्याग्रह की बातें सुन कर जो अफ्रीका से उन्हें मिली थीं, मुझसे डरे थे। यह भी कह दिया, मित्र की तरह जी खोलकर आप मुझे मेरी भूल बतायेंगे यही मैं भी आपसे करूँगा, पर आप कृपा कर कभी भी मुझे डराने की चेष्टा न करेंगे। डर दिखाये जाने पर मैं ज्वालामुखी बनता हूँ नहीं तो स्वभाव से तो मैं ठंडी राख हूँ। मेरा हाथ जोर से दबा कर वे देर तक हँसते रहे।

आज़ाद : गोखले साहब कैसे डर गये। उनको आप अपना उस्ताद कहते हैं।

गांधी : विलिंगडन से मिलने के बाद की बात है। बम्बई में मेरे स्वागत का दृश्य, जनता के उत्साह और संख्या का विवरण जो विलायत तक के पत्रों में छपा मेरे रूप में नई शक्ति का उदय उन्हें देख पड़ा जिसे वे जनता की शक्ति कहने लगे। यह भी वे जान गये कि कांग्रेस अब मध्य वर्ग के विद्वानों के हाथ से निकल कर जनता के हाथ में जायेगी। नेता अब

वह बनेगा जो लोगों के हृदय में संकट से जूझ कर जगह बनायेगा। एक दिन जैसे कई दिनों की तैयारी के बाद उन्होंने मुझसे कहा···ऐसे धीमे शब्दों में जैसे कि वे यह भी नहीं चाहते थे कि उनकी बात हवा भी सुने।

पटेल : साल भर तक राजनीति से अलग रहने का आपसे जो उन्होंने वचन लिया ?

गांधी : कहने लगे—"गांधी, जिस जनता को तुम जनार्दन कहते हो उसके हाथ के तुम नारायणास्त्र हो। नारायणास्त्र की रोक कहीं नहीं है···प्रलय भी हो सकती है उससे। इसलिये अपने मन से तुम्हें कुछ नहीं करना है। पहले देश भर की चुपचाप शान्त यात्रा कर अपने जनार्दन को सब ओर से देख लो।" एक वर्ष जो राजनीति में उतरने से उन्होंने मुझे रोक दिया इसमें उनका भय ही तो था कि पता नहीं देश में पैर धरते ही मैं क्या कर बैठूं। अब मुझे उनके चलाये चलना था। उसी वर्ष वे दिवंगत न हो गये होते तो मैं अब तक उनके चलाये चलता।

पटेल : अपने तेज से आप तेजस्वी रहें···इसीलिए भगवान उन्हें भी ले गये और तिलक जी को भी।

गांधी : मुझे भी यही लगता है। मेरे जिस तेज की बात कर रहे हो सरदार ! वह मेरा कब था ? भगवान का था और वह तेज अब उस दीनबन्धु ने समेट लिया। तभी देश में सब ओर भय छा गया है। मेरे इतना कहने पर एक मुसलमान··· बूढ़े मुसलमान सज्जन प्रार्थना में परसों आये थे। इस बार का पाँच दिन का उपवास भी जैसे व्यर्थ जा रहा है। विदेशी शासन की कूटनीति जो बराबर सफल रही, नलिनी सरकार, सप्रू, अणे जैसे लोग जो बराबर नरम रहे अंग्रेजी शक्ति से खुले संघर्ष में जो बराबर निराशा देखते रहे मेरे आगा खाँ

महल वाले उपवास से वे वीर बन गये, सरकार से अलग हट कर जो उन लोगों ने बयान दिया वह पढ़ कर मैं स्वयं चकित रह जाता था। इस बार तो जैसे सब कुछ उलटा जा रहा था।

पटेल : आपकी नीति के विरोध में जो कहे जा सकते थे, हिन्दू महासभा में जिनका प्रभाव था वे सभी आपकी सात शर्तों को मान गये। मुसलमान अब यहाँ तो सुरक्षित हैं। हिन्दू शरणार्थी दोनों ओर से अब भी भागे आ रहे हैं। लोग उनकी दुर्दशा देखकर रो पड़ते हैं फिर भी शान्त हैं। किसी मुसलमान को अब यहाँ संकट नहीं है। उनका संकट तो अब आपके सिर पर नाच रहा है।

गांधी : तब मुसलमान प्रार्थना में क्यों नहीं आते ? मैं उन्हें बार-बार बुला रहा हूँ फिर भी वे नहीं आते, इसका अर्थ तो यही है कि मेरा विश्वास वे नहीं करते।

आजाद : नहीं···मेरे ईमान पर आप यक़ीन करें तो मैं कहूँ···

गांधी : आपके ईमान पर मरने के बाद भी जिस लोक से रहूँगा मैं विश्वास करता रहूँगा मौलाना ! उन दिनों कांग्रेस के नेता सभी विद्या के समुद्र थे···फ्रांस की राज्य क्रान्ति, रूस और चीन की राज्य क्रान्ति सबकी जीभ पर थी। पाँच घण्टे से अधिक खड़े होकर भाषण देने वाले अनेक रहे। पर वीर··· ऐसे वीर जो अंग्रेजों से बराबर दूर रहकर मुल्क को सीना तानकर चलने को कहते थे···उनकी सभ्यता, उनकी शिक्षा, उनके ढोंग के जाल में नहीं फँसने वाले थे कितने ? अकेले आप मुझे मिले ऐसे जिसे देखते ही मैंने जान लिया यह वीर की चाल है। चम्पारन के दिनों में राजन बाबू, खेड़ा सत्याग्रह, डाँड़ी अभियान में सरदार और सरोजिनी ऐसे मिले। आप तो जन्म से इमाम पैदा हुए, थे धन सम्पत्ति की चाह

आपको थी नहीं। सरदार को भी मेरे साथ भिखारी बना पड़ा।

आजाद : पंजाब से जो हिन्दू अभी भी आगे चले आ रहे हैं उनके बच्चों और औरतों के साथ वहाँ जो हो रहा है वह सब सुनकर यहाँ के मुसलमान मारे शर्म के बाहर निकलना नहीं चाहते।

गांधी : मैं तो कहूँगा, लोग अपनी सारी शर्म मुझे दे दें और अपना जी साफ कर लें। मुझसे पूछा जा रहा है कि मैं पाकिस्तान क्यों नहीं जा रहा हूँ ? लोग समझते हैं कि पाकिस्तान जाने से डरता हूँ। पाकिस्तान के लिये चल पड़ूँ और वह सरकार मुझे न घुसने दे। इसीलिये कई दिनों से कह रहा हूँ···जो कह रहा हूँ पत्र छाप भी रहे हैं। पाकिस्तान सरकार के अपने लोग भागे जा रहे हैं, जिस राज्य की प्रजा अपना सब कुछ छोड़कर भागी जा रही है उस राज्य को क्या कहा जायेगा ? वह सरकार जब ठीक समझे मुझे बुलाये, कहे कि मैं भागने वाले को रोकूँ तब मैं अवश्य जाऊँगा।

पटेल : आपको वहाँ बुलाना होता तो पाकिस्तान नहीं बनता। कई सौ सालों से हिन्दू-मुसलमान एक साथ जैसे रहते आये, वैसे रहे होते। पर वहाँ तो यह है कि हिन्दू-मुसलमान साथ रहने न पावें। वहाँ पाक मुसलमान रहें पाक हिन्दू नहीं। काश्मीर पर धोखे से आक्रमण किया गया, राजा और जनता के नेताओं ने काश्मीर को भारत में मिला लेने की प्रार्थना की। पाकिस्तान की सेना से दस हिन्दू घर लूटे गये तो सौ मुसल-मान घर। अत्याचार की बातें आप सुनते नहीं, इस डर से मैं चुप हो जाता हूँ।

गांधी : हिन्दुओं के भाग आने से पाकिस्तान का व्यवसाय चौपट हो जायेगा। खेती-बारी मारी जायेगी। उनके राष्ट्र की शक्ति

घटेगी। इतिहास में यह सब आकर रहेगा।

आज़ाद : तवारीख की फिक्र जब वे करने लगेंगे उनकी लीग का जादू मिट जायेगा। चार पीढ़ी पहले जो हिन्दू था वह पलक मारते ऐसा पाक मुसलान बन गया कि अपने बाप-दादों की धरती को काटने लगा, यह सब सनक है। पचीस, पचास का जुट एक साथ बड़ी जगहों पर पहुँच जाने के लिये, जिन्दगी के वे मज़े लेने के लिये जो बहिश्त में भी न मिलें अंग्रेजी हुकूमत से मिल गया। तवारीख में पाकिस्तान की पैदाइश ही मानी जायेगी।

गांधी : 'ईशावास्य मिदं सर्वम् यत्किंचित् जगत्याम् जगत्।' सरदार!

पटेल : जी···

गांधी : याद है चौबीस वर्ष पहले जब मैं हिमालय में चले जाने को तैयार हो गया था मेरे साथ के लोगों ने न जाने दिया। उनको दोष क्या दूं? भगवान को जो नाच मुझे नचाना था, चला गया होता तो कौन नाचता? भगवान् के भरोसे रहने वाले को यह संसार छोड़ ही देना चाहिये।

आज़ाद : तब 'भारत छोड़ो' कौन कहता?

गांधी : मैं अकेला भारत नहीं हूँ···जब तक जनता का विश्वास मुझमें है तभी तक और यह "भारत छोड़ो" प्रस्ताव भी नया नहीं है। हिन्दू विश्वविद्यालय वाला साल भर की अवधि बिताने पर जो मेरा भाषण हुआ मैंने वहीं कहा था। इस देश के अपने पहले भाषण में मौलाना!

आज़ाद : सुना था, आपने जो राजा वहाँ आये थे, वायसराय के सामने ऐसी बातें कह दीं जो दूसरा कोई भी कहने में काँप जाता!

गांधी : राजा लोगों को तो अपनी राजधानी की सड़कों पर झाड़ू लगाने को मैंने कहा ही, यह भी कह दिया कि भाषणों से हम स्वराज्य के योग्य न होंगे, हमारे कार्य हमें इस योग्य

बनायेंगे ! यदि देश की मुक्ति के लिये आवश्यक हुआ तो मैं अँग्रेजों को यहाँ से चले जाने के लिये कहूँगा···इस निष्ठा की रक्षा में मैं प्राण भी दे दूँगा । मेरी आत्मा की यह पुकार जो तब निकली बराबर निकलती आई । इरविन से जो दस बार मैं मिला यह पुकार बराबर मेरे साथ लगी रही । सन् सोलह से लेकर बयालीस तक···

पटेल : छब्बीस वर्ष···

गांधी : हाँ, छब्बीस वर्ष 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव मेरे भीतर चलता रहा !

पटेल : इस प्रस्ताव पर तभी आपका भाषण जैसे धरती से न उठकर आकाश से उतरा था । मैं मंच पर बैठा अपने सामने जैसे समुद्र का विक्षोभ या हिमालय का कम्पन देख रहा था । तांडव में शंकर जैसे लोकों की सीमा उखाड़ते चले जा रहे थे ।

गांधी : शंकर की अपार सहन शक्ति भी कभी-कभी विचलित होती है तब सृष्टि में प्रलय की बेला आती है । सरकार के वचन का विश्वास मैं जीवन भर करता आया यह मानकर कि किसी-न-किसी दिन वह भी चेतेगी । पर देख लिया कि यह सरकार चेतने वाली नहीं है । भारत पर जापान का आक्रमण इसीलिये तो था कि भारत से जन और धन खींचकर इंग-लैण्ड अपनी लड़ाई लड़ रहा था ।

आजाद : मैं इसलिये आया था कि आप कुछदिनों के लिये सरदार की बात मान लें ।

गांधी : लोक-सेवक पुलिस की छाया में चलकर लोक-सेवा की मर्यादा मिटाता है मौलाना ! मैं मान लेता हूँ कि सरदार का कहना सच है । किसी समय भी मैं किसी अविवेकी तरुण के क्रोध का शिकार बन सकता हूँ । ऐसा हो जाय तो क्या यह धरती पाताल में चली जायगी या आकाश फट पड़ेगा । नित्य जो इस धरती पर अनेक जन मरते हैं उनमें उस दिन एक मैं भी

रहूँगा। प्रकृति का शुद्ध कार्य होगा यह।

पटेल : (उद्वेग में) शुद्ध कार्य होगा।

गांधी : हाँ सरदार मेरी मृत्यु...कालिदास के शब्दों में मरण शरीर-धारियों की प्रकृति है, जीवन तो उसकी विकृति का नाम है। इतना तो तुम मानते हो कि जो ऐसा हो ही गया तो मुसलमानों की रक्षा में होगा और मुझे देह के बन्धन से मुक्त करने वाला कोई हिन्दू होगा। मेरे बार-बार बुलाने पर भी जब मुसलमान प्रार्थना में नहीं आ रहे हैं तो उनकी ओर से कोई संकट नहीं है।

पटेल : उस दिन बम फेंकने वाला हिन्दू था। सन्देह में जो दो और पकड़े गये वह भी हिन्दू हैं।

गांधी : हिन्दू धर्म का कोई रूप ऐसे आचरण की आज्ञा किसी को नहीं देता। साहित्य में ऐसे कर्म का कहीं चित्रण नहीं है। अपने पूर्वज तो शत्रु को ऊँचा आसन देने की बात कह गये हैं। इस तरह का आचरण यदि किसी ने किया तो कहा जायेगा अपने धर्म, संस्कार, साहित्य यहाँ तक कि जीवन विधि से वह विमुख हो गया था।

पटेल : आपकी प्रार्थना में भाग लेनेवाले...जो लोग यहाँ आते हैं सभी शिक्षित होते हैं। अशिक्षित जनता तो इस भवन के बाहर खड़े होने में भी डरती है।

गांधी : हूँ, तब मेरा भावी घातक शिक्षित हिन्दू तरुण होगा। **(सोच कर)** तुम्हारा कहना असंगत नहीं है सरदार ! शेक्सपियर के नाटकों को वह पढ़ चुका होगा। सभा में बैठे सीजर को जैसे ब्रूट्स ने शेक्सपियर के नाटक में धोखे से मार दिया है वैसे ही वह भी मेरे जैसे अपने देश के शत्रु को धोखे से मार देगा। अंग्रेजी साहित्य जो यहाँ विश्वविद्यालयों की शिक्षा का प्रधान विषय बन गया है उससे इस देश के तरुण ब्रूटस,

मैकवेथ बनने लगे हैं। ये जो न कर बैठें सब थोड़ा है।

पटेल : आपकी प्रार्थना का समय चला आ रहा है कुछ निश्चय अब हो जाना चाहिये। मैं बाहर घोषित करा देता हूँ आप अस्वस्थ हो गये हैं। आज प्रार्थना में न जायेंगे।

गांधी : (**ओठ पर उँगली रखकर**) असत्य से मेरी रक्षा करना चाहोगे?

पटेल : आप स्वस्थ नहीं हैं। इस उपवास के बाद से आप स्वस्थ नहीं हुए। इसमें झूठ क्या है?

गांधी : अट्ठारह को मेरा उपवास टूटा। बीस से मैं बराबर प्रार्थना में गया हूँ। लोग कुछ आशा लेकर वहाँ आते हैं कि उन्हें मैं कुछ उपयोगी बात बताऊँगा। पिछले दस दिन मैं जैसा रहा हूँ उससे बुरा नहीं हूँ! धर्म के साथ, अपनी अन्तरात्मा के साथ, भगवान् की निष्ठा के साथ मैं छल नहीं कर सकता। काली मन्दिर की बलि की निन्दा करने में मुझे प्राण का भय नहीं लगा। विश्वनाथ मन्दिर की गंदगी की मैंने निन्दा की और नहीं डरा, प्रयाग के कुम्भ में जो कुछ देखा उसकी निन्दा करते मैं नहीं डरा, यरवदा आश्रम में अछूत दूदाभाई के परिवार को रख लेने पर जब सनातनी कुएँ का पानी रोकने लगे, आश्रम की सहायता वहाँ के सेठों ने बन्द कर देने की धमकी दी मैं तब नहीं डरा और इस बात पर तैयार हो गया कि किसी हरिजन बस्ती में सबके साथ बस जाऊँगा और वहाँ वही काम करूँगा जो उस बस्ती के हरिजन भाई करते हैं तो अब भी मुझे नहीं डरना है सरदार! भगवान् सब समय मेरे साथ रहा है। अन्तिम समय उसकी सहायता आई है।

पटेल : मैं प्रार्थना कर रहा हूँ मुझे जी भर कह लेने दें।

गांधी : नहीं तुम जितना अधिक कहोगे तुम्हारा कष्ट भी उतना ही

अधिक बढ़ेगा। तुम अब कुछ भगवान् के चमत्कार सुनो जो मेरे जीवन में घट चुके हैं। जवाहरलाल उन चमत्कारों में रुचि नहीं लेगें। विदेशी शिक्षा के प्रभाव में इस देश की संस्कृति में उनकी श्रद्धा नहीं है। पता नहीं तुम नास्तिक क्यों होते जा रहे हो ?

पटेल : आपकी छाया जब तक मुझ पर नहीं पड़ी थी मैं नास्तिक था। विदेशी दासता के मूल में मुझे देशी पाप दिखाई पड़ते थे, धर्म के, संस्कृति के, साहित्य और कला के। इस देश का साहित्य जितना शृङ्गार प्रधान है उतना किसी देश का नहीं...

गांधी : सूर्य अपने किस पाप से नित्य डूबता है सरदार ! धरती के किस पाप से रात आती है। कहोगे प्रकृति के नियम से। प्रकृति के उसी नियम से यह देश कभी जगद्गुरु बना तब इसका तेज मध्यान्ह के सूर्य-सा दूसरों से न सहा गया। सूर्य के तेज की तरह इस तुम्हारे देश के धर्म और संस्कृति आदि जो तुम गिना गये हो सबका तेज मन्द पड़ा, और यहाँ रात आ गई जो हमारी इतनी पुरानी दासता बन गई। इस देश का साहित्य शृङ्गार प्रधान इसलिये है कि वह जीव धर्म प्रधान है, सृष्टि दर्शन प्रधान है। पवित्रता के नाम पर असत्य का प्रचार नहीं करना था इस देश के कवियों को।

पटेल : रुकें थोड़ी साँस ले लें तब...कण्ठ से शब्द काँप कर निकल रहे हैं।

आजाद : बा के हाथ से फल का रस लेकर जब उपवास तोड़ते थे जल्दी ताकत आ जाती थी। इस बार मेरे हाथ से ग्लास लिये...

गांधी : बिना पहले कहे मैंने कुछ नहीं किया मौलाना ! सरदार के सामने वहाँ हरिजन बस्ती में मैंने कह दिया था कि इस बार जो उपवास तोड़ना पड़ा तो बा का काम मौलाना को करना

पड़ेगा। होनी का आभास मुझे पहले मिल जाता है। उसे रोक देना मेरी शक्ति में चाहे न हो। इस देश का प्राचीन साहित्य केवल शृङ्गार प्रधान नहीं है सरदार। शृङ्गार रस सब रसों का राजा—रसराज कहा गया है। शान्त रस रस-राज नहीं कहा गया। समझ रहे हो इस रहस्य को।

पटेल : इस समय रसराज के विवेचन का अवसर नहीं है।

गांधी : यही समय है यदि तुम्हारी आशंका नहीं घटित हुई तो फिर तुम इस भ्रम में पड़े रह जाओगे। तुम्हें अपने पूर्वजों के साहित्य में श्रद्धा नहीं रह जायेगी, उससे जीवन की श्रद्धा मिटेगी। शृङ्गार रस ही इस सृष्टि का मूल कारण है श्रुति कहती है कि सबसे पहले काम का आवर्तन हुआ···काम से ही सृष्टि की प्रतिष्ठा हुई। ब्रह्म और माया का ही दूसरा नाम पुरुष और प्रकृति है और वही तत्वदर्शन नर और नारी में है। शृङ्गार रस की मान्यता है कि संसार भर के दम्पति में पुरुष परमपुरुष का रूप है और पत्नी माया देवी का। अपनी सन्तान में ये दोनों अमर होते हैं। इसके लिये भी श्रुति कहती है 'हे अग्नि हम अपनी प्रजा के द्वारा अमरता को प्राप्त हों' संस्कृत साहित्य में जहाँ कहीं नर-नारी के प्रणय व्यापार का चित्र है वहाँ उसका फल सन्तान अवश्य है। बिना सन्तान के फल के तो यह कर्म पाप है।

आजाद : इसका तो मतलब यह हुआ कि जो आपके मजहब में कहा गया है वही आपकी शायरी में भी। लेकिन मजहब और शायरी तो दो चीजें हैं।

गांधी : फारसी के कवि इस्लाम के सिद्धान्तों के विरुद्ध लिख गये। उर्दू ग़ज़लों में ऐसा बहुत अधिक है। पर संस्कृत में यह कहीं नहीं हुआ। सृष्टि के मूल के विरोध में हमारा धर्म कहीं नहीं गया और कवि को तो सृष्टि के मूल से ही चलना था।

ईसाई धर्म में आत्मघात पाप है पर पश्चिम के साहित्य में आत्मघात मनुष्य का प्रधान कर्म बन गया है। दक्षिण अफ्रीका के ईसाई पादरी मेरे मित्र रहे। अपने इस देश के भी ईसाई पादरी मेरे मित्र रहे। उनकी ओर से बड़ी चेष्टा हुई कि वे मुझे ईसाई बना लें। उनकी चेष्टा जितनी बढ़ती गई अपने धर्म में मेरी श्रद्धा भी उतनी ही बढ़ती गई। मुझे लगा जो धर्म अपने माननेवालों की संख्या बढ़ाना चाहता है उसकी कहीं कोई चूल ढीली है। अनुयायियों की संख्या घटने पर यह धर्म मर जायेगा।

पटेल : साहित्य में जहाँ सन्तान न हुई तो फिर वह प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम-वर्णन अनुचित है ?

गांधी : निश्चित। प्रेमी-प्रेमिका अँग्रेजी साहित्य में होते हैं। यहाँ तो नायक-नायिका हैं। यूनानी साहित्य से लेकर यूरोप के सभी आधुनिक साहित्यों में ढूंढ आओ नर-नारी के प्रेम का वर्णन तो वहाँ बहुत है पर क्या उस कर्म का फल सन्तान रूप में कहीं हैं ?

आजाद : कहीं नहीं है ?

गांधी : संतान सब कहीं नदारद है मौलाना !

सब हँस पड़ते हैं।

आजाद : यह बात तो आपने पते की कही।

गांधी : उनके साहित्य में जब सृष्टि का प्रधान धर्म अनुराग नहीं आया···आनन्द और तृप्ति से वे वंचित रहे फिर तो उनके साहित्य में हत्या, हिंसा, अपराध, मानसिक विकृति चाहे जितनी आई, हमारे हृदय की तृप्ति तो न आ सकी। शेक्स-पियर के नाटकों को पढ़ते जाइये न कभी आँखें भरेंगी, न शरीर में रोमांच होगा, चित्त का गद्‌गद् हो जाना या उसमें रमकर देह की सुधि बुधि भूल जाना तो दूर की बात है।

कवि-कर्म व्यक्ति का उन्माद नहीं है सरदार ! प्रकृति का सूक्ष्म अनुभव कवि-कर्म है। सभी व्यापार हमें प्रकृति से मिले हैं। प्रकृति के बन्धन में···आकर्षण में नर-नारी परस्पर आकर्षित होकर एक दूसरे के बन जाते हैं। लौकिक व्यवहार में हम उसे प्रणय कहते हैं, साहित्य में वही शृङ्गार है जिसका फल संतान है, श्रुतिवाणी में जिस नई उपज की कामना है। बिना इस नई उपज के इस सृष्टि को ही मिटना होगा। जिसकी कामना हम लोग तो कभी नहीं करेंगे।

पटेल : पश्चिम के समाज-शास्त्री भी इसकी कामना नहीं करेंगे।

गांधी : पर उनके साहित्य में तो जैसे इसी की कामना है। नहीं तो···सृष्टि के प्रधान धर्म—नई उपज का लोप वहाँ क्यों होता ?

पटेल : तब तो मैं अब तक बड़े भ्रम में था।

गांधी : सरोजिनी का यहाँ न होना मुझे इस प्रसंग में बहुत खल रहा है। बा जैसे सूक्ष्म शरीर से **(आगे ऊपर की ओर हाथ उठाकर)** यहाँ कभी-कभी मुस्करा पड़ती है।

आज़ाद : ऐं क्या कहते हैं ? बा यहाँ कहाँ ? कैसी बात कहने लगने हैं। सुनने वाले क्या कहेंगे ?

गांधी : **(दुःख की हँसी)** कहेंगे गांधी पागल हो रहा है।

आज़ाद : आपकी बाँह जब ऊपर उठी जैसे आप बा को सचमुच देख रहे हों। मैं घबड़ा गया।

गांधी : सपने में उसे बार-बार देखा है मौलाना !

आज़ाद : ख्वाब की बात दूसरी है।

गांधी : जब हम दोनों एक साथ खेलते थे। विवाह के पहले वह जैसी थी···विवाह के समय जैसी थी, जब हम दोनों ने एक साथ खड़े होकर वशिष्ठ और अरुन्धती को हाथ जोड़े थे···जब वह मेरे घर आ गई···दिन में जब वह छिप कर मुझे देख लेती थी

मैं न देख पाता था । समझ में नहीं आता स्वप्न में उसका वही रूप क्यों दिखाई पड़ता है ।

चश्मा उतार कर आँखें मूंद लेते हैं ।

आजाद : आँख मूँद कर दिल की बस्ती में वही रूप देख रहे हैं जैसे···

गांधी : **(हँसते हुये)** नेकी यह है मौलाना ! आपने मुझे हँसा दिया। आँख तो इसलिये मूँद ली कि उनमें पानी आ जायेगा और आप कहेंगे कि यह बूढ़ा बूढ़ी औरत के लिए रो रहा है। मरने के बाद जीव सूक्ष्म रूप धर लेता है मौलाना ! हमारे धर्म में यह कहा गया है ।

आजाद : **(विस्मय में)** क्या धर लेता है···मर जाने के बाद कोई नई शकल नहीं मिल जाती है ?

गांधी : जी···बा मरने के समय जैसी थी वैसी ही···जैसे हवा की बनी हो या पतले हल्के बिना रंग के धुएँ की बनी हो। बारीक-से-बारीक को सूक्ष्म कहेंगे । सपने में तो वह जैसी तब थी वैसी दिखाई पड़ती है पर जागने में जैसी अब थी वैसी दिखाई पड़ती है ।

आजाद : आप हँसी कर रहे हैं ?

एकटक उनकी ओर देखते रहते हैं ।

गांधी : **(धीमी, विश्वास की ध्वनि से बायाँ हाथ मौलाना के कन्धे पर रखकर)** सही कह रहा हूँ । अभी-अभी उसे देखा है । मुस्करा रही थी जैसी मेरी चोरी पकड़ ली हो ।

आजाद : खुदा हाफ़िज···मैं इसमें यकीन नहीं कर सकता । मेरे लिए यह कुफ्र है ।

गांधी : **(वैसी ही ध्वनि में)** मैं कहता नहीं कि आप यकीन करें । मुझे इसके लिए कोशिश करनी नहीं है । जन्म-जन्म का मेरा संस्कार यही है । विलायत में था माँ यहाँ मर गई । किसी दिन अकेला बैठा अँग्रेज पादरी की कही बातें सोच रहा था

कि सामने कमरे की दीवाल पर माँ का सूक्ष्म रूप आ गया। मुझे लगा कि अँग्रेज पादरी के प्रभाव से मुझे बचाने के लिए माँ के भाव ने रूप ले लिया था। भाई को मैंने इस घटना के बारे में लिखा। सही बात छिपा कर गोल-मटोल उत्तर उन्होंने दे दिया। बम्बई में जहाज से उतरते ही जब मैंने उसके मरने की तारीख सुनी और हिसाब मिलाया तो मरने पन्द्रहवें दिन वह वहाँ मुझे दिखाई पड़ी थी।

आजाद : पन्द्रह दिन रास्ते में बीत गया था ?

विस्मय के भाव उनके मुख पर नाच रहे हैं।

गांधी : जितने दिन यहाँ प्रेत कर्म हुआ वह यहीं बंधी रही। तेरहवें दिन यह क्रिया यहाँ समाप्त होती है। दो दिन हो सकता है रास्ते में बीते हों या यहाँ और रुक कर वह वहाँ पहुँची हो। यह कैसे होता है ठीक-ठीक जानकारी मुझे नहीं है।

आजाद : आपके पास बैठने में तो पागल हो जाने का डर है।

पटेल : पच्चीस वर्ष साथ बैठकर आप पागल न बने तो अब न बनेंगे मौलाना !

आजाद : ऐसी बातें पहले कभी नहीं हुई थीं सरदार !

गांधी : हर घटना अपने समय पर होती है मौलाना ! पेड़ का एक-एक पत्ता कब गिरेगा यह सब पहले से तै है।

आजाद : खुदा की कारसाजी सब कहीं है यह बात तो मैं आपकी मान जाऊँगा।

पटेल : अब आप लोग यह बात बन्द करें।

गांधी : श्रृङ्गार रस से तुम न चिढ़े होते तो यह बात न चलती। ईसाई पादरी मेरी एक बात का उत्तर नहीं दे पाते थे।

पटेल : जी किस बात का···

गांधी : मैं उनसे पूछता था जब आत्म-हत्या उनके यहाँ भी पाप है

तो अँग्रेजी और फ्रांसीसी साहित्य में इतनी आत्महत्यायें क्यों कराई गई हैं। इसका अर्थ यह है कि यूरोप में कहीं भी ईसाई धर्म में लोगों की श्रद्धा नहीं है।

आजाद : दुश्मन को घेरने का ढंग आपका निराला रहा है।

गांधी : शत्रु शब्द मेरे कण्ठ से कभी नहीं निकला मौलाना। मेरे शब्द कोष में यह शब्द नहीं है। कभी किसी को मैंने अपना शत्रु नहीं माना। जिन लोगों ने मुझ पर चोटें कीं। उनको भी नहीं। अफ्रीका में जो लोग मेरी जान लें चुके थे उन पर मुकदमा नहीं चलने दिया मैंने। शत्रु की बात क्या, विरोधी भी मैं किसी को नहीं मानता। जिसका मत मेरे मत से नहीं मिलता इतने से काम आप चला लें और यह भी सुन लें कि मेरा निजी मत भी कोई नहीं है।

आजाद : आपकी अपनी कोई राय नहीं है।

गांधी : जी नहीं...

आजाद : बिना राय के कौन है ?

गांधी : मेरा अपना निजी मत कोई नहीं है।

आजाद : और साफ कहें...

गांधी : मेरे धर्म में जो कहा गया है, पूर्वज जो मानते रहे हैं, कवि जो लिख गये हैं उसी को मान कर चलता हूँ। कोई बात कहने के पहले सोच लेता हूँ कि मेरा कहना उनके मेल में बैठ रहा है या नहीं। मेरी अपनी श्रद्धा में यह परम्परा की भक्ति रही है। दूसरे इसे मेरी मानसिक संकीर्णता या चाहें तो दासता कह लें। व्यक्ति का सत्य उसकी भूमि का, उसकी संस्कृति का सत्य होता है। इसे न मानकर जो अपने सत्य की बात कहता है वह दम्भी है ?

पटेल : तब तो व्यक्ति की स्वतन्त्रता कुछ होती ही नहीं। आप और लेनिन या मार्क्स में कुछ भेद नहीं है।

गांधी : इतना ही कि अपनी स्वतन्त्रता का अर्थ मैं अपनी संस्कृति की स्वतन्त्रता मानता हूँ। उनको सब कुछ नया करना रहा, किसी भी प्राचीनता को वे स्वीकार नहीं करते। गाय की पूजा मेरी स्वतन्त्रता का अंग है, बिना इसके मेरा गोपाल छूट जायगा। सरदार !

पटेल : जी···(गांधी चुप रहते हैं) जी···कहें···

गांधी : सरोजिनी को देखने के लिए चित्त अधीर हो रहा है···

पटेल : अभी जा कर उन्हें फोन से कह देता हूँ।

गांधी : बहुत जल्दी करेंगी तो कल संध्या तक···

पटेल : जी नहीं···कल सबेरे तक···

गांधी : संध्या और सबेरे इसी में जीवन चला जाता है, कोई नहीं जानता संध्या के बाद का सबेरा मिलेगा।

पटेल : आपको भी अपने जीवित रहने में सन्देह है तब···

उद्वेग में देखते हैं।

गांधी : हम सब को अपने जीवित रहने में सन्देह है सरदार। धरती पर जिसे जितनी साँसों की अवधि मिली हो···न एक अधिक न एक कम···

पटेल : आपकी ऐसी बातों से हमारा धैर्य टूटेगा।

गांधी : महामाया ज्ञानियों के चित्त को भी बलपूर्वक खींचकर मोह में लगा देती हैं। दुर्गा सप्तशती में यह कहा है, ऐसी बात वैष्णव और शैव भक्ति में भी है, लक्ष्य एक है तीर छोड़ने के धनुष अनेक हैं।

पटेल : यह सब कह कर आप मुझे भयभीत कर रहे हैं।

गांधी : गीता का पाठ किया करो सरदार ! भय से छूटने का सरल मार्ग यही है। गीता का दर्शन मुझे विलायत में मिला था। वहीं के दो तरुण, जो सगे भाई थे, श्रीमती ब्लेवेट्स्की के संसर्ग में थियासोफ़ी की घूंट लेने लगे थे, निरामिष भोजना-

लय में मेरे परिचित बने। मुझसे गीता सीखने आने लगे। अर्नाल्ड के अंग्रेजी अनुवाद से वे श्लोकों के अर्थ लगाते थे। अर्थ लगाने की शक्ति तो मुझमें भी नहीं थी पर श्लोक मैं स्वर से पढ़ जाता था। तीन अध्याय पहुँचते मुझे सूझने लगा, विद्या की गंगा अपनी धरती पर छोड़कर मैं टेम्स में प्यास बुझाने आ गया हूँ; आत्मा के लाभ की चिन्ता छोड़ कर शरीर के लाभ के पीछे इतनी दूर आ गया। गीता के पहले दर्शन से चित्त में जो विराग की लपट उठी उसी से विदेशी संस्कृति के प्रभाव को मैं बराबर भस्म करता रहा हूँ यही रहस्य रहा है मेरे कर्म का, आप लोग जिसे तपस्या और त्याग कहते हैं वह मेरे लिए शुद्ध कर्म रहा है। इससे अधिक कुछ नहीं।

पटेल : इस देश की शिक्षा में विदेशी प्रभाव आप तनिक भी नहीं रहने देगें।

गांधी : जो मेरी चली तो मुझे यही करना है। अँग्रेजी में छपी पुस्तकें जो जहाज भर कर यहाँ चली आ रही हैं, उनसे देश का धन ही नहीं खींचा जा रहा है, अविद्या का प्रचार भी हो रहा है। भौतिक विज्ञान, कला-कौशल की पुस्तकें आतीं तो कुछ लाभ सम्भव था। पर कविता, नाटक, कहानी, साहित्य विवेचन के ग्रन्थ जो आ रहे हैं उनकी इस देश को कोई आवश्यकता नहीं है। तुलसीदास की रामायण के साथ जब यहाँ छात्र शेक्सपियर के नाटक भी पढ़ेंगे तो निश्चित है वे भरत नहीं बनेंगे मैकबेथ बनेंगे। विदेशी साहित्य हमारे भावलोक में कोढ़ बनेगा सरदार ! उस दिन प्रार्थना-सभा में जो बम फेंका गया उसमें उस साहित्य के चरित्रों के आचरण की झलक है। फेंकने वाला देह से देशी पर बुद्धि और व्यवहार में विदेशी बन चुका है। आगे भी जो ऐसा काण्ड हो तो

उसका करने वाला विदेशी साहित्य में पला होगा, उस साहित्य के कर्म उसके अपने कर्म बन गये होंगे।

आजाद : आपके मुँह से पहले जो निकला है सब सही उतरा है।

पटेल : अंग्रेजी की शिक्षा तो रुक ही जायेगी। राष्ट्रभाषा तो अब वह रह नहीं सकेगी ?

गांधी : मेरा अभाग्य हिमालय से भारी और समुद्र से अपार है सरदार ! अंग्रेज तो गये पर अंग्रेजी साहित्य नहीं जायेगा। देश बंट गया, मैं न रोक सका। उसी तरह विदेशी साहित्य का अध्यापन मैं रोक पाऊँगा, विश्वास नहीं होता। 'अंग्रेजों भारत छोड़ो, में जो भगीरथ तप करना पड़ा है उतना ही तप 'अंग्रेजी भारत छोड़े' में भी करना पड़ेगा। दूसरे जन्म में दैव मुझे यह करने का अवसर दे। यह जन्म तो अब गया।

पटेल : आप तो निराशा को अपने पास कभी फटकने नहीं देते थे।

गांधी : दूसरे जन्म में विश्वास निराशा के अन्धकार का सूर्य बन जाता है। इसमें निराशा नहीं है अभी से दूसरे जन्म का संकल्प आशा की ध्वजा को और ऊँचे ले जा रहा है। अंग्रेजी के विश्वकोष में···

पटेल : इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका···

गांधी : हाँ, पर जीभ से इतना व्यायाम कराने का कारण नहीं था कोई···अंग्रेजी के विश्वकोष का अर्थ वही था। इस देश के विषय में जो कुछ सूचना उसमें है, सब भ्रामक है। उन सूचनाओं से जो इस देश को जानना चाहेगा उसके हाथ शुद्ध असत्य लगेगा।

पटेल : शुद्ध असत्य इतने बड़े ग्रंथ में···?

गांधी : शुद्ध असत्य सरदार ! असत्य के साथ शुद्ध शब्द का प्रयोग अनुचित है यह जानकर मैं इस शब्द का प्रयोग कर रहा हूँ। अंग्रेजी भाषा में ऐसे प्रयोग उस भाषा के गुण बन गये हैं।

पटेल : हूँ···आपका यह शुद्ध असत्य 'प्योर लाई' का अनुवाद मात्र है।

गांधी : अँग्रेजी शब्द मुँह से निकालने में मेरा चित्त ग्लानि में पकड़ जाता है। इस विश्वकोष में राजा-महाराजा, सेठ, साहुकार विदेशी शासन के साँचे में ढले अनेक···इस देश के अनेक लोगों के नाम आ गये हैं पर परमहंस रामकृष्ण और स्वामी विवेकानन्द का नाम कहीं नहीं है। जिन नामों को काल अभी खा गया वे उसमें दिये गये हैं पर जो नाम काल के मुकुट की मणि बनकर सदैव रहने वाले हैं वे नहीं आये। विवेकानन्द के वेदान्त का प्रभाव जो पश्चिम के देशों पर पड़ा, जिसके प्रभाव में उन देशों के कितने ही नर-नारी उनके शिष्य बने इस तथ्य को यह विश्वकोष नहीं स्वीकार करता।

आजाद : इसमें बात क्या है ऐसी···

गांधी : हमारे देश में भी विद्या है और इस देश में भी विद्वान ऐसे हो चुके हैं, जिनसे उन देशों के सभ्य निवासी केवल प्रभावित ही नहीं हुए, शिष्य भी बन गये, यह सब मानकर हमारे ऊपर अपनी श्रेष्ठता खो देंगे। साम्राज्यवादी जिन देशों पर अधिकार जमा चुके हैं उन देशों को वे सब ओर से हीन मानेंगे तभी उन्हें चैन की नींद आयेगी।

आजाद : तब तो इल्म की दुनिया में भी···

गांधी : जी ! राजनीति की चालें चली आती हैं।

देवदास गांधी का भय और चिंता के भाव में प्रवेश। उनकी आँखें सहमी-सी कमरे में घूम जाती हैं। गांधी ध्यान से उनकी ओर देखते रहते हैं। पटेल घूमकर उनकी ओर देखते हैं फिर सिर झुका लेते हैं। आजाद उनकी ओर देखकर मुस्करा पड़ते हैं।

देवदास : जानना चाहता हूँ···आप लोगों ने क्या तय किया ?

पटेल : **(सिर झुकाये)** बापू नहीं मान रहे हैं।

देवदास : नहीं मान रहे हैं ! हम लोगों को अनाथ करना है क्या ? सबेरे से पचास व्यक्ति मेरे पास आ चुके; सबके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। फोन से कितनों ने सचेत किया। बापू के अनशन से डरकर जो पचपन करोड़ पाकिस्तान को दे दिया गया। हिन्दू उधर से भागे आते हैं और यहाँ हिन्दुओं को सात शर्तें माननी पड़ीं कि वे मुसलमानों को भाई जैसा आदर देंगे। बापू अनशन न करने लगें, इस डर से हिन्दू भेड़ बन गये हैं और मुसलमानों के पैर पड़कर उन्हें दिल्ली से बाहर जाने से रोक रहे हैं। अमृतसर में पं० नेहरू ने जो कल भाषण दिया, हिन्दुओं और सिक्खों के विरोध में जिन कड़े शब्दों का प्रयोग किया, जैसे उस समय वे अहिंसा का परमधर्म भूल गये थे या उपस्थित हिन्दू और सिक्ख जनता में मान-अपमान का भाव नहीं था···वे लोग शान्त रहकर सब सुनते-सहते चले गये। न्याय का अधिकार सबको है और अहिंसा की तुला सबके लिये समान है।

गांधी : सबेरे उस भाषण को पढ़ गया। कड़ी बातें कही गई हैं। लोगों के हृदय को चोट लगी होगी।

देवदास : पाकिस्तान के भय के साथ आपका भय लोगों पर छा गया है। जवाहरलाल ने जो कुछ कहा आपके भय से कहा। नहीं तो इतने कड़े शब्दों का प्रयोग···

गांधी : **(भरे कण्ठ से)** मेरे अभाग्य पर व्यंग्य न करो देवदास।

देवदास : **(बायें हाथ से छाती छूकर)** यह देह आप ही की है। आपके तन से इस तन का साँचा बना। इसलिए मैं आपसे लड़ूँगा···जब और सब डर गये हैं आपसे···मौलाना भी, सरदार भी···

गांधी : तुम कह रहे हो कि मेरे साथी मुझसे डर गये हैं ?

देवदास : केवल मैं नहीं कह रहा हूँ···धरती कह रही है, आकाश कह रहा है। (**खिड़की की ओर हाथ उठाकर**) दिन में भगवान सूर्य कह रहे हैं और रात को चन्द्रमा के साथ तारे कहते हैं। मौलाना और सरदार के मुँह की ओर देखिये जो अपनी कहानी अपने पीले रंग से कह रहे हैं। सब ओर से यही बात आ रही है कि आपके प्राण संकट में हैं। पर आप सुनते नहीं।

गांधी : धर्म की बाधा सुनने का स्वभाव मेरा नहीं है देवदास ! डरबन में जहाज से उतरने में मेरे प्राण का संकट बढ़ा। पर मेरी आत्मा ने उस भय के सामने सिर नहीं झुकाया। मैं उतरा। जो आया उसे भोगा भी। यरवदा आश्रम में दूदा भाई जब पुत्री और पत्नी के साथ आ गये···आश्रम के लिये कुँए का पानी रोका गया कि मेरे आश्रम में हरिजन परिवार आ गया था। सेठों ने सहायता बन्द कर दी। मैं हरिजन बस्ती में बस जाने की तैयारी करने लगा। बस गया होता हरिजन बस्ती में जो एक मुसलमाग सज्जन तेरह हजार रुपये का गुप्तदान न दे गये होते। ऐसी कितनी घटनाएँ हैं जब मैं संकट के भय से न हारा और अन्त में भगवान की सहायता ठीक समय पर मिल गई। गीता में अहिंसा देखने वाला हिंसा से कभी नहीं डरेगा। समझ लो···ठीक से···ठीक से समझ लो।

देवदास : बा होती तो यहाँ प्राण दे देती।

आँख से आँसू बह उठते हैं।

गांधी : पुत्र हो पिता धर्म के के राहु न वनो। प्राण के भय से प्रार्थना में न जाने का अर्थ होगा उस रक्षक भगवान में, श्रद्धाहीन

हो जाना। अफ्रीका में जीवन बीमा कराया था, जब सूझा भगवान के चरणों में बीमा कराकर चले थे, धरती पर बीमा कराना तो उसके प्रति अश्रद्धा है। आगे की किस्त बन्द कर दी। जो दे चुका था चला गया। भाई यह सुनकर बहुत बिगड़े थे। सुनकर नहीं मैंने उन्हें पत्र में अपनी श्रद्धा की बात लिखकर बीमा तोड़ देने की बात लिख दी थी। बरसों तक उन्होंने मुझे पत्र भी नहीं लिखा। श्रद्धा के मिटने के पहले मुझे मिट जाना है।

देवदास : आप पहले कह चुके हैं कि पिता का धर्म पुत्र से पूरा होता है···

गांधी : हाँ, यह मेरे धर्म का कहना है जिसे पूर्वज मानते आये··

देवदास : तब आपके धर्म की जो हानि होगी उसकी पूर्ति मैं करूँगा।

गांधी : हा···हा···हा···बड़े भोले हो देवदास! मेरे प्रति मेरे पितरों के प्रति जब तुम पितृकर्म करोगे तब हम सबका धर्म पूरा होगा। तुम्हारे शुभ कर्मों से हमारा स्वर्ग बना रहेगा। जब तक मैं जी रहा हूँ वैसे सभी कर्म अभी मेरे हैं। तुम्हें तीर्थ व्रत का भी अधिकार नहीं है। राजा हरिश्चन्द्र ने धर्म के लिये कितना सहा? शिवि ने, दधीचि ने कितना सहा? राजा भर्तृहरि को कितना सहना पड़ा था? तुम मेरे सत्य और धर्म के शरीर की, यश और तप के शरीर की चिन्ता करो जो काल के मिटाये न मिटें। यह जो जीव का कारागार है, पानी के बुलबुले जैसा किसी भी क्षण छितरा जायेगा, इसकी चिन्ता मनस्वी नहीं करते। यह फटा-पुराना वस्त्र रहा न रहा। इसे छोड़कर दूसरा धारण कर लेने में जीव को कौन रोकेगा?

देवदास : गीता का तत्वदर्शन सब कहीं व्यवहार में लाया जाय···

गांधी : जो तत्वदर्शन व्यवहार न बन जाय वह बुद्धिविलास है।

तुम जानते हो धर्म, दर्शन, साहित्य सबकी कुंजी मैं व्यवहार ही मानता हूँ, पर अब तुम जाओ। मुझे ध्यान में बैठना है।

देवदास : तब मैं भी प्रार्थना में साथ रहूँगा।

गांधी : यह नहीं होगा। जो लड़कियाँ रहती है वही रहेंगी। तुम प्रार्थना में कभी नहीं आये तो आज एक दिन वहाँ रहकर मुझे कलंकित न करो। गांधी डर गया है। बेटे के साथ प्रार्थना-मंच पर आ रहा है। यह सुनना मैं नहीं चाहता।

देवदास : तब तो मेरे लिये कोई गति नहीं है।

गांधी : मैं जो कह रहा हूँ उसे धर्म से, श्रद्धा से स्वीकार करो। वही करो जिसमें मुझे सुख मिले, सन्तोष मिले, मेरा धर्म बचा रहे।

देवदास : बा का मरना अब अखर रहा है।

गांधी : वह मेरे धर्म में कभी बाधक बनी ? एक भी प्रसंग तुम बता सकोगे ? इक्कीस दिन के कई उपवास उसके सामने चले। कब कहा उसने उपवास तोड़ देने को ? भगवान् की पूजा करती रही, तुलसी को जल-धूप, दीप, देती रही। कर सको तो भगवान् से प्रार्थना मेरे लिये तुम भी करो ! पर मुझ पर शासन न चलाओ। छोड़ो मुझे राम भरोसे और होनहार तुम टाल न सकोगे। इसलिये उसकी इच्छा पर अपने को भी छोड़ दो और उसकी जय बोलो।

देवदास : जो आज्ञा।

झुक कर पैर छूकर घूम पड़ते हैं और बीच वाले द्वार पर पहुँच कर हाथ से आँख पोंछते हैं।

गांधी : अब आप लोग भी जायें मौलाना !

मौलाना : सरदार जायें…मैं तब तक रह जाऊँ।

गांधी : आप मंत्री हैं, मेरे साथ प्रार्थना में आप न रह सकेंगे। यही

बात सरदार के लिए भी है।

सरदार : सरोजिनी को फोन कर दूंगा।

गांधी : नहीं···मन उनकी ओर लगा है और खिंच भी रहा है। अब कल देखेंगे···आज रहने दो।

पटेल के साथ आजाद उठते हैं। गांधी आजाद का हाथ पकड़ कर उनकी ओर देखते हुए हंसने लगते हैं।

आजाद : आज आपको छोड़ कर जाने का दिल नहीं होता।

पटेल : मेरे पैरों में तो जैसे मन-मन भर की बेड़ी पड़ी है।

गांधी : आप मुझे खुदा पर छोड़ जायें मौलाना! और सरदार भगवान पर। आप लोग यहाँ से हंसते हुए बाहर निकलें। भगवान जो करे उसमें हम सब का भला होगा।

मौलाना, पटेल, हाथ जोड़ कर बाहर निकलते हैं। गांधी के हाथ भी जुड़ जाते हैं और ओठ खुल जते हैं; मुंह में दो दांत दिखाई पड़ते हैं और सब गिर गये हैं। बालक-सी निर्दोष हंसी गांधी के मुंह से निकलती है। मौलाना; पटेल, कमरे की सीढ़ी उतर कर प्रार्थना-मंच की ओर देखने लगते हैं। यहाँ तीन ओर से लोग घेरा बनाकर खड़े हैं। इधर का मंच खुला है, गांधी के जाने के लिये। गांधी सुखासन पर आंख मूंद कर दोनों हाथ आगे कर बैठ जाते हैं।

पटेल : कितने लोग होंगे वे।

मंच की ओर हाथ उठाकर।

आजाद : अभी कोई तीस···दस मिनट में तीन सौ हो जायेंगे। सवा-

रियाँ आने लगीं अब भीड़ बढ़ेगी।

पटेल : सादे देश में खुफिया विभाग के सात सिपाही रहेंगे इसका आदेश तो मैं दे चुका हूँ। अब देर हो गई नहीं तो बाहर सड़क पर ही लोग···ऐसे जिन पर सन्देह होता रोक कर देख लिये जाते।

आजाद : (मंच की ओर हाथ उठाकर) वहाँ जो लोग पहुँच गये हैं उनके साथ छेड़-छाड़ अच्छी नहीं होगी।

पटेल : समझ रहा हूँ···नहीं तो यही बहाना बनाकर अनशन चलने लगे तो फिर···

आजाद : बापू बहाना नहीं बनाते सरदार।

पटेल : मैं इतना घबरा-गया हूँ कि जो न कहना चाहिये कह देता हूँ। बहाना तो नहीं···

आजाद : यहाँ लोगों की तलाशी चाहे न लें कुछ जाँचना भी उनके लिये कुछ कर बैठने की वजह बन जायेगी।

पटेल : कुछ कर बैठने में उनका अनशन भी हो सकता है। यह भी हो सकता है कि इसी बात पर वह सरकार की निन्दा प्रार्थना में ही करने लगें।

आजाद : यह भी मुमकिन है।

पटेल : सवेरे कहने लगे बम इसलिये फेंका जा रहा है कि लोग डर-कर उनकी प्रार्थना में न आयें। ऐसा हुआ···डरकर लोगों ने उनकी बात सुनना छोड़ दिया तो ऐसे जीने से तो उनका मरना ही ठीक होगा।

आजाद : यह वह हस्ती है सरदार! जिस पर ऊपर से हवाई जहाज गोले बरसाते रहें फिर भी इसे डर न होगा और इसका जादू लोगों पर ऐसा है कि उस हालत में भी लोग इसे न छोड़ेंगे।

पटेल : अँग्रेजी राज्य का जो भय देश भर में समा गया था, हम

लोग भी जिससे नहीं बचे थे, इन्होंने उस भय को ऐसा भगा दिया जैसे सूरज निकलते ही अँधेरा भाग जाता है।

आज़ाद : सूरज के निकलने के पहले ही अँधेरा भाग जाता है। अभी गांधी अफ्रीका में ही थे, उनकी फतह जो वहाँ हुई उसी से मुल्क का खौफ़ भाग गया। सूरज अभी यहाँ नहीं निकला था तभी अँधेरा भाग गया। हम लोगों को यहाँ देखकर लोग चौंक रहे हैं अब चलना चाहिये।

पटेल : हाँ अब चलें। उनके साथ चमत्कार बराबर होते रहे हैं फिर होंगे। चिन्ता की कोई बात नहीं है। (मंच की ओर हाथ उठाकर) जहाँ उनके इतने भक्त हैं उन पर आक्रमण करने वाले के नीचे से धरती भाग जायेगी!

मौलाना और पटेल चले जाते हैं। टाँगा, रिक्शा, मोटर से लोग उतर कर प्रार्थना मंच की ओर बढ़ते हैं। दो गोरे आकर मंच के बायें चहारदीवारी के निकट खड़े होते हैं। मंच के तीन ओर भीड़ बढ़ती जाती है। कमरे की खिड़कियों से लोग झाँककर गांधी का दर्शन करते रहते हैं। दो नागरिक आते हैं और कमरे से लगे लताकुञ्ज के आगे दूब पर खड़े होते हैं। दोनों की अवस्था प्रायः पच्चीस वर्ष की है। शरीर पर कपड़े उन्हें ऊँची कक्षा के विद्यार्थी बता रहे हैं या शिक्षा की समाप्ति पर किसी सरकारी विभाग के कर्मचारी। दोनों संकेत से कुछ कहते हैं।

पहला : गृह मंत्री और शिक्षा मंत्री दोनों यहाँ इस समय कैसे आये?

दूसरा : मंत्री कोई रहे, मंत्री बनाने वाला महापुरुष तो इस कमरे में है। पैर के अँगूठे से जिसे टीका लगा देगा वह मंत्री बन ही जायेगा।

एक स्त्री बच्चे को गोद में लिये एक ओर खड़ी हो जाती है।

पहला : **(स्त्री की ओर संकेत कर)** उधर देखो, यह देवी जी ठेठ देहात से बच्चा लिये धमक गईं। घर पर रहकर खेत काटना या चक्की पीसना नहीं बना, यह प्रार्थना-सभा में मन्त्र सुनेंगी और राजनीति की बातें। गांधी जी ने तो कहा था कि वे राष्ट्रपति का पद किसी भंगी की लड़की को देना चाहेंगे।

दूसरा : हो सकता है, इस बेचारी ने सुन लिया हो और इसीलिये आ धमकी हो ?

दोनों धीमे स्वर में हँस पड़ते हैं। स्त्री सिकुड़कर सिर नीचे कर लेती है।

स्त्री : **(उन दोनों के पास डरती-डरती आकर)** महातमा जी क दरसन कइसे मिली बाबू···

पहला : **(मुस्करा कर)** चली जाओ इसी कमरे में तो हैं। कोई रोक नहीं है, घुस जाओ···

स्त्री : डर लागत हय बाबू···हम हियें से देखि लेब...

कमरे में कुछ ध्वनि सुनाई पड़ती है। दोनों तरुण सजग होकर पीछे हट जाते हैं। वह स्त्री और पीछे सिमट कर खड़ी हो जाती है। दो कुमारियों के कन्धों पर हाथ रखकर गांधी धरती देखते हुए निकलते हैं। चहारदीवारी के निकट दोनों गोरे सजग होकर सीधे खड़े होते हैं,

गांधी नीचे उतरकर लताकुञ्ज वाले मार्ग के बाहर दूब पर चलने लगते हैं। दोनों तरुण हाथ जोड़ते हैं जिसे गांधी देखते नहीं। वह स्त्री उत्साह और आनन्द में आगे बढ़ कर बच्चे का सिर धरती पर सटा देती है और अपना सिर भी। दोनों तरुण इस दृश्य को देखकर मुस्करा पड़ते हैं। गांधी दोनों लड़कियों के बीच में सिर झुकाये मंच की ओर बढ़ते हैं। ऐसे चल रहे जैसे पानी में तरते जाते हों या पैर धरती पर बिना उठे ही बढ़ रहे हों। उपस्थित भीड़ में कुछ लोग धीमे स्वर में महात्मा गांधी की जय बोल उठते हैं। गांधी जैसे चेत में आकर जनता की ओर देख कर मुस्करा पड़ते हैं। अब मंच की सीढ़ी आ जाती है।

गांधी : (लड़कियों से) संभाल कर चढ़ो।

लड़कियाँ : जी...

रुक कर गांधी तीन सीढ़ी चढ़ कर मंच पर पहुँचते हैं। भीड़ में गति का संचार होता है। इधर से भी लोग घेर लेते हैं। क्षण भर सन्नाटा छा जाता है...दूसरे ही क्षण पिस्तौल चलने की ध्वनि एक क्रम से चार बार सुनाई पड़ती है।

गांधी नेपथ्य में : हे राम!

यह कण्ठ की ध्वनि सब ओर से जैसे धरती और आकाश से निकलने लगती

है। गिरने की ध्वनि जनसमूह की गति में जैसे दब जाती है। भीड़ में कुछ लोग अपना सिर पीटने लगते हैं। कई कटे पेड़ की तरह धरती पर गिर पड़ते हैं। दोनों गोरे भय में कांपने लगते हैं। दूर पर खड़ी स्त्री का बच्चा जोर से रो पड़ता है। वह स्त्री भय से कांप कर बच्चे के मुंह पर हाथ रखती है। भीड़ इधर से उधर जैसे झूले में पेंग लेने लगाती है।

पहला तरुण : अरे क्या हुआ !

दूसरा : पिस्तौल छूटना नहीं सुना ?

पहला : हत्यारे का निशाना महात्मा तो नहीं बने ?

दूसरा : **(कांपते स्वर में)** कौन जाने। उस दिन बम फटा। दो दिन दो पकड़े गये।

भीड़ की ओर से एक पुरुष भागता हुआ आता है और सारी देह कंपा कर बोलना चाहता है, पर धरती पर बैठ कर सिर दोनों हाथों में थाम लेता है।

पहला : **(उसके निकट पहुंच कर)** क्या हुआ जी···बोलो···बोलो बोलो भी क्या हुआ ?

दूसरा : **(बैठ कर उसे पकड़ते हुए)** भाई, क्या हुआ कहो न ?

वह पुरुष : ऐं···ऐं···हाय ! हाय ! मार दिया···महात्मा को···मार दिया···गोली···गोली···

वहीं धरती पर सिर टिका कर सिसकने लगता है। दोनों तरुण मंच की ओर बढ़ते हैं।

नेपथ्य में : आप लोग हटें···हवा आने दें···डाक्टर··डाक्टर···

नेपथ्य में : पकड़ लिया गया हत्यारा। अभागा हँस रहा है···

लड़कियों के रोने की ध्वनि सुनाई पड़ती है। पुलिस मंच पर पहुँच कर लोगों को हटाकर इधर-उधर करती है। लोग पीछे हटकर भी आगे आगे बढ़ते हैं। बार-बार सिपाही लोगों को चारों ओर हाथ से हटाते हैं। पर सारी भीड़ ऐसी प्राण हीन-सी हो गई है जैसे प्रलय के पहले सभी जीवधारी चेतना शून्य हो उठे हों।

नेपथ्य में : (अनेक प्रकार की ध्वनि एक ही साथ सुनाई पड़ती है। लड़कियों के साथ दूसरों के रोने-सिसकने की ध्वनि चल रही है) अब उठा लें···इधर से···इधर से···देह न झुके···

ये सारे शब्द भय और दारुण शोक में निकल रहे हैं। दोनों तरुण लौटकर जो पुरुष धरती पर सिर टेके सिसक रहा है, उसके पास आकर खड़े होते हैं।

पहला : महात्मा को कमरे में ले जा रहे हैं···अरे! वहाँ देखो लता-कुञ्जों के भीतर से···

दूसरा : हाय! हाय! चादर रक्त से भीग गई है···रक्त नीचे गिर रहा है।

दोनों वहीं धरती पर बैठ जाते हैं। चहारदीवारी के किनारे का एक गोरा कहीं चला गया है। एक है जो उस दीवाल पर सिर टेककर अपने हाथ से

आँख मूंदे है। उसकी देह कांप रही है जैसे वह भी रो रहा है।

पहला : अरे ! यह क्या हो गया ?

दूसरा : दिल्ली भर में इसकी खबर फैली थी कि आज अनर्थ होगा

पहला : इस सरकार के सिपाही क्या कर रहे थे ?

दूसरा : न बोलो, धरती कांप रही है, आकाश फट रहा है।

मंच पर की भीड़ धीरे-धीरे निकल गई है। केवल एक सिपाही कन्धे पर रायफल लिये पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ा है।

पहला : हत्यारा पकड़ लिया गया। मैंने देखा जैसे उन्माद में हँस रहा था।

दूसरा : उसे पकड़ने वाला कोई गोरा था। अवस्था अभी बहुत कम थी···लम्बा छरहरा।

पहला : अंग्रेज नहीं रहा होगा। अंग्रेज रहता तो हट जाता।

दूसरा : कोई रूसी या अमेरिकन···

पहला : जो हो; उसने काम बड़े धर्म का, बड़ी वीरता का किया। नहीं तो वह दो कदम पीछे हट पाये होता, फिर उसे कौन पकड़ता।

अकेले खड़े गोरे के पास एक भारतीय युवक फूट-फूट कर रोता हुआ पहुँचता है।

युवक : बच जायेंगे महात्मा बच जायेंगे। (वह गोरा फटी आँखों से उनकी ओर देख रहा है जैसे उसकी बोली वह न समझ पाता हो।) आप मेरी भाषा नहीं समझते ? (वह सिर हिलाकर सूचित करता है कि वह नहीं समझता। उसे छोड़कर वह उस स्त्री के पास जाता है, जो अपने बच्चे को चुप

कराती रो रही है।) अब रो कर क्या करोगी माँ ? देखो, सूरज की ओर देख रही हो ?

स्त्री : हाँ बाबू···

युवक : देखो, वह बापू का रक्त लिये जा रहा है इसी से इतना लाल है।

स्त्री : का भईल बाबू···कइसन गोली चलल···

युवक : **(दुःख के स्वर में)** तुम नहीं जानती माँ ! महात्मा को हत्यारा गोली मार गया !

स्त्री : हाय रे पापी ! **(बच्चे को धरती पर रखकर)** का अदावत रहल सरकार ! महात्मा जी क मुद्दई के भइल···सबके मालिक उहै रहलें···सब पर दया उन कर रहल

एक बूढ़ा पुरुष जिसकी दाढ़ी में उजले बाल निकल आये हैं मूँछ भी गंगा-जमुनी हो चुकी है रोता हुआ वहीं आ जाता है।

बूढ़ा : **(थर-थर काँपते हुए)** प्रलय होगी···अब प्रलय होगी···सूरज नहीं निकलेगा···तारे टूट कर गिर पड़ेंगे। गंगा सूखेगी हाँ···हाँ···हिमालय गिरेगा···धरती रसातल में चली जायेगी। कोई नहीं बचेगा कोई···नहीं।

स्त्री का बच्चा रोने लगता है। वह अब फूट-फूट कर रोने लगती है। दोनों पहले वाले तरुण धरती पर खड़े पुरुष के पास चले आते हैं।

युवक : धीरज धरो बाबा ! अब क्या होगा ?

बूढ़ा : बच्चा ! कह तो रहा हूँ प्रलय होगी। धरती धँसेगी ?

बूढ़ा लड़खड़ाने लगता है। युवक उसे आदर से पकड़ लेता है।

बूढ़ा : छोड़ दो बेटा। गरीबों का भगवान् जा रहा है। भारतमात का यह एक पुत्र कितने सौ वर्षों में आया था। माता क बन्धन काट कर जा रहा है। चले गये! महात्मा चले गये

युवक : महात्मा का प्राण-बल अमोघ है आप विश्वास करें वे ब जायेंगे।

बूढ़ा : गोली के आगे प्राण-बल क्या करेगा बेटा? वे होते तो मेर यह दशा न होती। आत्मा सब जान जाती है सब। **(उ स्त्री से)** कहाँ आई थी बेटी!

स्त्री : महात्मा के दरसन के दादा···**(बच्चे को संकेत से दिख कर)** एकरे भला खातिर···

बूढ़ा : बेटी···अपने बेटे को लेकर आई कि महात्मा के दर्शन इसके बेटे का भला होगा। **(बच्चे के सिर पर हाथ रखकर** भला होगा···यह बड़ा आदमी होगा, दर्शन नहीं मिला त भी उस पुण्यात्मा का पुण्य कहाँ जायेगा।

स्त्री : दरसन मिलल रहे दादा! **(दूब वाली भूमि की ओर हा से रेखा बनाती-सी)** महात्मा एही डहर गयन, हम ए धरती पर लेटा दीहल, एकर आपन दूनो मूँड़ी धरती प सटा दीहल। उ नाहीं देखलन···

ढ़बूा : अरे! तब तो तुझे सिद्धि मिल गई···चली जाओ अब रा हो जायेगी। दिल्ली की सड़कों पर तो अब दिन में भूत नाचेंगे।

एक सिपाही : (प्रवेश कर) आप लोग अब यहाँ से चले जाइये। यह रुकने का हुक्म अब नहीं है।

बूढ़ा : अच्छा भाई! आप लोग पहले कहाँ थे?

सिपाही : कह लें आप जो चाहें। हमारे मुँह पर कालिख तो लग ह गयी पर हमें हुक्म रहता तो हम भी कुछ कर जाते। चलें अब चले आप लोग···

बूढ़ा : चलो बेटी, तुम्हें रास्ते पर लगा दें।

तीनों एक साथ चले जाते हैं। अब अकेला वह गोरा दीवाल के किनारे खड़ा है।

नेपथ्य में : अंधकार···सब ओर अन्धकार···हमें नहीं सूझता कहाँ जायँ क्या करें···

थोड़ी देर कुछ सुनाई नहीं पड़ता। सब ओर से इतनी ध्वनि एक साथ आने लगती है कि नेपथ्य की शोक-घोषणा नहीं सुनाई पड़ती।

नेपथ्य में : बापू जिस लिये मरे हम उसका···

फिर सब ओर की ध्वनि में नेपथ्य के शब्द सुनाई नहीं पड़ते।

नेपथ्य में : हम प्रतिज्ञा करते हैं···हम शपथ लेते हैं।

नेपथ्य के शब्द कोलाहल में डूब जाते हैं। किसी बड़े पुलिस अधिकारी के साथ पटेल प्रवेश करते हैं। कमरे के आगे रुक जाते हैं।

पटेल : महात्मा यहाँ पहुँचते ही चल बसे। दिन भर समझाकर हार गये। होनी इसे कहते हैं।

कण्ठ में शब्द काँप रहे है। देह भी काँप रही है।

अधिकारी : आश्चर्य है, हत्यारा इतना प्रसन्न है जैसे विवाह के लिये जा रहा हो!

पटेल : सच कह रहे हो···

अधिकारी : जी हाँ···मैं उसके पास से ही आ रहा हूँ। मोक्ष मिल गया है जैसे उसे···इतना आनन्द है···उसके भीतर···मेरे जाते

ही कहने लगा···महात्मा को मार कर उसने देश को बचा लिया।

पटेल : ऐसी बात···

अधिकारी : ऊपर की आज्ञा से हम रोके न गये होते...उसके साथ भद्र व्यवहार के लिये कड़ा आदेश न होता तो अब तक···

पटेल : बस-बस इस विपत्ति में क्रोध से कुछ न बनेगा। अभी-अभी कहा था उन्होंने, कि उनका हत्यारा शेक्सपियर के नाटकों को पढ़ चुका होगा। अपनी बनावट में वह···या तो ब्रूटस होगा या मैकबेथ !

अधिकारी : ओह ! तब वह सब कुछ जानते थे। योग साध कर न मरे हत्यारे की गोली से मरे। उसे देखते ही मुझे ब्रूटस और मैकबेथ दोनों याद पड़े थे।

पटेल : विदेशी साहित्य का अभी कितना कुफल यह देश भोगेगा।

पटेल उस अधिकारी के साथ कमरे में प्रवेश करते है। कई कण्ठों से गीता का पाठ चलने लगता है। इसी समय आँधी में पड़े पेड़ की तरह देवदास गांधी आते हैं और कमरे में प्रवेश करते हैं बाहर जन समूह का कोलाहल सुन पड़ता है।

नेपथ्य में : **(कई कण्ठों की ध्वनि)** मृत्युञ्जय गांधी की जय हो···जय हो···जय हो।

इस जय-ध्वनि में गीता पाठ की ध्वनि दब जाती है।

पर्दा गिरता है।

बूढ़ा : चलो बेटी, तुम्हें रास्ते पर लगा दें।

तीनों एक साथ चले जाते हैं। अब अकेला वह गोरा दीवाल के किनारे खड़ा है।

नेपथ्य में : अंधकार···सब ओर अन्धकार···हमें नहीं सूझता कहाँ जायें क्या करें···

थोड़ी देर कुछ सुनाई नहीं पड़ता। सब ओर से इतनी ध्वनि एक साथ आने लगती है कि नेपथ्य की शोक-घोषणा नहीं सुनाई पड़ती।

नेपथ्य में : बापू जिस लिये मरे हम उसका···

फिर सब ओर की ध्वनि में नेपथ्य के शब्द सुनाई नहीं पड़ते।

नेपथ्य में : हम प्रतिज्ञा करते हैं···हम शपथ लेते हैं।

नेपथ्य के शब्द कोलाहल में डूब जाते हैं। किसी बड़े पुलिस अधिकारी के साथ पटेल प्रवेश करते हैं। कमरे के आगे रुक जाते हैं।

पटेल : महात्मा यहाँ पहुँचते ही चल बसे। दिन भर समझाकर हार गये। होनी इसे कहते हैं।

कण्ठ में शब्द काँप रहे है। देह भी काँप रही है।

अधिकारी : आश्चर्य है, हत्यारा इतना प्रसन्न है जैसे विवाह के लिये जा रहा हो!

पटेल : सच कह रहे हो···

अधिकारी : जी हाँ···मैं उसके पास से ही आ रहा हूँ। मोक्ष मिल गया है जैसे उसे···इतना आनन्द है···उसके भीतर···मेरे जाते